वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

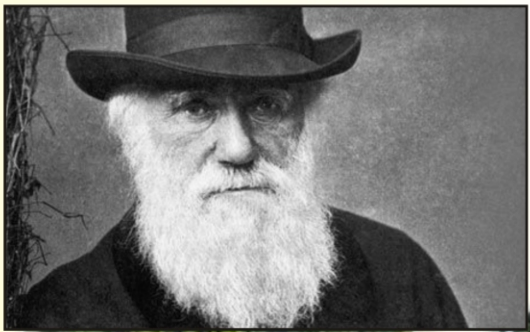
तर्कशील पथ

TARKSHEEL

मई 2019



मई दिवस पर (4)



डार्विनवाद और अवतारवादी मायाजाल (21)



क्या है पैनिक अटैक (21)



₹20

भविष्य उनका है जो दलन की जारी मानवता के लिए कुछ करते है ।...लुई पास्चर

मई दिवस का गीत

कदम मिला के चलो

कांतिमोहन सोज़

ये बात ज़माना याद रखे मज़दूर हैं हम मजबूर नहीं
ये भूख ग़रीबी बदहाली हरगिज़ हमको मंज़ूर नहीं।
चलते हैं मशीनों के चक्के इन चौड़े कंधों के बल से
माटी को बनाते हैं सोना हम अपने जतन से कौशल से
मेहनत से कमाई दौलत को पूंजी ले जाती है छल से
ये राज़ हमें मालूम मगर ये हाल हमें मंज़ूर नहीं।
सरमाए का जादू टूट गया मेहनत की हिना रंग लाने लगी
उम्मीद की डाली फलने लगी अरमानों की खुशबू आने लगी
सदियों का अंधेरा टूट गया आकाश पे लाली छाने लगी
उस भोर के दीवाने हैं हम ये रात हमें मंज़ूर नहीं
ये जंग है जंगे-आज़ादी मज़दूर हैं आज सिपाही भी
बुनियादे-जहाने-नौ के लिए तामीर है आज तबाही भी
हाथों में दमकते हंसिए हैं लो आ पजंचु हमाराही भी
रखते हैं जान हथेली पर झुकना अपना दस्तूर नहीं।
ज़ुलमों की तिजौरी तोड़के हम हक़ छीन के अपना मानेंगे
नफ़रत से भरी इस दुनिया के नक़्शे को बदल के मानेंगे
मंजिल के लिए हैं गर्मे-सफर मंज़िल पे पहुंच के मानेंगे
पैरों से वो मंजिल दूर सही आंखों से वो मंज़िल दूर नहीं।
ये बात ज़माना याद रखे मज़दूर हैं हम मजबूर नहीं
ये भूख ग़रीबी बदहाली हरगिज़ हमको मंज़ूर नहीं।

गीत रचनाकाल: 1955

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **14 जुलाई, 2019** को दिन रविवार, डा. ओमप्रकाश ग्रेवाल अध्ययन संस्थान, कैलाश नगर, कुरुक्षेत्र में प्रातः 10.00 से 2.00 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः
*प्रा॰बलवंत सिंह : **94163 24802***
*बलजीत भारतीः **82950 51400***
*बलदेव महरोकः **92530 64969***

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

भारतीय चुनाव और अंधविश्वाश

भारत में चुनावों की एक लंबी प्रक्रिया है। लोकसभा, विधान सभा के चुनावों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत सारे चुनाव होते रहते हैं। चुनावों में आचार संहिता चुनाव आयोग लागू करता है। बहुत सारी नियमावली हैं, सभी प्रकार के चुनावों में प्रत्याशी बहुत सारे उपक्रम करते हैं; ब्यान बाजी होती है, परन्तु दुःख तब होता है जब चुनावी प्रचार में अंधविश्वास फैलाने के स्वांग भी किए जाते हैं। बहुत सारे प्रत्याशी वोटों के लिए तंत्र मंत्र, ज्योतिष आदि का सहारा लेते हैं। ऐसा करने से आम जन पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। सबसे दुखद पहलू वह होता है जब सम्बंधित व्यक्ति को वोट न देने पर श्राप देने जैसे प्रपंच रचे जाते हैं अथवा खास प्रत्याशी को वोट न देने पर पाप लगेगा आदि प्रकार का प्रचार किया जाता है। हाल ही के चुनावों में एक प्रत्याशी ने ये प्रचारित किया कि उसके श्राप से अमुक व्यक्ति जिसने कथित रूप से उसे प्रताड़ना दी, का सर्वनाश हुआ। इसी प्रकार एक अन्य प्रत्याशी का बयान आया कि अगर उसे वोट न दिया तो पाप लगेगा। ऐसे बयान धर्म भीरु वोटरों को भयभीत कर सकते हैं। चुनाव आयोग को अंधविश्वास फैलाने वाले ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध भी कार्यवाही करनी चाहिए। अंधविश्वास फैलाना भारतीय संविधान के मौलिक कर्तव्यों का उलंघन है जिसमें वैज्ञानिक चेतना और मानववाद का प्रचार करने के भारतीय नागरिकों को आदेश हैं। यूं तो धर्म गुरुओं की शरण में अनेक प्रत्याशी नतमस्तक होते ही रहते हैं और कुछ बाबा अपने चेलों को वोट तक देने के आदेश प्रचारित किया करते हैं। इस प्रकार के आदेश नागरिक के स्वतंत्र वोट देने के अधिकार का उलंघन है। इस सम्बंध में भी चुनाव आयोग को गाईड लाईन जारी करने की आवश्यकता है और किसी पार्टी या प्रत्याशी को सन्देश देने वाले बाबाओं को चेतावनी देनी चाहिए। बहुत सारे प्रत्याशी धार्मिक कर्मकांड करते हुए मीडिया में प्रचार करते हैं। भारत एक धर्मनिर्पेक्ष देश है। ऐसी धर्म कर्मकांडी प्रचार यात्राएं और उनका टीवी या अन्य मीडिया में प्रचार देश के सेकुलर चरित्र को नुकसान पहुंचाता है। स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया के साथ ही इस बात का भी उतना ही महत्व है कि चुनाव धार्मिक कर्मकांडों के प्रचार और अंधविश्वास के उपक्रमों से भी मुक्त हों।

......गुरमीत अम्बाला

मई दिवस पर

-हेम राज स्टेनो
मो. 98769 53561

विश्व स्तर पर श्रमिक वर्ग द्वारा एक मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। मई दिवस का क्या संदेश हे, आज हम इसके बारे में बात करने जा रहे हैं।

19वी शताब्दी के आरम्भ में मजदूरों से 14-16एवं यहां तक कि 18-20 घंटों तक कार्य करवाना साधारण सी बात थी। इन हालातों में सुधार के लिए 'मेकैनिक्स यूनियन ऑफ फिलाडोल्फिया' जो कि विश्व की प्रथम ट्रेड यूनियन मानी जाती है, ने 1827 में कार्य दिवस दस घंटे करवाने के लिए निर्माण उद्योग के मजदूरों की एक हड़ताल करवाई । 1834 की न्यूयार्क में हुई हड़ताल की खबर को एक नामचीन अखबार ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। इसके पश्चात जल्दी ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कार्य दिवस के घण्टे कम करने की मांग एक आंदोलन का रूप धारण करने लगी। यह आंदोलन बढ़ता ही चला गया। अमेरिका से दूर आस्ट्रेलिया में भी निर्माण उद्योग के श्रमिकों ने 'आठ घंटे कार्य, आठ घंटे मनोरंजन व आठ घंटे आराम के नारे के अधीन संघर्ष किया। 1856 में उनकी यह मांग मान ली गई।

इसी प्रकार के संघर्षो में मई दिवस का उदय हुआ। अमेरिका में 1884 में कार्य दिवस आठ घंटों करने के नारे के अधीन आंदोलन प्रारम्भ हुआ, हड़तालें हुईं। इनमें विशाल स्तर पर मजदूर शामिल हुए। प्रथम मई को यद्यपि हड़ताल सर्वाधिक व्यापक थी, परंतु साथ ही कई अन्य नगरों में भी यह हड़ताल हुई। 'आठ घंटे एसोसिएशन' बहुत पहले से ही इस हड़ताल की तैयारी के लिए बन चुकी थी। वामपंथी मजदूर संगठनों में से 'सेट्रल लेबर यूनियन' (संयुक्त मोर्चा) ने इस एसोसिएशन को पूर्ण सहयोग दिया।

इस प्रकार के घटनाक्रम के पश्चात् प्रथम मई 1886 में अमेरिका के नगर शिकागो में संगठित हुए मजदूरों के आह्वान पर शहर के मजदूरों ने अपने औज़ार चलाने बंद कर दिये, मशीनों की गूंज बंद हो गई, सारा उत्पादन ठप्प हो गया।

इस मजदूर आंदोलन ने मजदूरों को उनकी वर्गीय एकता की शक्ति का अहसास भी करवाया तथा साथ ही साथ यह अहसास भी करवाया कि समाज को चलायमान रखने का मुख्य आधार उनका श्रम ही है। यह बात उचित भी थी क्योंकि एकमात्र श्रम ही है जो मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अतः इस प्रकार से इस संघर्ष ने मजदूर वर्ग की लड़ाई के इतिहास का नया अध्याय लिख कर मजदूर मुक्ति की कहानी को आगे बढ़ा दिया।

परंतु पूंजीपति वर्ग भी चुपचाप नहीं बैठा था। उसने अपनी भलाई के लिए बनाए गये प्रशासनिक ढांचे को इसे कुचल देने का संकेत दे दिया। प्रशासन ने मजदूर नेताअें के बड़े भाग को ग्रिफ्तार कर लिया, जैसा के आजकल भी किया जाता है। यही नहीं मजदूरों के समूह पर हिंसक हमला करके सरेआम मजदूरों का खून बहाया गया। इसके पश्चात् 'हे मार्केट काण्ड' के नाम से जानी जाती घटनाएं घटित हुई, जो कि प्रथम मई की हड़ताल का ही परिणाम थीं। तीन मई को मजदूरों की एक मीटिंग पर पुलिस ने हिंसक हमला कर दिया। इसके विरोध में 4 मई को 'हे मार्केट स्कवायर' में प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा हमला कर दिया गया जिस में 6 मजदूर मारे गये तथा बहुत से घायल हो गये। हे मार्केट में हुए हमले के दौरान पूंजीवाद के रक्षकों ने जनसमूह के बीच में एक बम फैंक दिया। इस पर हुई झड़प के दौरान चार मजदूर मारे गये तथा 7 पुलिस वाले भी अपनी जान से हाथ धो बैठै। मजदूर नेताओं की धर-पकड़ हुई और उन पर केस चलाए गए। मजदूर नेताओं पार्सन्ज, सपाईस, फिशर एवं एंजेल को फांसी की

सजा सुनाई गई तथा शिकागो के अन्य जूझारू नेताओं को भी कैद की सजा सुनाई गई।

मई दिवस विश्व स्तर पर मानाने का प्ररम्भः

समाजवादी एवं साम्यवादियों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन 1889 में एक मई को विश्व स्तर पर मजदूर दिवस के तौर पर मनाने का निर्णय किया गया। उसके पश्चात् एक मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। अंतर्राष्ट्रीय संस्था की ओर से इस प्रकार का आह्वान दिये जाने पर यह केवल मजदूरों की आठ घंटे की मांग न रहकर समूचे विश्व के मजदूरों को वर्ग के तौर पर एकजुट होकर पूंजीवादी व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष करने के आह्वान के तौर पर जाना गया।

मई दिवस का वर्ग-विहीन एवं शोषण रहित समाज का निर्माण उचित क्यों है, इसके बारे में संक्षेप में बात करते हैंः

मानव समाज इतिहास पर यदि सामान्य सी दृष्टि भी दौड़ाई जाए तो हमें ज्ञात होता है कि दासता का युग भी कायम रहा है। दासयुग में मुख्य तौर पर दास एवं दास-स्वामी दो वर्ग थे। दास-स्वामी, दासों को पीट सकते थे, बेच सकते थ, आदि-आदि अर्थात् जो वे चाहे कर सकते थे।

दास ही कृषि अथवा अन्य धंधे करते थे। दासों को बोलते औज़ार (स्पीकिंग टूल्ज़) समझा जाता था न कि इन्सान। दासों को दबाव में रखे जाने के लिए उस समय की पुलिस-फौज भी दासों में से ही हुआ करती थी जो कि दास-स्वामियों का हर प्रकार से बचाव करती थी। दास-स्वामी संपूर्ण संपूर्ण सम्पत्ति के मालिक होते थे। दासों को दास-स्वामियों एवं उनके परिवारों के लिए श्रम करना पड़ता था। श्रम की कोई समय सीमा नहीं थी। उनका तो अपना परिवार भी नहीं था। परिवार शब्द सर्वप्रथम रोमन लोग ही प्रयोग में लाए थे। वर्तमान में यद्यपि परविार रक्त के रिश्ते से तय होता है परंतु उस समय दासों का परिवार भी उनके मालिकों को परिवार का ही हिस्सा होता था।

उस दास-प्रथा के युग में दास-स्वामी, दासों को उनके श्रम में से थोड़ा-बहुत दे दिया करते थे । उसी पर निर्वाह करना दासों की नियति थी। दासों द्वारा किये गये शेष सारे उत्पादन को दास-स्वामी हड़प लिया करते थे। दासों का श्रम दास-स्वामियों द्वारा हड़प लिए जाने के कारण उस समय दो प्रकार के निम्नानुसार जीवन के हालात बने हुए थे, जो कि श्रम के शोषण का तर्कपूर्ण परिणाम थाः

अमीरी- दास-स्वामियों के परिवारों की

गरीबी- दासों के परिवारों की।

इन जीवन-परिस्थितियों ने दासों के विद्रोहों को जन्म दिया। उस समय में दासों ने भी बड़े-बड़े विद्रोह किये। रोम, जहां पर सबसे अधिक समय तक दास-प्रथा का युग होना माना जाता है, में स्पार्टक्स के नेतृत्व में एक लाख गुलामों ने दास-स्वामियों के विरूद्ध विद्रोह किया। हमारे देश के इतिहास में भी दास-प्रथा के विरूद्ध विद्रोह हुए।

दास प्रथा युग के पश्चात् सामंतवादी युग शुरू हुआ। सामंतवादी युग में मुजारों-किसानों के विद्रोह हुए। सामंतवादी व्यवस्था में जब धीरे-धीरे पूंजीवाद का उभार हुआ तो पूंजीवाद ने सामंतवादी व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह किया। साधारण कमेरी जनता का साथ लेने के लिए उसने सभी मानवों के समान अधिकार जैसे नारे भी दिये।

इंग्लैंड में तो पूंजीपति वर्ग ने वहां के सामंती सम्राट चार्ल्स-प्रथम को मौत के घाट उतार दिया तथा अपना शासन कायम कर लिया।

पूंजीवाद के साम्राज्यवाद में विकसित हो जाने पर उस द्वारा दूसरे देशों को अपने बाजार बनाने के लिए हमला करके कब्जे करने शुरू कर दिये जैसा कि हमारे देश पर इंगलैंड के पूंजीपतियों ने विशाल पैमाने पर हमारे उत्पादन के स्रोतों पर भी कब्जा कर लिया और हमारे देश में उत्पन्न होने वाले कच्चे माल को भी लूट कर ले जाते रहे। हमारा देश अकाल का शिकार बना रहता था। इस से भी दो विरोधी जीवन-परिस्थितियां बनी रहती थींः

हमारे देश की कमेरी जनताः

भुखमरी की शिकार रहने वाली

इंगलैंड एवं उनके हमारे देश में सहयोगीः

मालोमाल वाली।

अतः इससे यह परिणाम निकलते हैंः-

प्रथम, जब भी शोषक एवं शोषित दो विरोधी वर्ग इतिहास के मंच पर आए हैं तब से ही इन दो विरोधी वर्गो के दरम्यान संघर्ष चल रहा हैं इसी कारण समूचे वर्गीय मानव इतिहास को वर्ग संघर्षो का इतिहास कहा जाता है।

दूसरा, पूर्व के इतिहास में एक के स्थान पर दूसरा शोषक वर्ग आता रहा। प्रत्येक शोषक वर्ग अपने आप को कायम रखने का हर एक हथकण्डा प्रयोग में लाता रहा। परंतु क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है, अतः यह कभी ही नहीं कि किसी व्यवस्था में परिवर्तन आए। इसलिए प्रत्येक सीमित वर्ग के विरुद्ध संघर्ष होता रहा तथा उसका स्थान इतिहास में जाता रहा। यह परिवर्तन तो अटल है, बस इसके नियमों को जानकर मानव इस परिवर्तन को विकास-मुखी बनाने में भूमिका निभा सकता है।

अतः यह संक्षेप सी बात करने का तात्पर्य यह है कि संघर्ष छिड़ने का कारण दो विरोधी जीवन-परिस्थितियो एवं विरोधी वर्गो के हितों में पड़ा होता है।

तीसरा, इतिहास में काबिज रहे शोषक वर्ग प्रकृति के नियम के विपरीत चलते रहे, क्योंकि वे इस भ्रम में रहे कि समाज पर उनका अधिकार सदा के लिए ऐसे ही बना रहेगा। हम यह मानते हैं कि प्रकृति के नियम को कभी भी कोई नहीं बदल सकता। हां, इस का प्रयोग मनुष्य अपने हितों के लिए कर सकता है। उदाहरण स्वरूप किसी भी तरल पदार्थ का नीचे की ओर बह जाना प्राकृतिक नियम है। इस नियम को समझते हुए मानव ने वाटर वर्क्स बना कर पानी को ऊँचे स्थानों पर चढ़ा लिया, परंतु मनुष्य पानी का नीचे की ओर बह जाने वाला प्राकृतिक नियम नहीं बदल सका और न बदल सकेगा। इसी प्रकार यह दो विरोधी जीवन परिस्थितियों में से उठते हुए विरोध को खत्म करने के लिए धन-सम्पत्ति पर काबिज वर्गो का कब्जा हटाते हुए सारी सम्पत्ति को सामाजिक (सांझा) बनाना आवश्यक है। जब तक वर्ग कायम है तब तक दो विरोधी जीवन परिस्थितियां भी बनी रहेंगी तथा साथ ही इन के मध्य में होने वाला टकराव भी बना ही रहेगा।

वर्तमान दौर में दो भिन्न-भिन्न प्रकार की दुनिया-शोषक सामाजिक व्यवस्था एवं शोषण रहित समानता वाली सामाजिक व्यवस्था का भाग्य तय करने के लिए संघर्ष चल रहा है, क्योंकि आज विश्व स्तर पर शोषक व्यवस्था हावी है, इस लिए इस शोषक व्यवस्था को कायम रखने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं।

हमारे देश का ही उदाहरण लो। मौजूदा शोषक सामाजिक व्यवस्था की हकीकत का अनुमान इन्हीं बातों से ही लगाया जा सकता है कि किसान-मजदूर विशाल पैमाने पर आत्महत्याएं कर रहे हैं। नौजवान रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले नवयुवक सेवादार की अल्प संख्या की पोस्टों के लिए हजारों की संख्या में प्रार्थना-पत्र दे रहे हैं, कोई रोजगार न मिलने के कारण नौजवान निराशा के आलम में नशों की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं, यहां तक कि विशाल पैमाने पर आत्महत्याओं के रास्ते चुनने पर भी मजबूर हुए पड़े हें। नौकरियों के अवसर बढ़ने के बजाए कम हो रहे हैं। सरकारें उनके पकौड़े तल कर बेचते हुए रोजगार ढूंढने के हृदय विदारक मशवरे दे रही हैं। रोजगार के अवसर बढ़ाने तो क्या है, उल्टे नेशनल सैंपल सर्वे की रिपोर्ट का अनुमान है कि वर्ष 2011-12 से 2017-18 के दौरान तीन करोड़ बीस लाख साधारण ग्रामीण श्रमिक अपनी नौकरी गंवा चुके हैं। महिलाओं पर क्रूरता की कहानियां दर्दनाक से भी ज्यादा दर्दनाक होती जा रही हैं।

एक तरफ मजदूरों समेत अन्य मेहनतकश लोगों की ऐसी दुर्दशा वाली स्थितियां बनी हुई है तो दूसरी और हमारे देश के एक प्रतिशत लोगों के पास 73 प्रतिशत धन-दौलत एकत्र हो गई है। क्या कोई भी सम्पत्ति श्रम के बगैर पैदा हो सकती है ? बिल्कुल भी नहीं। इस का सीधा सा अर्थ यह है कि इन एक प्रतिशत धनवानों ने कितने लोगों की दौलत हड़प की हुई है। यही नहीं बल्कि 9 अमीर घरानों के पास

हमारे देश की 50 प्रतिशत सम्पत्ति हमीरों के पास 50 प्रतिशत सम्पत्ति एकत्र होने तथा इस को बचाए रखने का औजार हमारी शासन प्रणााली बनी हुई है।

यद्यपि हमारे क्षेत्र के बुजुर्ग वर्गीय दृष्टिकोण का सिद्धांत तो नहीं जानते थे परंतु उन्होंने अपने जीवन के यथार्थ के द्वारा इस को ठीक से समझा हुआ था। इसका एक उदाहरण लेते हैं। दो बुजुर्ग अपनी बात कर रहे थे। एक ने दूसरे बुजुर्ग से पूछा कि, 'बताओ भाई व्यक्ति को रोटी कब खानी चाहिए?' इस पर दूसरे बुजुर्ग ने जवाब देते हुए कहा, 'भाई गरीब को जब मिल जाए, अमीर का जब दिल करे।' अतः चाहे इतिहास हो अथवा वर्तमान, इसको वर्गीय दृष्टिकोण के साथ ही समझा एवं इसकी व्याख्या की जा सकती है, तथा वर्तमान की शोषक व्यवस्था को बदलने के लिए उचित रास्ते की तलाश करके संघर्ष किया जा सकता है।

अतः अंत में यही बात कही जा सकती है कि दो विरोधी जीवन-स्थितियां दो विरोधी वर्गों के दरम्यान टकराव का कारण बनती हैं। यही स्थिति हमारे देश की अंदर ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर बनी हुई है। वर्गों का खात्मा करते हुए यहां पर समानता वाले समाज की रचना की जा सकती हैं जब समाज वर्गों से रहित अर्थात समानता वाला बन जाएगा तब न तो विरोधी होंगे, न ही उनमें हित एक दूसरे से टकरायेंगे और न ही उनके बीच कोई टकराव होगा। मानवता के किसी एक हिस्से को किसी दूसरे हिस्से के साथ संघर्ष करने की आवश्यकता ही पड़ेगी। जो भी संघर्ष होगा, वह प्रकृति पर और अधिक नियंत्रण करते हुए उसको मानवता की सेवा में निभाने के लिए ही होगा।

मजदूर वर्ग का हित प्रकृति के इस परिवर्तन के नियम के किस प्रकार से अनुकूल है, वह भी देखते हैं। शेष सभी वर्गों के पास स्वामित्व के कोई न कोई साधन होते हैं, परंतु यह मजदूर वर्ग ही होता है जिसके पास अपने श्रम को बेचकर अपना गुजारा करने के सिवाय जीवत रहने के लिए कोई अन्य साध नहीं होते। इसलिए मजदूर वर्ग अपने आप को बनाए रखने के लिए न हीं अपितु स्वयं को वर्ग के तौर पर समाप्त करने की बात करता है (अथवा कर सकता है)। क्यों? यह उसके हित में इसलिए होता है क्योंकि जितनी देर तक वर्गीय समाज रहेगा, मजदूर वर्ग की वही स्थिति बनी रहेगी। अतः मजदूर वर्ग ही एकमात्र ऐसा वर्ग है जो अन्य शोषित वर्गों को साथ लेकर वर्ग भेद वाले समाज को बदल कर इस वर्गविहीन समाज में परिवर्तित कर सकता है। ऐसा करना मजदूर वर्ग के हित में भी है तथा यह समूचे मेहनतकश वर्ग के हक में भी रहता है।

मजदूर वर्ग का जो यह ऐतिहासिक रोल है, उसको पिछले समय के इतिहास ने भी सही सिद्ध किया है। रूस में लगभग 40 वर्ष तथा चीन में लगभग 27 वर्ष तक मजदूर वर्ग के नेतृत्व में यह जनपक्षीय शासन कायम रहे थे।

सारांश यह है कि मई दिवस का यही संदेश है कि सभी देशों के मेहनतकशों को एकजुट हो कर संघर्ष करते हुए यहां पर विश्व स्तर पर निजी सम्पत्ति को सामाजिक (साझा) सम्पत्ति में परिवर्तित करते हुए वर्ग रहित, समानता वाल समाज का निर्माण करने के लिए संघर्ष का रास्ता चुनना चाहिए। निजी सम्पत्ति की समाप्ति प्रकृतिक नियम के अनुकूल भी है क्योंकि जल, जंगल, जमीन अथवा कोई भी अन्य प्राकृतिक संसाधन नैसर्गिक तौर पर मौजूद हैं। कोई भी मनुष्य यह दावा नहीं कर सकता कि ये प्राकृतिक साधन उसने पैदा किए हैं। इसलिए इन साधनों पर सभी मनुष्यों का एक जैसा ही अधिकार होना चाहिए तथा ये सभी मनुष्यों की साझा मिल्कीयत ही होने चाहिएं।

जब यहां पर समानता वाले समाज का निर्माण हो जाएगा एवं मेहनतकश जनता शोषण से मुक्त हो जाएगी, तब की दुनिया प्रसन्नता से परिपूर्ण होगी। तब कोई भी व्यक्ति अपने दिमाग में जन्म-मरण से रहित होने का मोक्ष प्राप्त करने वाला भ्रमपूर्ण संकल्प नहीं पालेगा तथा न ही वह किसी काल्पनिक शक्ति का सहारा लेने वाले अंधविश्वास की ओर भागेगा। प्रत्येक इन्सान अधिक से अधिक जीवन जीने की लालसा रखेगा।

-हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह लेक्चरार

मन की बीमारियां : भूतबाधा, देवी सवारना

लेखक : डा. नरेन्द्र दाभोलकर,

पिछले अंक से आगे......

यह प्रसंग पढ़कर पाठकों के सामने भी भूतों के राज से यहां पर्दा उठ सकता है। अब जरा इस प्रसंग के कुछ पहलुओं पर विवेचनात्मक दृष्टि से गौर करें :

1. अन्य बच्चों की तरह कोवूर और उनकी पत्नी के बचपन में ही भूत की कल्पना के संस्कार गहराई से पड़े थे। भविष्य में विचारों की प्रगल्भता से कोवूर ने इस कल्पना को महत्व नहीं दिया, लेकिन श्रीमती कोवूर के मन में कहीं न कहीं इसका प्रभाव मौजूद था।

2. छात्रों ने सूचना दी थी कि रास्ते पर खड़े महावेताल के पेड़ पर भूत-पिशाच के दर्शन होते हैं।

3. इस सूचना से शायद श्रीमती कोवूर नहीं घबरातीं, लेकिन रात का अंधेरा और टार्च की अपर्याप्त रोशनी के कारण काले रंग की डॉज गाड़ी के बारे में उन्हें इंद्रियजन्य भ्रम हुआ।

4. श्रीमती कोवूर ने हाथी को भूत नहीं, बल्कि हाथी ही माना, लेकिन जंगली जानवरों के उनके डर के कारण डॉज गाड़ी की बजाए वे 'हाथी' कहकर चिल्लाईं यह गलत सूचना उन्होंने मान ली और ऊपर से अंधेरे के कारण इंद्रियजन्य भ्रम तुरंत पैदा हुआ।

5. गलत सूचना स्वीकार करने के कारण गलत कार्य-कारण भाव शुरू हुआ। इसीलिए सोए हुए ड्राइवर के खर्राटे हाथी की धूं-धूं आवाज की तरह लगी। ड्राइवर ने हवा अंदर आने के लिए बायां दरवाजा खुला छोड़ दिया, जो हवा के साथ आगे-पीछे हिल रहा था, दरवाजे की यह हलचल कोवूर को हाथी के बाएं कान की हलचल लगी थी।

6. कोवूर के पुकारने से ड्राइवर जाग गया। उसके खर्राटे बंद हो गए। मतलब हाथी की धूं-धूं आवाज बंद हो गई। उसने दाहिना दरवाजा खोल दिया, जो कोवूर को हाथी का दाहिना कान हिलने जैसा लगा। उस दरवाजे से ड्राइवर नीचे उतर कर कोवूर की तरफ बढ़ गया। मतलब, हाथी के दाहिने कान से एक सफेद आकृति निकली और कोवूर की दिशा में बढ़ गई।

अगर कोवूर ने साहस नहीं दिखाया होता अथवा ड्राइवर नहीं जगता या वह कहीं और चला जाता तो कोवूर को लगता कि हाथी निकल गया और वे सही-सलामत घर पहुंच गए। भूत-प्रेत पर भरोसा करने वाले लोग कहते, 'कोवूर कुछ भी कहें, उन्होंने भूत देखा। उनकी तकदीर अच्छी थी जो बच गए।' लेकिन कोवूर के समयोचित व्यवहार के कारण भूत का भ्रम बिल्कुल स्पष्ट हो गया। भूत-प्रेत का भ्रम दूर करने के लिए यह अच्छा उदाहरण है।

भूतों के संदर्भ में समाज सेवकों के विचार

अनेक लोगों ने भूतों के संदर्भ में लेखन किया है। चार्वाक ने भूतों का पता लगाया था। उन्हें इस बात का अहसास हो गया था कि भूतों की कल्पना आत्मा के अस्तित्व पर आधारित है। उन्हें आत्मा का शरीर से अलग अस्तित्व मान्य नहीं था। हमारा जड़ शरीर एक वास्तविकता है, पंचमहाभूतों के योग से इस चेतन देह का निर्माण हुआ है। शरीर बनने से पहले और उसके नष्ट होने के बाद आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है, ऐसा चार्वाक का कहना था। मराठी संत तुकाराम ने भी भूत के खोखलेपन के बारे में विचार व्यक्त किए हैं।

महाराष्ट्र के सुधारक गोपाल गणेश आगरकर ने भूत की कल्पना पर कठोर टिप्पणी की है। उनके अनुसार, 'भूत-पिशाच अथवा बिना शरीर की आत्मा जैसी बातों का कोई अस्तित्व नहीं है। उनके बारे में मन क्यों सोचता है? इसका उत्तर यह है कि कैलास, पाताल, स्वर्ग, नरक, बैकुंठ, यम, यमपुरी आदि काल्पनिक वस्तुओं का जो अस्तित्व है, वही भूत-पिशाच या आत्मा का अस्तित्व है। इनके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। आत्मा के दो रूप हैं-एक, देहबद्ध और दूसरा देह से परे। मृतक के सगे

संबंधियों में यह कल्पना होती है। इसीलिए वे मृत व्यक्ति को उसके जीवन में जो चीजें प्रिय थीं, उनका अर्पण करते हैं। सुहागिन स्त्री के मृत शरीर को नहलाकर, नई साड़ी पहनाकर, कुमकुम लगाकर उसकी गोद भरी जाती है। उसे पिंडदान दिया जाता है। यह सब ऐसा ही कर्मकाण्ड है।

आगरकर की मान्यता भी यही है। भूतों को संतुष्ट करने के लिए जो श्रद्धा और कर्म किए जाते हैं, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे कहते हैं, 'हमारी प्रशंसा से ईश्वर खुश होता है और हम ेंसंकटों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रवृत्त होता है, यह विचार गलत है। श्राद्ध विधि या पिंडदान से मृतात्माएं संतुष्ट होती हैं और हमारी सहायता करती हैं तथा गायत्री मंत्र अथवा यज्ञ, जप एवं मंत्रोच्चारण से उन्हें दहशत फैलती है, ऐसा मानना भी गलत है...'

भूत-पिशाचों के अस्तित्व पर इतना संदेह या प्रश्नचिन्ह होने पर भी लोग क्यों अपने मन में उनकी कल्पनाओं को पालते हैं? आगरकर आगे लिखते हैं, 'सौ में से निन्यानवे लोग समान आचार-विचारों वाले होते हैं। उनमें समायोजन होता है। मनुष्य शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम को टालने की कोशिश करता है। घिसे-पिटे रास्ते पर चलना मन को अधिक प्रिय होता है। अधिकांश लोग स्वतंत्र विचारधारा को स्वीकार नहीं करते। इसीलिए भूत-पिशाच की कल्पनाएं तत्काल मजबूत होती हैं, उनका त्याग करना चाहिए।'

सन् 1914 में रामकृष्ण नाईक (बीजापुर) ने 'भूताचा बागुलबुवा' (भूत का हौवा) नामक किताब मराठी में लिखी। उसमें उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट कहा है कि भूत-पिशाच का आभास केवल मन का भ्रम है। इस संससार में भूत-योनि का कोई अस्तित्व नहीं है। भूतबाधा अथवा पिशाच की चेष्टाओं की खबरें अखबारों में छपती रहती हैं तर्कबुद्धि से विचार करने पर इन घटनाओं से भूत का रत्ती भी संबंध जाहिर नहीं होता। प्रकृति अजीबोगरीब घटनाओं का मानो पिटारा है। उसके सभी रहस्य ज्ञात नहीं होते। इसीलिए उन्हें भूतों की करामातें मानना गलत है। ऐसे मानसिक आतंक के कारण मनुष्य का अनेक स्तरों पर नुक्सान होता है, इसीलिए सभी समझदार और जिम्मेदार लोगों को इस कल्पना का त्याग करने का आहवान उस किताब में किया गया है।

'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' वैचारिक जागृति के लिए के लिए चुनौतियों को स्वीकार करती है। कोई भी भूत दिखाए, उसका फोटो लेने के लिए उसे हमारे पास ले आए और अंनिस के कार्यकर्ता को उससे बाधित करके दिखाए। जो ऐसा कर दिखाएगा, उसे 21 लाख रुपयों का इनाम देने की समिति की चुनौती अब तक किसी ने स्वीकार नहीं की है।

एक सच्चा नायक

(अ) हिस्टेरिकल डिसोसिएशन

सामान्य व्यक्ति के शरीर पर किसी का सवार होना और उस व्यक्ति के घुघुआने की नौटंकी समाज में अनेक स्थानों पर नजर आती है। मंगलवार अथवा शुक्रवार को किसी स्त्री पर देवी सवार हो जाती है। अमावस और पूर्णिमा के दिन यह नजारा बहुधा देखने को मिलता है। नवरात्र के त्यौहार में, आश्विन शुक्ल अष्टमी की रात को देवी की पूजा कर उसके सामने खाली गगरी में आवाज के साथ फूंक कर नाचने की रस्म महाराष्ट्र की स्त्रियों में प्रचलित है। नाचते समय उन्हें होश नहीं रहता। मेले में ढोल-नगाड़ों की कर्कश ध्वनि में देवी का जुलूस निकलता है। तब अनेक पर देवी सवार हो जाती है। भगवान श्रीदत्त जयंती के दिन गाणगापुर, महाराष्ट्र के तीर्थ स्थानों पर श्रीदत्त की आरती में दत्त-सवार होने का करिश्मा अनेक लोग दिखाते हैं। सैलानी बाबा की दरगाह अथवा पीर के स्थान पर भी भूतों का ऐसा खेल दिखाई देता है। वहां जो दृश्य होता है, वह रहस्यात्मक और डरावना होता है। घूमने वाला व्यक्ति भूत-पिशाच से पीड़ित है अथवा उस पर देवी सवार है, ऐसे प्रश्न असल में निरर्थक होते हैं। होता यह है कि घूमने वाले व्यक्ति को अपना ही होश नहीं रहता। वह क्या बोलता है, उसे क्या चाहिए, इसका उसे अहसास नहीं होता। जो देवता अथवा मृत व्यक्ति सवार होता है, उसके व्यवहार की कल्पना के आधार पर पीड़ित व्यक्ति अपने हावभाव दर्शाता है, मानो उस देवता अथवा आत्मा ने उसके व्यक्तित्व को काबू में कर लिया हो! इस काल में घटने वाली

बातों की स्मृतियां उसके सामान्य हो जाने पर उसे याद नहीं रहतीं। हमारे समाज में ऐसी अवस्थाएं अधिकांश स्त्रियों में ही पैदा होती हैं। कुछ समय के लिए अपने व्यक्तित्व का नियंत्रण खो देने की क्रिया को मानसशास्त्रीय भाषा में 'हिस्टेरिकल डिसोसिएशन' कहा जाता है। व्यक्ति के अचेतन मन में जो भावनाएं, विरोधी विचार एवं तनाव भर जाता है, उसके विकास का मार्ग ही 'देवी का सवार होने' की क्रिया होती है। मजेदार बात यह है कि इस बात का अहसास उस व्यक्ति को अथवा अन्य किसी को नहीं होता। यह एक हलकी मानसिक बीमारी है। स्किजोफ्रेनिया की मानसिक बीमारी में ये लक्षण नजर आते हैं।

हमारे समाज में देवी-देवताओं के नाम पर भगत, मांत्रिक एवं देवर्षि अपना धंधा चमकाते हैं। ऐसे स्त्री एवं पुरुष इसका लाभ उठाते हैं और देवी सवार होने का नाटक करते हैं। आजकल मानसिक बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति को भूतबाधा का शिकार बताकर लोगों को लूटने का धंधा जोरों पर है। देनों आडंबरों में लोगों का शोषण होता है। ऐसी बातों का पर्दाफाश कर, जनजागृति कर, संघर्ष के माध्यम से ऐसे ढकोसलों पर पाबंदी लगाई जा रही है। आजकल इस पर बहुत अंकुश भी लग चुका है। अब तो महाराष्ट्र में कानून भी बन गया है।

देवी सवार होने का निश्चित कारण क्या होता है? बताया गया है कि यह मन में जमा हुए तनाव का परिणाम होता है। कुछ विशेष प्रसंगों में मन की घुटन निकालने की कोशिश की जाती है। पानी से भरे बांध का उदाहरण इस संदर्भ में द्रष्टव्य है-घनघोर वर्षा होने पर बांध लबालब भर जाता है। उसमें अतिरिक्त पानी समाने की क्षमता नहीं होती है। ऐसे समय बांध के दरवाजे खोल दिए जाते हैं। पानी बाहर छोड़ना पड़ता है वरना पानी के दबाव से बांध टूटने का खतरा रहता है। व्यक्ति का मन भी ऐसा ही बांध होता है। अतिरिक्त दुख से वह टूट सकता है। हमारे समाज में यह गंभीर समस्या स्त्रियों को सहनी पड़ती है। समाज में गौण स्थान, असुरक्षा की भावना से वे निरंतर दुखी रहती हैं। दुख का हल ढूंढन उनके बस में नहीं होता। स्वाभाविक रूप से मन के बांध का मार्ग खोलकर दुख को कम करने का एक उपाय 'देवी का सवार होना' है। जागृत अवस्था में जो घुटन, तिरस्कार, तनाव, सास और पति के लिए शिकायत आदि व्यक्त नहीं होते, वे इस अवस्था में संभव होते हैं। चाहे भूत-पिशाच की पीड़ा हो या देवी सवार होने की कल्पना, अनजाने ही मन के अचेतन स्तर पर यह क्रिया होती है। अत्यधिक घुटन-दमन से बेचैन व्यक्तित्व ऐसी अंधविश्वासी क्रियाओं से स्वयं को टूटने से बचा लेता है।

ऐसी क्रिया को मानसशास्त्र में 'कैथर्सिस' की संज्ञा दी गई है। इस प्रक्रिया में मन सीमित रूप से हलका हो जाता है और उसे स्वयं को संभालने का मौका मिलता है। हमारे देश में ऐसे मार्ग अधिक अपनाए जाते हैं, क्योंकि यहां उसकी जरूरत है।

किसी स्त्री पर, विशेष प्रसंगों में, अगर देवी सवार होने लगती है, तब घर के माहौल में उसके अनुकूल परिवर्तन होने लगता है। परिवार के लोग उसके प्रति आदर-सम्मान का भाव रखने लगते हैं। घर में जो सास-ससुर, पति उसका अपमान एवं ताने दिया करते थे, वे उससे डरने लगते हैं। इससे तात्कालिक मानसिक संतोष प्राप्त होता है। जांच-पड़ताल के अनेक उदाहरणों में देखा गया है कि व्यावहारिक जीवन में उपेक्षित रखी जाने वाली स्त्रियों पर देवी सवार होती है। जब मान-सम्मान बढ़ने लगता है तो इस क्रिया को और भी प्रेरणा मिलती है। कभी-कभी धन प्राप्ति के मार्ग भी खुल जाते हैं। फिर इस मार्ग को कायम रखना एक जरूरत बन जाती है अर्थात् लंबे समय बाद ऐसा भी होता है कि मानसिक संघर्ष के कारण देव सवार होती है, लेकिन उसका निवारण गौण बन जाता है और तीव्र इच्छा ही घूमने का कारण बन जाती है।

देवी सवार होने वाली प्रक्रिया की शिकार बनी महिलाएं हिस्टेरिकल व्यक्तित्व वाली होती हैं। सूचनाओं को वह सहजता से स्वीकार करती हैं। मानसिक परेशानी को व्यक्त करने की जरूरत की तीव्रता पर देवी के सवार होने की संभावना निर्भर होती है। सिर्फ नवरात्र की अष्टमी और गांव के मेले में ही बहुत-सी औरतें इस अवस्था में नजर आती हैं। इसका कारण यह होता है कि बिना किसी दोष

अथवा आरोप के ही मानसिक तनाव दूर हो जाता है। हर शुक्रवार को जो ऐसी अवस्था में होती है, उन्हें यह जरूरत अधिक होती है। देवी सवार होने की क्रिया सम्मोहन के समान होती है। इसीलिए विशिष्ट माहौल में देवी सवार होने की क्रिया बहुत शीघ्र और प्रभावी ढंग से होती है। कोई एक ज्ञानेंद्रिय निरंतर सक्रिय रही तो ग्लानि का अनुभव होता है। किसी प्रकार की दीर्घ ध्वनि, ज्योति अथवा दीये को लंबे समय तक घूरना, धूप को जलाकर सुगंध को लंबे समय तक सूंघना जैसी बातें व्यक्ति को सम्मोहन अवस्था में ले जाने के लिए सहायक होती हैं। साथ ही आसपास के माहौल में बार-बार यह सूचना फैलाई जाती है कि मंगलवार, शुक्रवार, अष्टमी और मेला आदि के दिन 'देवी सवार होती है'। इन बातों से व्यक्ति प्रभावित होता है। गाणगापुर जैसा विशिष्ट स्थान ऐसी बातों के लिए मशहूर है।

गगरी फूंकने का प्रसंग भी ऐसे माहौल का ही उदाहरण है। नवरात्र में देवी की बार-बार आरती उतारना, चमकने वाले बहुसंख्य दीपक, धूप का जलना एवं धुओं आदि बातों मानो सम्मोहन स्थिति की पूर्वतैयारी होती हैं। स्त्रियों का जमघट होता है। 'मुझ पर देवी सवार होने वाली है' की पूर्व सूचना वह स्त्री स्वयं को देती रहती है। पूरे समूह की अपेक्षाएं भी उस पर प्रभाव डालती हैं। बाह्य मन पर होने वाली बंदिशें कछ समय के लिए शिथिल हो जाती हैं और उस पर सहजता से देवी सवार हो जाती है। गगरी फूंकने के कर्मकांड में भी यही होता है। खाली गगरी में मुंह डालकर घूमते समय जो श्वसन होता है, उस समय खून में प्राणवायु की कमी आ जाती है और कार्बन डाईआक्साईड की मात्रा बढ़ जाती है। दिमाग की पेशियों को पर्याप्त प्राणवायु नहीं मिलती और ग्लानि का अनुभव होने लगता है। इस स्थिति में लगातार घूमना आवश्यक हो जाता है।

देवी सवार होने वाले आडंबर को छोड़कर बाकी मामलों में हलकी मानसिक बीमारी की संभावना होती है। घर के लोगों को आश्वस्त कर उन्हें इस बीमारी का स्वरूप समझाना इसके इलाज की पहली सीढ़ी है। ऐसी बातों के बारे में दैवी इलाज की नहीं, बल्कि मानसिक बीमारी के दृष्टिकोण से देखने की सीख देनी चाहिए। देवी सवार होने पर की जाने वाली पूजा, पूछे जाने वाले प्रश्न, पैसे फैंकने के फालतू कार्य पूरी तरह से बंद करने की व्यवस्था होनी चाहिए। इससे मनोरुग्न की ऊटपटांग बातों को मिलने वाली प्रेरणा बंद हो जाएगी। फिर यह अवस्था धीरे-धीरे नष्ट होगी। देवी सवार होने वाली बीमारी को पूरी तरह से खत्म करने के लिए बीमार व्यक्ति की समस्या पर गौर करना चाहिए। उस व्यक्ति को घर-परिवार, समाज में प्रेम और सम्मान मिलना चाहिए। परिवार इन बातों पर बहुत जल्दी अमल करेगा, ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि पुराने ख्यालों से इतनी आसानी से मुक्ति नहीं मिलती। ऐसी बातों से अगर अर्थप्राप्ति का साधन जुड़ा हो तो जनजागृति का कार्य और भी कठिन हो जाता है। ऐसे मानसिक इलाज के लिए कुछ दवाएं भी लागू होती हैं, लेकिन इन सारी बातों के लिए पारिवारिक सहयोग बहुत महत्वपूर्ण होता है।

(ब) हिस्टेरिकल कनवर्जन

मन के तनाव एवं घुटन के कारण व्यक्ति जीवन में संघर्ष से पलायन करता है। कुछ समय के लिए दूसरे व्यक्तित्व को स्वीकार करता है। देवी सवार होने की यह क्रिया हिस्टेरिकल डिसोसिएशन होती है, लेकिन हिस्टेरिकल कनवर्जन जैसी मानसिक बीमारियों में व्यक्ति अपनी परेशानियों को शारीरिक लक्षणों द्वारा स्पष्ट करता है। आंतरिक बेचैनी से मुक्ति पाने के लिए केंद्रीय मज्जासंस्था की सहायता ली जाती है। इस बीमारी से प्रत्यक्ष जख्म बिल्कुल नजर नहीं आते हैं, लेकिन सभी लक्षण मज्जासंस्था की शारीरिक बीमारी के होते हैं। यह समस्या अधिक गंभीर होती है।

ऐसे मनोरुग्ण हिस्टेरिकल व्यक्तित्व के होते हैं। इसमें थोड़ा-बहुत नाटक भी होता है। भावनाओं का प्रस्तुतिकरण अस्पष्ट होता है। श्रृंगार करना, शरमाना उन्हें अच्छा लगता है। ये थोड़े जिद्दी स्वभाव के होते हैं। अपनी इच्छा को अधिक महत्व देते हैं।

उनके मन की भावनाएं एवं विचार शब्दों के साथ शारीरिक हावभावों से व्यक्त होते हैं। व्यक्ति भौंहें चढ़ाकर प्रश्न पूछता है, कंधे उचकाकर अथवा माथे की शिकन से नाराजगी व्यक्त करता

है। गुस्से से कांपता है। कुछ मुहावरों के द्वारा भी मानसिक सदमों के परिणामों का वर्णन किया जाता है, जैसे-हाथ-पांव फूलना, हिम्मत हारना, सुध-बुध खो देना आदि। इस तरह हिस्टेरिकल कनवर्जन का मानसिक संघर्ष शारीरिक लक्षणों में रूपांतरित होता है। पीड़ित व्यक्ति अप्रिय, असहय भावनाओं को, इच्छाओं को मन में दबाने की कोशिश करता है। अंतर्मन की चिंता को सहने की क्षमता खत्म होने पर वह उसे कम करने का मार्ग ढूंढता है। मज्जांसस्था की बीमारी के लक्षणों द्वारा वह चिंता बाहर निकलती है। ऐसे मरीज गूंगे हो जाते हैं, अंधे हो जाते हैं, अपाहिज हो जाते हैं। उन्हें लकवे की बीमारी हो सकती है। उन्हें दौरे पड़ने लगते हैं। कभी-कभी वे बेहोश भी हो जाते हैं। यह सब लक्षण अत्यधिक गंभीर होते हैं। परिवार के लोग घबरा जाते हैं। लेकिन यह शारीरिक बीमारी नहीं होती है, बल्कि इसका मूल मानसिक तनाव एवं संत्रास में होता है। इस बीमारी का मूल उद्देश्य सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना होता है। आसपास अगर भीड़ हो तोयह लक्षण अधिक तीव्र होते हैं। अकेलेपन में इसकी तीव्रता अपने-आप कम हो जाती है। यह बीमारी हिस्टेरिकल व्यक्तित्व के लोगों में देखी जा सकती है। मितभाषी, एकांतप्रिय व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित होते हैं। जवान औरतों में ये लक्षण अधिक होते हैं। किसी भी उम्र के पुरुषों में भी इन्हें देखा जा सकता है। बाहय तनाव को न सह पाने तथा जानलेवा हादसों के कारण भी इस बीमारी की शुरुआत होती है। डाक्टरी जांच-पड़ताल के बाद ही इस मानसिक या शारीरिक बीमारी का पता चलता है।

मानसिक बीमारी के ऐसे मरीज कभी नाटक नहीं करते। बीमारी का नाटक करना या हिस्टेरिया होना दोनों में अंतर है। मरीज को इन लक्षणों का अहसास रहता है और दोषों पर उनका विश्वास भी होता है। वे बीमारी का स्वांग नहीं रचते। कभी-कभी रिश्तेदारों को ऐसी गलतफहमी हो जाती है, जो उचित नहीं है। पारिवारिक सहयोग के बिना ऐसे मरीजों के ठीक होने की संभावना नहीं होती है। रिश्तेदारों को चाहिए कि वे मरीज के साथ डाक्टर की सलाह के अनुसार व्यवहार रखें। बिना वजह घबराना नहीं चाहिए। नार्कोथेरैपी की इलाज-पद्धति में कुछ दवाओं की सहायता से विशेषतः बेहोश करने की पेंटोथाल सोडियम जैसी दवाओं की अल्प मात्रा की खुराक दी जाती है। इसीलिए मरीज पूरी तरह से बेहोश नहीं होता। यह अवस्था सम्मोहन के समान होती है। ऐसी स्थिति में मरीज को कुछ महत्वपूर्ण हिदायतें दी जा सकती हैं। मरीज उन्हें स्वीकार भी कर लेता है और बीमारी के लक्षण कम हो जाते हैं। मरीज के अंतर्मन की तह तक जाना जरूरी होता है। उसे मार्गदर्शन करना चाहिए।

अचानक उत्पन्न होने वाली और गंभीर लगने वाली ऐसी बीमारियों के कारण मरीज के रिश्तेदार बौखला जाते हैं। उन्हें यह मामला बाहय बाधा लगती है। ऐसे में बाबा, तांत्रिक, मांत्रिक के इलाज को पसंद किया जाता है। मांत्रिक बुद्धिमान हो, उसे मरीज की पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी हो, उसकी प्रसिद्धि की वहां के माहौल में चर्चा हो तब मरीज अनायास उसकी प्रत्येक बात को स्वीकार कर लेता है और वह विश्वास के कारण धीरे-धीरे ठीक होने लगता है। ऐसे में बाबा की दैवी शक्ति की धाक जम जाती है। जो बीमार डाक्टर ठीक नहीं कर सके, उसे बाबा ने ठीक कर दिया। लगे हाथ ऐसी गलतफहमियां भी मजबूत होने लगती हैं कि यह बीमारी चिकित्साशास्त्र से परे और अज्ञात है।

हलकी और गंभीर मानसिक बीमारियां और कार्यकर्ता की भूमिका

मन, मन का व्यापार एवं उसके व्यवहार के बारे में सभी लोग नहीं जानते। इसीलिए असामान्य क्रियाएं सदा रहस्य बनी रहती हैं। भूत की बाधा एवं देवी का सवार होने की कल्पनाओं से यह रहस्य और भी गहरा हो जाता है। अधिकांश प्रसंगों में झूठ का सहारा लिया जाता है और इन चीजों से मान-सम्मान एवं पैसा मिलने से यह एक धंधा बन जाता है। इस पर काबू रखने के लिए 'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' का कार्य महत्वपूर्ण हो जाता है। जनजागृति उसकी पहली सीढ़ी है। मन क्या है? वह बीमार क्यों होता है? उसका इलाज क्या है? इन चीजों की जानकारी समाज में व्यापक रूप में पहुंचाने का काम समिति

करती है। तनाव को टाला नहीं जा सकता। लेकिन वह मानसिक बीमारी में न बदल जाए इस बात का किस प्रकार ध्यान रखना चाहिए, यह समझाया जाता है। इसके बाद कार्यकर्ता की असली भूमिका शुरू होती है। जिस परिस्थिति में व्यक्ति ऐसा व्यवहार करता है, उसको वह रोक नहीं पाता है। परिवार और समाज से उसे उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। समाज को उसकी इस समस्या से कोई लेना-देना नहीं होता। ऐसे हालात में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के जागृत एवं संवेदनशील कार्यकर्ता का सहयोग बहुत मूल्यवान होता है। मान लीजिए, शादी के पांच वर्ष बाद भी संतान नहीं होती है, इसका तनाव एवं घुटन वह स्त्री सह नहीं पाती। ऐसे में उस पर देवी सवार होती है। इस दंपति के निःसंतान होने के कारण आधुनिक विज्ञान अधिक गहराई से जांच कर इसका इलाज बता सकता है। कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे ऐसे दम्पति को यह बताएं कि इस समस्या का समाधान डाक्टरी जांच से निकल सकता है। उनकी समायोचित पहल भी आवश्यक होती है। जांच-पड़ताल से यह सच्चाई पता चल सकती है कि उन्हें संतान होगी या नहीं। बच्चे को गोद लेने का विकल्प उन्हें मिल सकता है। इससे अनाथ बच्चों को आधार मिलता है और दम्पति को मातृत्व-पितृत्व का आनंद। इन बातों के लिए लोगों को प्रेरित करना और इसमें सुधार लाना भी कार्यकर्ता का महत्वपूर्ण कार्य होता है। मानसिक बीमारियों का गलत लाभ उठाकर लोगों को उल्लू बनाने वाले बाबाओं एवं मांत्रिकों का भंडाफोड़ भी समिति करती है। यह सब करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सूई चुभोकर, मारपीट कर पीड़ित व्यक्ति को होश में लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। स्वांग का पर्दाफाश करने को लेकर आत्मप्रशंसा भी नहीं चाहिए। वस्तुतः स्वांग एक मानसिक बीमारी का लक्षण होता है। व्यक्ति अपने अचेतन मन के तनाव से मजबूर होकर यह सब कुछ करता है। इसीलिए ऐसे मरीजों को शिक्षा की अपेक्षा प्यार की जरूरत होती है। क्रोध की अपेक्षा करूणा की जरूरत होती है। यह विस्तृत विवेचन इसीलिए आवश्यक है, क्योंकि गंभीर मानसिक बीमारी के मामलों में अकसर वास्तविक परिस्थिति नहीं देखी जाती। उसके लक्षण प्रायः अंधविश्वास से जोड़ दिए जाते हैं। इसे टालकर मानसोपचार विशेषज्ञ से इलाज करवाने की जरूरत होती है। ऐसे इलाज में पूरा सहयोग दिया जाता है।

शेष अगले अंक में ..

अनु. चंदा गिरीश

(डॉ.नरेंद्र दाभोलकर की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन विचार से साभार)

ज़िद

-धर्मपाल साहिल

तुम अंधेरों को रोशनी,
दिन को रात
मनवाने की ज़िद छोड़ दो।
बेशक सूरज को
बंद कर लो मुट्ठी में
पर धूप सरक जाएगी
बंद मुट्ठी से रेत की तरह।
पानी पकड़ने की,
तमाम कोशिशें भी
बेकार जाएंगी।
वक्त भला कब
कैद हुआ है
तर्क की सलाखों में ।
इसलिए तुम
अंधेरों को रोशनी
और दिन को रात
कहलवाने की ज़िद छोड़ दो।

"हमेशा सतर्क रहो,
प्रकाश की कुछ ऐसी व्यवस्था करो कि तुम्हारे जीवन में अन्धेरा आने ही न पाए।"

-सर रामसे

अवैज्ञानिक शिक्षा और समाज

–अभिनव
मो. 9086821122

मेरा ऑफिस एक प्राइवेट कोचिंग सेंटर के ठीक सामने है मुझे जब कभी मौका मिलता है मैं वहां आने जाने वाले बच्चों के माता-पिता से बातें करने की कोशिश करता रहता हूं और यह जानने में लगा रहता हूं कि उनके शिक्षा के बारे में क्या विचार हैं, शिक्षा को वह क्या और कितना समझते हैं। ज्यादातर लोगों का नजरिया शिक्षा को लेकर बहुत ही निचले स्तर पर है और बहुत ही मैकेनिकल (mechanical) है। शिक्षा को लोग सिर्फ अंडा देने वाली मुर्गी समझते हैं जिसको सिर्फ और सिर्फ रोजगार और पैसे कमाने के साथ ही जोड़ा जाता है ।

दिमागी तरक्की या वैज्ञानिक चिंतन शिक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। जिस कारणवश शिक्षा का स्तर नीचे गिरता जा रहा है और शिक्षा का दायरा भी सीमित हो गया है। यहां तक कि ज्ञान की परिभाषा अब आपकी मानसिक आमदनी तय करती है। लेकिन उनके लिए आमदनी का ज़रिया कोई मायने नहीं रखता। यहां तक कि ऐसे शिक्षक ढूंढना भी बहुत मुश्किल है जो इस मैकेनिकल ज्ञान प्रक्रिया से ऊपर हो ।

आजकल भौतिक विकास को जेब में पड़े नोटों से तोला जाता है कितनी प्रॉपर्टी आप बना चुके हैं और कितनी बनाने वाले हैं। सोसायटी का चाल चलन कैसा हो उसे अब सेठ लोग तय करते हैं। अच्छा व्यवहार गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग तथा हाय तक ही सीमित है। इतनी बात कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा अब उतनी ही ली जाती है जिससे सिर्फ पैसा कमाया जा सके और किसी बड़े उद्योगपति के लिए वफादार और बढ़िया-इशारे पर चलने वाले गुलाम तैयार किये जा सकें !

वही व्यक्ति बुद्धिमान समझा जाता है जो ज्यादा पैसा कमाता है और अपने आका को खुश रखता है। किसी व्यक्ति की योग्यता और उसके विशेषज्ञता के कारण उस व्यक्ति को मानसिक स्तर पर प्रबुद्ध समझ लेना एक बहुत बड़ी भूल है यह बात बिल्कुल वैसे ही है जैसे किसी इंजीनियर से कैंसर का इलाज पूछना।

इसका एक उदाहरण और देना चाहता हूं। एक डॉक्टर जो अपनी योग्यता से ज्ञान हासिल करता है और शारीरिक विज्ञान के नियमों को समझता है पर वह इस बात को क्यों समझने में तमाम उम्र नाकाम रहता है कि यह शरीर एक पदार्थ है किसी परमात्मा या ईश्वर की बनाई कोई वस्तु नहीं है। उसका अपने रोगियों को यह कहना I treat god cures मानसिक दिवालियापन की चरम सीमा है

एक इंजीनियर भी जब कोई कार खरीदता है तो परमात्मा से कार की रक्षा की विनती करता है फिर एक इंश्योरेंस पॉलिसी भी खरीदता है। यह भी हमारी शिक्षा प्रणाली का एक नकारात्मक पहलू है कि हम शिक्षा का एक सफल पैटर्न आजादी के 70 साल बाद भी स्थापित नहीं कर पाए हैं ! हमारे यहां विज्ञान का ज्ञान हासिल करने के बाद भी बड़े-बड़े प्रोफेशनल्स चाहे वह किसी भी फील्ड में हों लेकिन साइंस, मेडिकल, इंजीनियरिंग तथा अन्य किसी भी साइंस से जुडे होकर भी वे साइंटिफिक टेंपरामेंट से कोसों दूर रहते हैं और ईश्वरवादी विचारधारा से समाज के खोखलेपन को और खोखला करने में अपना योगदान देने से भी नहीं चूकते। ऐसे लोगों की प्रैक्टिस और चिंतन में अंतर्विरोध तथा विरोधाभास एक सामाजिक त्रासदी का प्रतीक है !हमारा समाज हमारा देश तेजी से एक ऐसी मिसाल बनता जा रहा है जहाँ अधिकांश लोगों का मानसिक स्तर और बौद्धिक विकास उनकी शिक्षा डिग्रियों के ठीक उल्ट है।

आज जिस दौर से हमारा देश गुज़र रहा है वह एक बहुत ही गंभीर समस्या है जिसमें जाने अनजाने में हम अपने बच्चों और उनके आगे आने वाली नस्लों को विरासत में मानसिक गुलामी लिख कर जा रहे हैं । हम उन्हें अच्छा तर्कशील और सहज इंसान बनाने की बजाय किसी पूंजीपति के लिए एक अच्छा गुलाम बना रहे हैं या किसी राजनीतिक पार्टी के लिए एक अच्छा दंगाई पैदा कर रहे हैं।

यह सब एक सोची-समझी प्लानिंग का हिस्सा है जो इन्सान की मानसिक विकास के खिलाफ एक साजिश है जिसमें समाज के विभिन्न धर्मो का पुजारी वर्ग और पूंजीवाद का एक खास वर्ग जिम्मेदार है जो पर्दे के पीछे से यह सारे ढांचे की प्लानिंग कर रहा है ।

यहां मैं एक बात और समझाना चाहता हूं कि अब विभिन्न धर्मो के पोंगा पंडित लूटने वाले पूंजीपति के साथ मिलकर अपने अपने वर्ग हित के लिए सारी प्लानिंग कर रहे हैं !

शिक्षा प्रणाली में से स्वतंत्र विचारों को हटा कर उसमें आस्था, अन्धश्रद्धा और डर का ज़हर घोल दिया गया है !

जो थोड़ा बहुत हमारे पास रैशनल मैटर है या रैशनलाटी को प्रोटेक्ट करने का हम लोगों के पास जो संवैधानिक हक है यह लोग उसको भी छीनने की तैयारी में बैठे हैं। Article 51AH के ऊपर अटैक बड़ी प्लानिंग के साथ किया जा रहा है नवीनतम घटनाक्रम में पंजाब की lovely University में जो साईस कॉन्फ्रेंस 2018 में हुई है उसमें हुई गतिविधियों कोई छुपी हुई नहीं हैं।

हर तरह से आपकी मानसिक आजादी को कैद किया जा रहा है। कला को सीमित किया जा रहा है, जैसे 'पद्मावती' फिल्म के रिलीज के समय लोगों की भावनाओं को भड़काया गया ।

किस तरह प्रगतिशील कलाकारों को बैन किया जा रहा है! प्रकाश राज को बॉलीवुड ने अवांछित घोषित कर दिया है, कई पाकिस्तानी गायकों को भारत की धरती पर बैन लगाया गया है !

अभी हाल ही में अमोल पालेकर को National Gallery of Modern Art (NGMA) के एक समारोह में चीफ गेस्ट के होते भी अपने विचार व्यक्त करने से रोका गया ! क्यों और किसके लिए यह समझने की जरुरत है ! एक धर्म विशेष के वर्चस्व के लिए, ऐतिहासिक साहित्य को बदला जा रहा है जगाह के नामों को बदल कर इतिहास में से सच्चाई को मिटाने की कोशिश की जा रही है। हिन्दू धार्मिक ग्रंथों को मनमाने तरीके से इतिहासिक ग्रन्थ बनाया जा रहा है !

ईश्वरवादी अर्थात अध्यात्मवादी सोच को बढ़ावा दिया जा रहा है। असल में विज्ञान की गाड़ी को घुमाकर Dark Age की तरफ ले जाने की पूरी कोशिश की जा रही है। २१वीं शताब्दी से उल्टी दिशा में लोगों को पाषण युग में धकेला जा रहा है!

TV channels की तरफ से ऐसे प्रोग्रामों का प्रसारण किया जा रहा है जो सीधे से आपके बच्चे की मानसिकता पर असर डालता है। उन्हें तर्कशील और अच्छा नागरिक बनाने के बजाय एक कटर मजहबी आदमी बनाया जा रहा है जिसे आगे जाकर यह मीडिया और पुजारी वर्ग अपने निजी हित, हिंसा और दंगों को भड़काने के लिए इस्तेमाल करेंगे और किया भी जा रहा हैं।

इस बात को कहने में मुझे यह कोई गुरेज नहीं है कि आज पूंजीवाद का हमारे देश की राजनीति पर पूरा पूरा अधिकार हो गया है ! प्रधानमंत्री से लेकर नीचे तक सभी एक ही सोच रखते हैं नौजवानों का मानसिक, सामाजिक, विचारात्मक शोषण किया जा रहा है ! पुजारी वर्ग और पूंजीवाद का यह एक ऐसा भयानक गठबंधन पिछले 5 सालों से गंभीर रूप में देखने को मिला है।

इस गठबंधन ने पहला अटैक वैज्ञानिक सोच के प्रतीक educational institutions पर किया गया , जैसे JNU, HCU, FTII, IIT BHU । फिर इनोवेटिव इंस्टीट्यूट पर जैसे HAL फिर साइंस एंड टेक्नोलॉजी के इंस्टीट्यूट ISRO CSIR ।

HRD मिनिस्ट्री में उन लोगों की नियुक्ति की गई जो 12वीं पास भी नहीं थे। ह्यूमन रिसोर्सेज मिनिस्टर 'HR' प्रकाश जावेडकर ने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि हमारा एजेंडा मॉडर्न एजुकेशन की जगह वेदों पर आधारित, एजुकेशनल पालिसी को लागू करना है !

इस नए स्तर में एजुकेशन का बजट भी कम कर दिया गया है। हर तरह से कोशिश हो रही है कि किस तरह से देश के नौजवानों की मानसिकता को काबू करके उन्हें वैज्ञानिक सोच या क्रिटिकल थिंकिंग (critical thinking) से वंचित कर के मनुवादी या तर्कहीन बना दिया जाए ताकि वह तमाम उग्र भजन मंडली पार्टी के एजेंडा में व्यस्त रहें और अपना लोक परलोक संवारने के जाल में पड़े रहें और कभी भी पुजारी और पूंजीपतियों के गठबंधन को न समझ पाए और न ही उनकी नीतियों का विरोध कर सकें। इंसान को वह

एक पालतू कुत्ता बनाना जैसा चाहते हैं जो तमाम उम्र अपने मालिक का वफादार रहे और जब भी कोई गठबंधन की गलत नीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाए तो कुत्ते खूंखार जानवर की तरह उनको नोच खाएं जैसे दाभोलकर, कलबुर्गी, गौरी लंकेश तथा पांसारे को यह ड्रैकोनियन खा गया।

इस समय जरूरत है कि हम अपने बच्चों को किसी भी राजनीतिक दल की विचारधारा से ना जुड़ने दें बल्कि राजनीतिक सोच की critical understanding के साथ बच्चों को जोड़ा जाए। बच्चों को साइंस एंड रिसर्च के प्रोग्राम्स दिखाए जाए। घर पर पूजा स्थान की जगह तार्किक किताबें और art से जुड़ी चीजों को रखा जाए जैसे राहुल सांकृत्यायन की किताबें, Evolution Of God's by Ajay Kansal; Atheist manifesto by Joseph Lewis, देव पुरुष हार गए, पदार्थवाद क्या है ईश्वरवादी सोच इंसानी मस्तिष्क के लिए हानिकारक क्यों है।

३. टीवी देखते समय आपको बहुत सतर्क रहना चाहिए बच्चों को आध्यात्मिक टीवी चौनलों से दूर रखें। तब तक जब तक बच्चे तर्क से इन चौनलों पर आने वाली खोखली भविष्यवाणियों चमत्कारों से लैस कहानियों का खंडन ना कर सकें जिनमें बच्चों को यह समझाने का यत्न किया जाता है कि आपकी किस्मत के फैसले उस सर्व व्यापक परमात्मा के हाथों में है जिसने इस सृष्टि की रचना की है समय से पहले और समय से ज्यादा किसी को भी नहीं मिलता जो मिलता है वह आपको बिना यत्न के ही मिल जाएगा। यहां बच्चे को शुभ अशुभ भाग्य के सही मायने समझाने की जरूरत है।

L = Labor
U= Under
C=Correct
K= Knowledge

४. न्यूज चैनलों के प्रति बहुत सावधान रहें क्योंकि न्यूज चौनल्स पूंजीवाद और पुजारी वर्ग का एक बहुत ही घातक हथियार है । टीवी आजकल हमारे बेडरूम में पहुंच गया है जिस कारण से यह हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को नकारात्मक तरीके से बहुत ज्यादा प्रभावित करता है। सारा दिन एक खबर चला चला कर यह पूंजीवाद का एजेंडा आगे बढ़ाता है, समाज की मानसिकता को और खुदरा करता है जिससे बच्चों में हिंसा भरी जाए और वह हिंदू मुस्लिम फसाद की तरफ प्रेरित हो।

इन चौनल्स में दिखाई जाने वाली खबरों की असली मालूमात के लिए एनडीटीवी पर आने वाला रवीश कुमार का ९.०० बजे वाला प्राइम टाइम जरूर देखें, HW News पर विनोद दुआ, अभिसार, Sujit Nair को जरूर सुने, प्रो. राम पुनियानी, प्रो. अपूर्वानंद, डा. गौहर रज़ा। हम भी भारत, कन्हैया कुमार, इनको भी जरूर सुनें । वायरल हुई वीडियोस और फोटोस के सच को वेरीफाई करके आप न्यूज के पीछे के सच को जान सकते हैं।

गौतम बुद्ध की एक बात जो मेरे जहन में हमेशा घूमती है 'अप्प दीपो भव' अपने दिए स्वयं बनो यहां बुध यह कहते हैं कि मेरे दिए हुए वचनों पर भी विश्वास मत करो, पहले उसे ज्ञान विज्ञान और तर्क की कसौटी पर अच्छे से परख लो अगर सही लगे तो उन्हें अपने जीवन में अपनाएं यह बुध कहते हैं ।

तो हमारे देश का प्रधानमंत्री यह कैसे मान लें कि उसके कहे झूठ को हम सच मान लें की शिव ने गणेश का सर काट कर हाथी का सिर लगा दिया तो फिर वह सर क्यों नहीं लगाया जो काटा था।

5- Social media और WhatsApp से सतर्क रहें बच्चों का अकाउंट सोशल मीडिया पर मेरी मानो तो 18 साल बाद ही खोलें और WhatApp को सिर्फ और सिर्फ निजी इस्तेमाल के लिए ही रखें ।

बच्चों के बौद्धिक विकास को उसकी कमाई के साथ मत जोड़ें बल्कि उसके दिमाग को उस ऊंचाई तक विकसित करें जिससे वह अपनी जिंदगी के फैसलों को वैज्ञानिक सोच के आधार पर लेने के काबिल बनें किसी की सुनी सुनाई बात पर अंधा विश्वास ना करे। परमात्मा के नाम पर फैलाए झूठ को एकदम रद्द करें और तर्क के आधार पर ईश्वर वादी सोच का सामना करते हुए खुद को धर्म और जाति के आधार पर पहचान से दूर रखें। इस बात को और गहरा समझने के लिए भगत सिंह का लिखा लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं' जरूर पढ़ें और समाज को एक नया दृष्टिकोण दें।

■■■

धर्म एक बीमार कल्चर की स्थापना करता है

धर्म के फायदे के लिये भगवान के मंदिर में सामूहिक बलात्कार और हत्या, फियादीन हमलों के लिये मस्जिदों का इस्तेमाल, मध्यकाल में चर्च विरुद्ध बोलने वालों को धर्माधिकरण द्वारा जिंदा जलाये जाने के उदाहरण एक विचारशील मस्तिष्क में प्रश्नचिह्न खड़ा कर देतें है कि वास्तव में भगवान होता भी है या एक लाभ की गारंटी वाला धँधा है।

दुनिया प्राप्ति के नियमों से चलती है इसका कोई नियोक्ता नहीं है। भगत सिंह 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' के माध्यम से स्पष्ट किया है कि धर्म एक शोषण का तरीका है उसी प्रकार पाश्चात्य लेखक बर्ट्रेंड रशैल ने 1927 में एक किताब "Why am I not christian" के माध्यम से सैंकड़ों तर्क ईसाई धर्म के ऊपर उछाले लेकिन किसी भी तर्क का कोई काट पेश नहीं कर पाया। ऐसे ही प्रश्नवाचक मुस्लिम धर्म पर इब्न वारकैक तथा सलमान रुश्दी उछालते रहे हैं। उनका कोई जबाब नही है। हां, किताबें प्रतिबंधित कर दी जाती हैं लेखकों के विरुद्ध फतवे जारी कर दिये जाते है।

धर्म दुनियाँ का सबसे पहला पूंजीवादी संगठन है। धर्म एक ऐसी व्यवस्था है जो लोगों से सिर्फ लेती ही लेती है। परम्परा की सर्वाधिक बोझिल विरासत धर्म ने दुनियाँ को अंधविश्वास, शोषण, कुंद मानसिकता, आपसी वैमनस्य, रक्तरंजित लड़ाइयों तथा मानवता की हत्या के अलावा कुछ नही दिया। धर्म के द्वारा प्रगतिसूचक देन का एक भी सबूत-प्रमाण आज तक कोई पेश नहीं कर पाया है! जिस दिन दुनिया से लोग भगवान नाम की भयावह परिकल्पना को विदाई दे देंगे, उसके नाम पर अपनी कुत्सित जुगुप्साओं को संतुष्ट करने वाले कितने ही शैतान दुनियां से विदा हो जाएंगे। दुनियां वास्तव में शैतान से मुक्ति पा लेगी। बचेगा सिर्फ और सिर्फ मानवता का, भाईचारे का साम्राज्य मात्र।

पिछले दिनों महान अजूबा वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग का देहांत हुआ तो दुनियाँ में फिर से एक बहस नास्तिकता पर छिड़ी है। हिन्दू धर्म के धर्मगुरू कह रहे है कि ईसाई धर्म आम लोगों के सवालों के संतोषजनक जवाब नहीं दे पाता, इसलिए पश्चिम के लोग नास्तिकता की तरफ ज्यादा जा रहे है। वास्तव में उन्हें अपने बीमार धार्मिक कल्चर का भान नही है, या फिर उन्हें अपने धर्म और भगवान के लेन देन वाले स्वरूप से ज्यादा ही आत्म गौरव है।

स्टीफन हॉकिंग की पत्नी ईसाई धर्म की कट्टर समर्थक थी और वह घर मे हमेशा परम-पिता परमेश्वर की ऐसी बचकानी बातें करती थी कि स्टीफन हॉकिंग हँसकर टाल देता था। स्टीफन हॉकिंग ने स्पष्ट कह दिया कि मैं नास्तिक हूँ। मैं ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानता। बल्कि उनका तो यहां तक कहना था कि विज्ञान एक दिन इस पृथ्वी से भगवान के बजूद को खत्म करने में सफल हो जाएगा। विज्ञान के प्रति उनकी यहीं श्रद्धा ही तो थी, जो एक लाईलाज बीमारी ग्रस्त मरणासन्न व्यक्ति द्वारा एक के बाद एक अविष्कारों की श्रृंखला को सम्भव बनाती चली गयी। एक हम है जो धार्मिक भीरुता के चलते कोई ढंग का ईजाद करने में सफल नहीं हो सके है। खैर बात हो रही थी हॉकिन्स दम्पति की, एक अंधभक्त आस्तिक व एक नास्तिक के बीच के इसी द्वंद्व भरे द्वेष ने उनका तलाक करवा दिया।

ये स्वीकार करने में कोई संकोच नही कि पश्चिम के लोगों के पास धर्म के विकल्प कम है। कुल मिलाकर इसाई व इस्लाम के अलावा विकल्प नहीं है। भारत मे विकल्पों की कोई कमी नहीं है। गांव के किसी खेत के देवता से लेकर अति प्राचीन 33 करोड़ देवता बैठे हैं! फिर भी आये दिन कही न कहीं एक नये देवता के अवतरण के समाचार मिल जाता है। बल्कि हम तो जीवन काल मे जघन्य अपराधों में लिप्त रहे अपराधियों को सफल देव

बनाकर पुजवा देने में माहिर लोग है। दिल्ली के लुटियन जॉन से लेकर झारखंड की सुदूर पहाड़ियां तक गिरिजाघर बने हुए है। कश्मीर की वादियों से लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की दहलीज तक मस्जिदें बनी हुई है। जिस सार्वजनिक जगह पर हमें कब्जा करना होता है, वहीं देवताओं को बैठा देते है।

हमारे यहां रोज एक नया बाबा, मौलवी, पादरी प्रकट हो जाता है। विकल्प ही विकल्प है और एक दूसरे के बीच सत्य की खोज के लिए घूमते-घूमते ही जिंदगी गुज़र जाएगी। हर धर्मगुरु यही कहता है। सर्वशक्तिमान को खोजने में जीवन खपाना पड़ता है। कोई तर्क कर लेता है तो अंत मे धौंस दिखाई जाती है कि आस्था पर सवाल खड़े नहीं किये जाते! हमारा मीडिया इन बातों के प्रचार में गहरी रुचि रखता है। अंध श्रद्धाग्रस्त मुल्क में ऐसे कार्यक्रमों की टीआरपी कभी नीची नहीं जाती। हर कोई प्रवाचक धन-सम्पति तथा भौतिक जगत् को मिथ्या तथा सच्ची आराधना में बाधा घोषित करता है। हां, ये बात अलग ऐसा उपदेश देने वाले बाबा स्वयं पैदल से उन्नति करके कब जाने लग्जरी कारों या हेलीकॉप्टर तक पहुंच बना लेते है। वास्तव में ये विकल्प नहीं लूट व शोषण की ऐसी दुकाने हैं। अगर एक से बच गए तो दूसरी फंसा लेगी।

पुष्कर से लेकर हरिद्वार के घाटों तक देखा जा सकता है कि पश्चिम के लोग बाबा बने घूम रहे हैं। यूरोप से वो विकल्प की तलाश में निकले थे और यहां आकर फंस लिए! चिलम के सूटे लगाते हुए भांग घोलकर पी रहे है और झूम रहे हैं। गहरी भीरू आस्तिकता वाले पश्चिमी लोगों के लिये हमारा देश हरा-भरा अभ्यारण्य है।

भारत मे तर्क करने लायक जनता जागरूक होगी तभी तो नास्तिकता गति पकड़ेगी! गरीब-अनपढ़-लाचार लोगों का जमावड़ा विज्ञान को समझने लायक होगा, तभी तो अज्ञानता रूपी खड़े किए ईश्वर व उसके नाम पर धर्म का धंधा कर रहे लोगों के विरुद्ध बगावत होगी।

आजादी के बाद से इस देश मे उदारी से विज्ञान आई व लोगों के जीवन मे बदलाव आने लगे तो इन कट्टर धर्मावलंबियों की दुकानें कमजोर होने लगी। ऐसे माहौल में राजनेताओं ने धर्मगुरुओं के साथ मिलकर दुबारा जनता को धर्म के भ्रम में धकेलने का काम शुरू किया। हमारे अनियंत्रित असभ्य स्वार्थी स्वभाव होब्स एटीट्यूड ने भ्रष्टाचार को एक कल्चर बनाने तथा स्वयं को राजनीतिक और धार्मिक नेतृत्व में सुरक्षित करने के लिये जमकर इसे स्थापित किया है। फायदा राजनेताओं तथा धर्माधिकारियों दोनों को होना था। राजनेताओं को सत्ता प्राप्त करनी थी व धर्मगुरुओं को अपनी दुकानें चमकानी थी। आज देखते हैं तो दुनियाँ भर में धर्म को सत्ता से अलग कर दिया गया है। ईसायत को वेटिकन में बैठा दिया गया लेकिन भारत जैसे देश मे गली-गली में दुकानें लगा दी गई। वर्तमान सत्ता का हाल तो यह हो गया है कि समझ मे ही नहीं आ रहा है कि धर्मगुरु सरकार चल रहे है या राजनेता? और धार्मिक दुकानें राजनेता चला रहे है या धर्म गुरु? दोनो का गठबंधन चोली दामन जैसा सुदृढ़ है। जब कहीं चुनाव होता है, राजनेताओं को मंदिर मस्जिद तथा गुरुद्वारे में दंडवत देखा जा सकता है।

तार्किकता का बेड़ा गर्क इससे ज्यादा क्या होगा, आजादी के प्रतीक लाल किले में हवन किया जा रहा है। नाम रखा गया है 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ' देश का सबसे सुरक्षित स्थान है लालकिला। लेकिन फिर भी राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा का दावा करने वाले यज्ञ कर्ताओं को जेड श्रेणी की सुरक्षा की जरूरत है। अजीब हालात बना दिया गए है! देश को बढाना तो अज्ञानता को दूर करते हुए विज्ञान की तरफ था लेकिन सत्ता धर्मगुरुओं के साथ मिलकर पूरे देश को बेवकूफ बनाकर धर्म के जंजाल में धकेलने का कुत्सित प्रयास कर रही है।

हमारी सरकार के पवित्र निर्देशक संगठन के प्रमुख कह रहे है कि हमारे स्वयंसेवक सदस्य 3 दिन में प्रशिक्षित होकर सीमा पर लड़ने जा सकते है! जबकि भारतीय सेना को ऐसा करने में छः महीने लगेंगे। सिर्फ कहने से काम नहीं चलता है। अगर यह प्रैक्टिकल हो जाये तो सत्य का परीक्षण हो जायेगा। राष्ट्र रक्षा यज्ञ तो सीमा पर करवाने की

हिम्मत नहीं हो रही और उसकी सुरक्षा भी सेना और पुलिस के जिम्मे है बल्कि संगठन के प्रमुख भी अपने स्वयं सेवकों बजाय स्वयं की सुरक्षा सेना पुलिस के भरोसे रखे हुए हैं, जबकि दम्भ भर रहे है स्वयं सेवकों का। मतलब खाओ पियो खसम का और गीत गाओ बीरे के।

सोमनाथ के मंदिर पर जब गजनवी की मार पड़ी थी, तब वहाँ हवन ही हो रहा था। सच्चाई तो यह है कि कोई भगवान वगैरह नहीं होता है और कर्मकांडों के माध्यम से एक कर्महीन प्रजाति मुफ्त में गरीबों की मेहनत की कमाई खा रही है। अपने स्वार्थ के लिये आडम्बर फैला रही है। कुछ लोग कहते है कि पढ़े लिखे भी बहुत ज्यादा धार्मिक क्यों हो रहे है। अरे भाई जब धर्म का व्यापार होगा व उनके नाम से दुकानें चलेंगी तो व्यापार पढ़े-लिखे लोग ही तो करेंगे। केदारनाथ त्रासदी में ज्यादातर पढ़े लिखे लोग ही मरे थे। उनका धर्म मे कोई विश्वास नहीं था और गर्मियों की छुट्टियों में हिमालय की वादियों में घूमने गए थे। अगर हकीकत में वो धार्मिक होते और उनका भगवान होता तो जब वो मर रहे थे तब भगवान कहाँ था? धर्मस्थलों पर भगदड़ मचती है और हर साल हजारों लोग मरते है तो उनका भगवान क्या कर रहा होता है।

जिस प्रकार आज पूंजीवाद विकृत रूप में कमजोरों को निगल रहा है, उसी प्रकार धर्म के नाम पर यह पूंजीवादी लूट सदियों से चली आ रही है लेकिन अब अज्ञानता का यह दौर ज्यादा चलेगा नहीं। आज लोग धर्म व भगवान पर इसलिए सवाल करने से नहीं बच रहे है कि उनकी इसमें गहरी आस्था है बल्कि इसलिए बच रहे कि कहीं कट्टरपंथी लोग उनका जीना दूभर न कर दें। गौरी लंकेश, कुलबर्गी जैसे लोगों की हत्याओं के द्वारा खौफ फैलाया जा रहा है कि अगर सत्य की बात की तो यह अंजाम भी हो सकता है। धार्मिक दुकानें चलाने वाले लोग असंवेदनशील, निर्दयी प्रवृति के होते है।

धर्म झूठे षड्यंत्र व क्रूरता के बल पर चलता है। यह अज्ञानता का उपयोग करने के लिए तरह-तरह के षड्यंत्र, श्लोक, हदीस, पैरा आदि रचकर आम लोगों को डराता है। भय पैदा करके जो दिमाग में भ्रम पैदा किया जाता है, उसी का नाम धर्म है। जो नहीं मानेगा, इनकी सत्ता को चुनौती देगा, इनके खिलाफ बगावत करेगा उसपर क्रूरतापूर्ण कब्जा किया जाएगा।

हर धर्म ग्रंथ में प्रेम व हिंसा की बातें आपको साथ मिलेगी। बाकी कहीं भी जहां प्रेम होता है वहां हिंसा नहीं होती। जहां हिंसा होती है वहां प्रेम नहीं मिलेगा। जो प्रेमपूर्ण धर्म के षड्यंत्र में फंस जाए वो ठीक नहीं तो हिंसा वाला अध्याय काम मे लेने लग जाते हैं। यही कारण है कि हर धर्म की उत्पत्ति में हिंसा को माकूल जगह दी गई है व इन धार्मिक ग्रंथों में भी लिखा गया है।

मानवता अच्छी नियत, इच्छाओं, सपनों, अरमानों से चलती है। मानवता कठिनता से सरलता की तरफ गमन करना चाहती है। धर्म का धंधा एक सीमा तक हो तो चल जाता है, लेकिन जब कर्मकांडों के माध्यम से जकड़न बढ़ती है, जब मानव जीवन घुटन महसूस करता है तो वो बगावत करने की सोचता है। अंदर ही अंदर भारतीय जनमानस घुट रहा है लेकिन बगावत करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले दिनों में सैंकड़ों-हजारों भगतसिंह खुलकर सामने आएंगे और मानवता को सरल जीवन की तरफ लेकर जाएंगे।

पीढियां खप गई जंगल-पहाड़ काटकर खेत बनाने में!
ठगों को दो पल लगे अपनी-अपनी दुकान सजाने में!!

लेखक का नाम अज्ञात है। -संपादक

अनमोल वचन

''अंधानुकरण करने वाले की अपनी कोई हस्ती नहीं होती।''

-बूसे

डार्विनवाद और अवतारवादी मायाजाल

डार्विनवाद ने इंसानियत को एक वैज्ञानिक समझ देने की दिशा में जो योगदान दिया है वह अद्वितीय है. डार्विनवाद ने जिस तरह से दर्शन और धर्म दर्शन को एक करारा धक्का दिया उससे यूरोप में एक नया युग शुरू हुआ. ऐसे अन्य वैज्ञानिक या विचारक बहुत ही कम हैं जिनकी तुलना डार्विन से की जा सके. न्यूटन, गेलिलियो, रदरफोर्ड या आइन्स्टीन जैसे वैज्ञानिकों ने जिस तरह से मनुष्यता को प्रभावित किया है उनकी तुलना में भी डार्विन का योगदान मौलिक रूप से भिन्न और गहरा है.

भौतिकी, गणित, खगोल, रसायन, चिकित्सा या भेषज इत्यादि में जो भी नयी प्रस्तावनाएँ आईं उनसे तकनीक को पैदा करने में बहुत मदद मिली है. लेकिन डार्विन की खोज ने जीव विज्ञान में जिस गुत्थी को सुलझाया है उससे दर्शन और धर्म दर्शन को बड़ा धक्का लगा है और उसी के परिणाम में एक नया वैचारिक युग शुरू हुआ है.

मार्क्स और एंगेल्स अपनी स्थापनाओं के लिए जिस वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और प्रमाण को खोज रहे थे वह डार्विन ने उन्हें उपलब्ध करा दी. मार्क्स और मार्क्सवादियों ने डार्विन की खोज को बहुत मूल्य दिया है और एक ठोस जीव वैज्ञानिक खोज को दर्शन और विश्वव्यवस्था बदलने के लिए इस्तेमाल किया है. यूरोप में डार्विनवाद ने बहुत कुछ बदल दिया और फिर यूरोप ने एशिया को बदला. इस तरह एशिया और शेष गैर यूरोपीय जगत ने उपनिवेशों के रूप में डार्विन को समझना शुरू किया. दक्षिण एशिया में भी डार्विन का विरोध हुआ और डिवाइन क्रियेशन की थ्योरी पर आधारित धर्मसत्ता और राजसत्ता ने इसका खूब विरोध किया.

लेकिन बहुत कम लोगों को जानकारी होगी कि सनातनी वेदान्तिक बाबाओं ने डार्विन को भी चबाकर निगलने की भरसक कोशिश की है.

न केवल बुद्ध या कबीर का यहाँ ब्राह्मणीकरण हुआ है बल्कि डार्विन के सिद्धांत को भी वेद वेदान्त और पुराणों में दिखाने का प्रयास हुआ है. आजादी के पहले भारत में नियो वेदान्त और नियो हिन्दुइज्म के जनक स्वामी विवेकानन्द और थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीय पुराणों में बतलाये गये अवतार और अवतारों के क्रम को डार्विन के क्रम विकास (एवोल्यूशन) की भारतीय खोज की तरह प्रचारित किया.

उन्होंने यह प्रचारित किया कि मत्स्यावतार से लेकर कल्कि अवतार तक की भारतीय पौराणिक मान्यता असल में डार्विन के क्रमविकास की तरह का प्राचीन भारतीय सिद्धांत है. इस बात को एक अन्य भारतीय नियो वेदान्तिक बाबा अरबिंदो घोष ने दोहराया. बाद में एक अन्य वेदांती ओशो रजनीश ने भी इसी बात को कई जगह दोहराया है और आजकल जग्गी वासुदेव भी इसी भाषा में अवतारवाद को डार्विनवाद से प्राचीन और एवोल्यूशन की भारतीय थ्योरी के रूप में दिखाने का प्रयास करते हैं.

इस प्रचार को गंभीरता से नहीं लिया गया है. यह आश्चर्यजनक बात है. पूरे यूरोप को हिलाकर रख देने वाले डार्विनवाद को भारतीय वेदान्तिक अवतारवाद ने जिस तरह से निगलने का प्रयास किया है वह को छोटी मोटी बात नहीं है. इस केस स्टडी को कभी उसके तार्किक विस्तार में सामने नहीं लाया गया.

अरबिंदो घोष ने फ्रेडरिक नीत्शे की "विल टू पावर", ''सुपरमे'' और डार्विन के ''एवोल्यूशन'' की खिचड़ी बनाकर जिस अतिमानस का सिद्धांत दिया वह हालाँकि ज्यादा टिक न सका लेकिन वेदान्तिक पाखण्ड किस तरह ज्ञान की राजनीति को राजनीति के ज्ञान से चलाता है इसकी बहुत अच्छी केस स्टडी तैयार कर दी. आज भी अरबिंदो घोष के अतिमानस को नजदीक से देखें तो उसमे नीत्शे और डार्विन साफ़ नजर आते हैं.

लेकिन विवेकानन्द, थियोसोफी, अरबिंदो, ओशो या जग्गी वासुदेव जिस तरह डार्विनवाद को अवतारवाद में प्रक्षेपित करते हैं उसका गहरा अर्थ समझा जाना चाहिए. गौतम बुद्ध और कबीर की क्रान्ति को जैसे उन्हें अवतारवाद और ब्राह्मणवाद में

शेष पृष्ठ 47 पर

स्वतंत्र चिंतन

प्रगति

-कर्नल इंगरसोल

मैं इस बात से अवगत हूं कि जो विषय मैंने चुना है, वह एक प्रकार से अनन्त है, और अपने व्यापक अर्थ में यह आदमी की बुद्धि की सीमा के सर्वथा बाहर है।

मैं इससे भी परिचित हूं कि सच्ची प्रगति क्या है, इस बारे मे अनेक सम्मतियां हैं। जिसे एक आदमी प्रगति समझता है, उसे ही दूसरा आदमी बर्बरता समझता है। अनेक लोग प्राचीन के लिए एक अद्‌भुत गौरव की भावना रखते हैं, केवल इसलिए कि वह प्राचीन हैं। उन्हें किसी ऐसी चीज में कोई सौंदर्य नहीं दिखाई देता, जिस पर युगों से पड़ी हुई धूल को प्रशंसा की सांस से उड़ाना न पड़े।

उनका कहना है कि प्राचीन ऋषि-मुनियों के सदृश कोई ऋषि-मुनि नहीं हुए, प्राचीन सरकारों जैसी सरकारें नहीं, व्याख्याता नहीं, कवि नहीं, राजनीतिज्ञ नहीं, जैसे वे थे, जो पिछले दो हजार वर्ष से धूलि बने पड़े हैं। दूसरे प्राचीनता से घृणा करते हैं और एकमात्र आधुनिकता के प्रशंसक हैं, एकमात्र इसलिए कि यह आधुनिकता है। उन्हें प्राचीन में इतनी अधिक बातें निंदनीय लगती हैं कि वे लोग लगभग सभी बातों की निंदा करते हैं। मुझे आशा है कि मुझ में इतनी कृतज्ञता की भावना अवश्य है कि मैं अतीत के महान और वीरचिंतकों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित कर सकूं और इतनी मनुष्यता भी है कि मैं किसी भी बात को केवल इसलिए स्वीकार न करूं, क्योंकि इसे उन्होंने कहा है और मुझमें इतना नैतिक साहस भी अवश्य है कि मैं किसी विचार की यदि ठीक समझता हूं तो उसे स्वीकार कर सकूं, भले ही वह कितना ही आधुनिक क्यों न हो। सत्य न तरुण होता है, न वृद्ध, न आधुनिक होता है, न प्राचीन, किन्तु हर स्थान और समय के लिए एक ही रहता है। सतत् प्रयत्न के सत्य की खोज होनी चाहिए, यह उत्सुकतापूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए, जीवन से भी अधिक प्यार किया जाना चाहिए और कभी परित्यक्त नहीं होना चाहिए।

श्रम को तमाम ऐश्वर्य का आधार मानने के विचार के अनुसार और प्रसन्नता को एक दूसरा विचार अथवा सत्य मानने के अनुसार यदि श्रमिक और संसार को प्रसन्न बनाना हो तो श्रमिक को एक स्वतंत्र आदमी होना चाहिए, विचार को स्वतंत्र होना चाहिए। इस विषय पर मैं जो कुछ कहना चाहता हूं, उसके सिलसिले में आपको प्राचीनतम काल की ओर नहीं ले जाना चाहता। मेरा इस समय का काम मध्य-युग से आरंभ करने से भी चल जाएगा। उन दिनों यूरोप में किसी प्रकार की स्वतंत्रता न थी, न दिमाग की और न शरीर की। श्रम से घृणा की जाती थी और श्रमिक को एक पशु से कुछ थोड़ा ही ऊपर समझा जाता था। संसार पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ था और आदमी की कल्पना के साथ-साथ अंधविश्वास उड़ा-उड़ा फिरता था। आकाश देवताओं और भूत-प्रेतों से भरा पड़ा था। हर चीज एक चमत्कार बनी हुई थी। एक आदमी को विशिष्ट व्यक्ति बनने के लिए या तो सैनिक बनना पड़ता था या साधु। वह प्राणियों की हत्या करने और झूठ बोलने में से एक बात चुन सकता था। तुम्हें याद रखना चाहिए कि उन दिनों जातियों का आपसी युद्ध अपने एक सिद्धि था, मात्र साधन नहीं। युद्ध और धार्मिक सिद्धांतों का ज्ञान रखना यही दो लोगों के काम थे। कोई भी आदमी उद्योग-परायण होकर यश का अर्जन तो क्या जीविका भी नहीं चला सकता था। सापेक्ष दृष्टि से उस समय कहीं कोई व्यापार न था। परस्पर एक-दूसरे से खरीदने-बेचने की बजाए जातियां जो कुछ चाहती थीं जोर-जबरदस्ती से छीन लेती थीं। हर ईसाई देश का यह मत था कि किसी मुसलमान की सम्पति छीन लेना, डाका डालना नहीं था और उचित कारण के रहते न रहते सम्पति के स्वामियों को मार डालना हत्या करना नहीं था। उन दिनों पढ़ना-लिखना बड़ी भयानक बात समझी जाती थी और यदि कोई सामान्य आदमी पढ़ना-लिखना सीख लेता, तो वह या तो नास्तिक समझा जाता था या जादू-टोना करने वाला।

उस समय के अज्ञान, निर्दयता, मिथ्या-विश्वास और दिमागी अंधेपन की कल्पना कर सकना हमारे लिए लगभग असंभव है। उन अंधकारपूर्ण तथा रक्त-रंजित वर्षों का इतिहास पढ़ते समय, मैं मानवता की शरारत और मूर्खता पर आश्चर्य करता हूं। इतना सब होने पर भी सारी समस्या का सार इतना ही है कि वे स्वतंत्रता से घृणा करते थे, वे मन और शरीर की मुक्ति से घृणा करते थे। उन्होंने कुछ लोगों के लिए मिथ्या-विश्वास की जंजीरें गढ़ीं, कुछ दूसरे लोगों के लिए लोहे की। उन पर तीन भयानक बातों का राज्य था-पादरी पुरोहित की ऊंची टोपी का, तलवार का और जंजीरों का। तुम तब तक उन दिनों के बारे में अपनी कोई ठीक सम्मति नहीं बना सकते, जब तक उस समय के प्रामाणिक ग्रंथों को न पढ़ो। उस समय जो कानून लागू थे, उनका ज्ञान प्राप्त न करो, उस समय के रीति-रिवाजों को न जानो और उन विचारों से परिचित न होओ, जो सामान्यतः ठीक समझे जाते थे। कोई यह विश्वास नहीं करता था कि ईमानदारी से हुई गलती निर्दोश मानी जा सकती है, किसी को धार्मिक-स्वतंत्रता जैसी किसी चीज का स्वप्न नहीं आता था। पंद्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में निम्नलिखित कानून जारी था-

जो कोई अपनी मातृभाषा में धर्म-ग्रंथ पढ़ेगा, उसकी जमीन, पशु, शरीर, जीवन तथा उसके वंशजों की सब सम्पति सदा के लिए जब्त कर ली जाएगी। ईश्वर के प्रति नास्तिक, राज्य के शत्रु और देश के भयानक द्रोही माने जाएंगे। कानून लागू होने के अगले ही दिन इस कानून का उल्लंघन करने के अपराध में उनतालीस आदमियों को फांसी दी गई और बाद में उनके शरीर जला दिए गए। यूरोप के सभी भागों में इसी प्रकार के अन्यायपूर्ण, रक्तरंजित और निर्दयतापूर्ण कानून प्रचलित थे। सोलहवीं शताब्दी में फ्रांस में एक आदमी को केवल इसलिए जीवित जला दिया गया, क्योंकि उसने मैले-कुचैले ईसाई साध ाुओं को घुटने टेक कर नमस्कार करने से इंकार किया था। मैं किसी ऐसे विषय में जिसके बारे में उभय पक्ष में से कोई कुछ नहीं जानता, मतभेद होने मात्र के कारण पुरुषों, स्त्रियों तथा छोटे बच्चों पर होने वाले हजारों भयानक अत्याचारों के उदाहरण आपको सुना सकता हूं। लेकिन, आप सभी धार्मिक अत्याचारों के इतिहास से परिचित हैं।

एक चीज सचमुच बड़े आश्चर्य की है। उस समय के वे सुधारक जो अपने समय के भयानक अत्याचारों के विरुद्ध लड़े, हाथ में शक्ति आते ही दूसरों पर असीम अत्याचार करने लग गए। लूथर, संसार का एक महान पुरुष था। वीर पुरुष। उसका कथन है-'हर किसी को स्वतंत्र रीति से पढ़ने का अधिकार है, ताकि आदमी अपने आपको जीवन और मृत्यु के लिए तैयार कर सके।' यह सब होने पर भी 'धार्मिक स्वतंत्रता' से भी भाव हम ग्रहण करते हैं, उसका उसके लिए कोई अर्थ न था।

जान नास्क तभी तक धार्मिक स्वतंत्रता का पक्षधर था, जब तक उसके साथ बहुमत नहीं था। जिनेवा, स्विटजरलैंड में प्रो. कैस्टलियों पहला पादरी था, जिसने ईमानदारी से की जाने वाली गलती को निर्दोश ठहराया और जिसने अपने-आपको व्यापक सहनशीलता का पक्षधर घोषित किया। इस आदमी का नाम अविस्मरणीय रहना चाहिए। उसके श्रेष्ठ विचारों के कारण उससे उसका आचार्यत्व छीन लिया गया। यद्यपि वह उन्हीं के मत का था, तो भी जान कालविन औ उसके अनुयायियों द्वारा वह जिनेवा से खदेड़ दिया गया। लगभग उसी समय फ्रांस में बोदिनस नाम का एक वकील हुआ है। उसने भी आर्थिक-स्वतंत्रता जैसी कुछ चीज का पक्ष लिया। जनता बुरी तरह उसके विरुद्ध थी। लोग हर समय इस बात के लिए तैयार थे कि आदमी में जिस घ णित नास्तिकता का प्रवेश हो गया है कि उसे अपने लिए स्वयं सोचने का अधिकार है, उसे आग और जंजीरों की सहायता से निकाल बाहर करें। तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि उन दिनों में यदि सामान्य साधनों द्वारा किसी आदमी का मत-परिवर्तन नहीं हो सकता था, तो वे उन नई-नई यंत्रणाओं को काम में लाते थे, जिनका धार्मिक कट्टरता आविष्कार कर सकती थी। वे लोगों के पैरों को लोहे के जूतों में कसकर पीस डालते थे। वे उन्हें धीमी-धीमी आग पर पकाते थे तथा वे उनके नाखून उखाड़कर उनमें सुइयां घोंप देते थे और यह सब किया जाता था, लोगों को सत्तारूढ़ करने के लिए। फ्रांस में इस यंत्रणा के विरुद्ध आवाज उठाने वाला पहला आदमी मौनतेन था। उसमें सामान्य-बुद्धि इतनी अधिक

मात्रा में थी कि वह अपने समय का एक अत्यंत असामान्य आदमी माना जाएगा। किंतु करोड़ों अज्ञ (अनाड़ी) लोगों की आवाज के सम्मुख एक आदमी की आवाज का क्या मूल्य था-अनन्त समुद्र में डूबते हुए एक आदमी की आवाज़ का।

यह असंभव है कि धार्मिक स्वतंत्रता के लिए लड़ी गई लंबी और निरर्थक प्रतीत होने वाली लड़ाई का इतिहास पढ़ा जाए और आदमी का मन भय तथा घृणा से भर जाए। लाखों पुरुष, स्त्रियों तथा बच्चे, कम से कम एक करोड़ आदमी धार्मिक कट्टरता की बलिवेदी पर चढ़ा दिए गए। इन आदमियों के दिल भी हमारी ही तरह आशा, प्रेम और महत्वाकांक्षी के केंद्र थे। वे फांसी के तख्तों पर झुला दिए गए। वे कारागारों में पड़े-पड़े समाप्त हो गए। वे अकाल और तलवार के घाट उतर गए। वे रेगिस्तानों में भटक-भटक कर मर गए। वे अंधेरी गुफाओं में पड़े-पड़े सड़ गए। आखिरकार एक दिन उनका रक्त बदले के लिए चिल्ला उठा।

जिस सिद्धांत के लिए उन्होंने यातनाएं सहीं, वह सिद्धांत उनकी दुर्बलता से बलवान हुआ, उनके रक्त और आग से उसका पोषण हुआ, उनकी पीड़ा से वह और भी अधिक पवित्र हो गया, उनकी वीरता से महान तथा उनकी मत्यु से अमर। अंत में उस सिद्धांत की विजय हुई और आज वह समस्त सभ्य संसार द्वारा स्वीकार कर लिया गया। इस सिद्धांत की कीमत बहुत देनी पड़ी है, किंतु यह सिद्धांत अपने में इतना मूल्यवान है कि इसकी हजार-गुणा कीमत भी दी जा सकती है। धर्म में स्वतंत्रता होनी चाहिए, क्योंकि बिना स्वतंत्रता के धर्म हो ही नहीं सकता। जहां तक मेरी बात है, मुझे इस बात का अभिमान है कि सर्वप्रथम अमेरिका की ही मुक्ति पर इस सिद्धांत की स्थापना हुई और कि महान देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका ही वह प्रथम देश है, जहां के विधान में सर्वप्रथम धार्मिक सहनशीलता को एक कानून का दर्जा दिया गया, इतना ही नहीं कि यह कानून बन गया है, किंतु इस कानून को एक सजग जनता का बल भी प्राप्त है। स्वतंत्रता के बिना धर्म नहीं, पूजा नहीं। आदमी की आंख को प्रकाश चाहिए, फेफड़ों को हवा चाहिए, हृदय को प्रेम चाहिए और आत्मा को स्वतंत्रता चाहिए।

जादू टोना :

दूसरी बात जिसकी ओर, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, यह है कि मध्य-युग में सभी लोग अज्ञ, स्वामी और सेवक, पादरी, वकील, डाक्टर तथा नीतिज्ञ जादू-टोने में विश्वास करते थे, नजर लगने में, प्रेतात्मा के किसी के शरीर में प्रवेश कर सकने में, जानवरों तथा कीड़े-मकौड़ों तक के शरीर में और सभी लोग यह भी विश्वास करते थे कि लोगों के शरीरों में से प्रेतात्माओं को निकालना उनका पवित्र कर्तव्य है। इसके अनुसार वे किसी भी ऐसे आदमी को जो मानवता के शत्रुओं के साथ संबंध बनाए हैं, फांसी पर लटकाने और जला डालने के लिए सदा तैयार रहते थे। यदि तुम उनकी भूमिका स्वीकार कर लो, तो फिर उनके कार्यो को भी ठीक स्वीकार करना ही पड़ेगा। यदि ये लोग सचमुच अपने पड़ौसियों को कष्ट पहुंचाने के लिए प्रेतात्माओं से संबंध जोड़ लेते हैं, तो वे यदि इन्हें नष्ट कर डालने का प्रयत्न करते हैं, तो ठीक ही करते हैं। यह जादू-टोने का अपराध यूरोप के प्रत्येक नगर की अदालतों में सिद्ध हुआ है। हजारों आदमियों ने जिन पर यह दोषारोपण किया था कि उनका प्रेतात्माओं से संबंध है, अपने अपराध को स्वीकार किया है।

यह बात हमारी समझ में आती है कि कोई आदमी किसी बात को ठीक समझता हो और उसके लिए जान देने को तैयार हो जाए। वह जानता है कि जो वास्तव में भले आदमी हैं, उनकी उससे सहानुभूति है। वह आशा करता है कि सुदूर भविष्य में उसका नाम कृतज्ञता से याद किया जाएगा। इससे भी बढ़कर उसे न्यायी परमात्मा के समर्थन का भरोसा है। लेकिन जो आदमी अपने आपको प्रेतात्माओं से संबंध रखने वाला स्वीकार करता है, वह तो जानता है कि उसकी स्मृति को भी लोग शाप देंगे और उसकी आत्मा अनन्त-विनाश को प्राप्त होगी। तो इतने आदमी अपना अपराध क्यों स्वीकार कर लेते थे ? विचित्र प्रतीत होने पर भी मेरा यह विश्वास है कि वे अपने-आपको अपराधी ही समझते थे। वे अपने आपको सर्वथा असहाय अवस्था में पाकर, अपना अपराध स्वीकार कर लेते थे और मर जाते थे। ये बातें इतनी पर्याप्त हैं कि आदमी सोचने लगता है कि कभी-कभी दुनिया सचमुच पागल हो

जाती है और यह पृथ्वी बिना मालिक का एक पागलखाना है। मैं फिर दोहराता हूं कि मेरा यह विश्वास है कि जो आदमी अपने को अपराधी स्वीकार करते थे, उनका विश्वास था कि वे वास्तव में अपराधी हैं। पहली बात तो यह थी कि वे स्वयं जादू-टोने और शैतान के लोगों के सिर आने में विश्वास रखते थे। जब उन पर यह दोषारोपण हो जाता हो, तो भय और घबराहट में वे एक प्रकार से पागल जैसे हो जाते। जब उन गरीबों पर ऐसा अपराध लगा दिया जाता, जिसे असिद्ध कर सकना संभव नहीं होता था और जब उनके मित्र तक उन्हें छोड़ उनसे घृणा करने लग जाते थे। जब वे और उनके मिथ्या-विश्वास तथा भय ही साथी रह जाते थे, तो बेचारे उस यंत्रणा से मुक्ति पाने की आशा से मृत्यु को वरदान समझने लगते थे। आज हम और आप उस यंत्रणा की कल्पना नहीं कर सकते। लोगों पर सर्वथा असंभव अपराध लगाए जाते थे। जेम्स प्रथम के समय में एक आदमी पर यह अपराध लगाया गया कि उसने एक राजकीय परिवार की नौका को डुबा देने के लिए समुद्र में तूफान उठा दिया। इंग्लैंड के एक बड़े विद्वान और प्रसिद्ध वकील सर मैथ्यू हेल के सामने एक स्त्री पर यह मुकद्दमा चलाया गया था कि वह छोटे बच्चों के मुंह से सुईयां उगलवाती है।

लोगों को ग्रीष्म ऋतु में पाला पैदा करने के लिए जला दिया जाता था, पैदावार पर ओले गिरा देने के लिए, गऊओं का दूध सुखा देने के लिए और शराब को अधिक खट्टी बना देने के लिए भी। किसी आदमी का जीवन सुरक्षित नहीं था। द्वेषी शत्रु को केवल इतना ही करना पड़ता था कि वह उस आदमी पर जादू-टोनों का इलजाम लगा दे और विचित्र लगने वाली दो-चार बातों को सिद्ध कर दे। बस, फिर उसके अप्रिय-भाजन की मृत्यु निश्चित थी। यहां जादू-टोने में विश्वास इतना गहरा था कि इसमें किसी प्रकार का संदेह प्रकट करना अपने-आप ही संदेह पैदा करना था और प्रायः मौत के घाट उतना। उस युग में यह माना जाता था कि भूत-प्रेत प ाुओं तक पर भी आ जाते हैं और यदि किसी प्रेत वाले पशु की हत्या कर दी जाए, तो उस प्रेत की भी हत्या हो जाती है। इसलिए वे पशुओं पर भी दोषारोपण करके, उनके विरुद्ध मुकद्दमें चलाकर उनकी हत्या करते थे।

कभी-कभी कानूनी अदालतों में पशुओं की गवाही तक ली जाती थी। यूरोप में यह कानून था कि यदि सूर्यास्त और और सूर्योदय के बीच में कोई किसी के मकान में आ घुसे और मकान-मालिक उस चोर को मार डाले, तो ऐसी हत्या करने वाला निर्दोष माना जाता था।

लेकिन यह भी सोचा गया कि कोई आदमी किसी को यों ही अपने घर बुला ले और उसकी हत्या करने के बाद कह दे कि यह चोरी करने आया था और उसको अपराधी माना जाए अथवा नहीं, इसका निराकरण करने के लिए यह नियम बनाया गया कि यदि कोई ऐसा आदमी जो अकेला रहता हो, किसी दूसरे की हत्या कर दे, तो जब तक उस घर में रहने वाला कोई कुत्ता या बिल्ली चोर के चोर होने की गवाही न दे दे, तब तक वह आदमी निर्दो ा न माना जाए। यह समझा जाता था कि यदि किसी निरपराध को दण्ड मिलता होगा, तो भगवान किसी न किसी तरह उस पशु से किसी न किसी चमत्कारी ढंग से गवाही दिलवा देंगे।

आग और पानी से भी मुकद्दमों का निर्णय होता था। लोगों से लाल तृप्त लोहे को हाथ लगाने के लिए कहा जाता था। यदि उनके हाथ जल जाते, तो वे अपराधी निश्ंिचत हो जाते। इसी प्रकार आदमियों के हाथ-पैर बांधकर उन्हें पानी में गिरा दिया जाता। यदि वे डूब जाते तो अपराधी ठहर जाते।

मैंने ये उदाहरण केवल यह दिखाने के लिए दिए हैं कि जिन देशों में अज्ञान की प्रधानता रहती है और जिन देशों में लोग तर्क का आधार छोड़ देते हैं, वहां क्या-क्या हुआ है और भविष्य में भी हो सकता है और यह भी दिखाने के लिए कि आदमी कितना ही बड़ा हो, वह अपने-आपको अपने युग के मिथ्या-विश्वास से बड़ी ही कठिनाइयों से युक्त रख सकता है।

लूथर का विश्वास था कि उसने न केवल शैतान को देखा है, बल्कि उसकी उससे सिद्धांत के विषय में चर्चा भी हुई है। एक बार उत्तेजना में उसने एक कलमदान ही राजा के सिर पर दे मारा। जहां लगकर वह कलमदान टूटा, उस दीवार पर अब भी

स्याही के निशान लगे हैं। मैं समझता हूं कि शैतान को तनिक चोट नहीं लगी होगी, क्योंकि ज्योंही उसे लूथर की नीयत का पता लगा होगा, वह चंपत हो गया होगा।

जर्मनी के बादशाह चार्लेस पांचवें के समय में स्टोएकर नाम के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और ज्योतिषी ने हिसाब लगाकर यह भविष्यवाणी कर दी कि संसार में एक दूसरी बड़ी भारी बाढ़ आने वाली है। न केवल साम्राज्य के किंतु समस्त यूरोप के मुख्य आदमी इस भविष्यवाणी में अक्षरशः विश्वास करते थे। चार्लेस पांचवें के सेनापति की इच्छा थी कि योग्य आदमियों द्वारा देशभर की माप करके यह पता लगाया जाए कि कौन-कौन से स्थल ऊंचे हैं, किंतु बाद में यह विचार छोड़ दिया गया, क्योंकि बाढ़ में यह ज्ञान न था कि पानी कितनी ऊंचाई तक आएगा।

हजारों आदमियों ने जो दरियाओं तथा समुद्र के किनारे पर नीची-जमीन में रहते थे, अपने घर-बार छोड़ दिए और ऊंची जगहों पर रहने के लिए निकले। अनन्त कष्ट हुआ। कुछ हालात में लोग बूढ़ों, रोगियों तथा निर्बलों को असहाय अवस्था में आने वाली बाढ़ की दया को समर्पित करके चले गए। उन्हें अपने को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने की इतनी अधिक चिंता थी।

फ्रांस में तूलूस नामक जगह पर लोगों ने सचमुच एक बड़ा भारी भंडार बनाया और उसे खाद्य-सामग्री से भर लिया। जिस दिन वह बाढ़ आने को थी, उस दिन के गुजर जाने के काफी बाद जाकर लोगों को उनके मानसिक-भय से मुक्ति मिली और वे अपने घरों पर लौटकर आए।

ऐसी बातों पर लोग कभी विश्वास न करते यदि उनका 'परा-प्राकृतिक' में विश्वास न होता। कोई बात यदि वह सामान्य होती, तो किसी को कहने के योग्य न समझी जाती थी। आदमी का दिमाग जंजीरों से जकड़ा हुआ था। उसे गुलामी ने विकृत कर दिया था। उस सबका परिणाम था कांपता हुआ कायर-आदमी। दिमाग से जो कुछ भी निकलता था, सब विकृत। हर विचार भयानक शक्ल लिए हुए था। लगभग हर कानून अन्यायपूर्ण था। उनका मजहब इतना ही था कि भयानक देव एक बड़े भयानक देव की पूजा करते थे। ठीक कहा जाए, तो विज्ञान उस युग में जी ही नहीं सकता था। उनके इतिहास सफेद झूठ के पुलंदे थे। सारा यूरोप भयानक बेहूदा बातों का घर बन गया था। जितने इतिहास थे, लगभग सभी पादरी-पुरोहितों द्वारा लिखे गए थे। वे जितने मिथ्या-विश्वासी थे, उतने ही बेईमान थे। जो कुछ भी उन्होंने किया वह सब पवित्र ठगी थी। उन्होंने ऐसे लिखा है मानों सब कुछ उनकी आंखों के सामने हो रहा है। उन्होंने हर महत्वपूर्ण देश का इतिहास लिख मारा। उन्होंने अतीत, वर्तमान तथा भविष्य-सबके बारे में सब कुछ लिखा। चौदहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध इतिहास पैरिस के मैथ्यू ने संसार को निम्नलिखित अमूल्य जानकारी दी है-

'यह सभी को ज्ञात है कि मुहम्मद पहले पोप से नीचे पद पर था। वह चाहता था कि वह 'पोप' बन जाए। जब वह अपने इस उद्देश्य में असफल रहा, तो नास्तिक बन गया।'

इन्हीं सज्जन का कहना है कि मुहम्मद साहब ने अत्यधिक शराब पी ली थी। वे नशे में चूर होकर सड़क के किनारे गिर पड़े। उस अवस्था में उन्हें एक सूअर ने मार डाला। यही कारण है कि मुहम्मद साहब के अनुयायी आज भी सुअर के मांस से इतनी घृणा करते हैं। उसी समय के एक दूसरे इतिहासज्ञ का कहना है कि अनुचित आदमी द्वारा चूम लिए जाने के कारण 'पोप' ने अपना एक हाथ काट डाला। वह हाथ अब भी पिछले पांच सौ वर्ष से रोम में सुरक्षित रखा हुआ है।

दूसरा विषय जिसकी ओर, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, मशीन-संबंधी प्रगति का है। पशु केवल प्रकृति-प्रदत्त हथियारों को ही काम में लाते हैं-चोंच, पंजे तथा दांत। असभ्य आदमी लाठी और पत्थर का प्रयोग करते हैं। ज्यों-ज्यों आदमी प्रगति करता है, वह ऐसे औजार बनाने लगता है, जिनसे वह हथियार बना सके। वह उनकी रचना के लिए सबसे अच्छा सामान ढूंढ निकालता है। वह आगे चलकर अपनी सहायता के लिए किसी शक्ति का आविष्कार कर लेता है-गिरते हुए पानी के बोझ का, हवा की गति का। तब वह पानी को भाप का रूप देकर एक नई शक्ति उत्पन्न करता है। उस भाप से वह उन मशीनों को चलाता है? जो एक सोचने का काम छोड़कर शेष लगभग सभी कुछ कर सकती है। आप देखेंगे कि सबसे पहले

हथियारों के निर्माण में ही आदमी की सूझ-बूझ प्रकट हुई है। जीवन को लंबा करने अथवा उसे बनाए रखने के साधनों का आविष्कार होने से बहुत पहले संसार जीवन को नष्ट करने वाले आवि कारों से भर गया था। हत्या करने का विज्ञान सदा से उन्नति पर है-चिकित्सा-शास्त्र अब भी वैसा विज्ञान नहीं बन पाया है। हत्या करने वालों का सदा से सम्मान होता रहा है। उपयोगी तो सदैव घ णित समझा गया है।

प्राचीन समय में खेती काम दासों को ही ज्ञात था। जो निचले दर्जे के लोग थे, जो अज्ञ थे और जो घृणा के पात्र थे, वे ही हल चलाते थे। काम करने का मतलब था अपना दर्जा घटना। कारीगर का दर्जा किसा से कुछ ही ऊंचा था, संक्षेप में कहना हो, तो श्रम करना अपमान की बात थी। निकम्मे पड़े रहना। कुलीनता का चिन्ह था। खेती जब ढंग से न होती थी, तो पैदावार भी ऐसी ही होती थी। कुछ ही प्रकार के धान्य उपजाए जाते थे। परिणाम यही होता था कि बार-बार अकाल पड़ता था और लोग कष्ट भुगतते थे। आज की तरह एक देश में दूसरे देश को धान्य नहीं भेजा जा सकता था। सड़कों की दुर्दशा थी। इसके अतिरिक्त लगभग हर देश ने हर दूसरे देश के साथ युद्ध छेड़ रखा था। कुछ ही वर्ष पहले तक यही अवस्था रही है।

जरा आप देखें कि अठारहवीं सदी के आरंभ में इंग्लैंड की क्या अवस्था थी। उस समय पूरे यूरोप-भर में लंडन की ही जनसंख्या सबसे अधिक थी, तो भी वह गंदा था, बेढंगा बना था, उसमें किसी प्रकार की सफाई की व्यवस्था न थी। प्रतिवर्ष 23 आदमियों में से एक आदमी मर जाता था। अब उससे कहीं अधिक धनी आबादी वाले नगरों में भी हर चालीस आदमियों में से एक आदमी मरता है। देश का अधिकांश भाग उजाड़ और दलदल था। लंडन के पास ही लगभग 25 मील का एक टुकड़ा था, जो एक प्रकार का जंगल ही था। उस सारे टुकड़े में केवल तीन घर थे। वर्षा ऋतु में सड़कों पर से गुजर सकना एक प्रकार से असंभव था। कीचड़ से भरी हुई गलियों में बैल-गाड़ियां खींचते थे। बड़े-बड़े नगरों के बीच के रास्ते भी सुविदित न थे। सामान ढोने के मुख्य साधन घोड़े ही थे। कभी-कभी लोग भी अपने-आपको सामान क बीच में छिपाकर यात्रा कर लेते थे। ढुलाई प्रति टन प्रति मील 30 सैंट थी। इसके बाद उड़न-गाड़ियां आरंभ हुई। वे प्रतिदिन तीस से पचास मील तक जा सकती थीं। डाक का थैला घोड़े की पीठ पर 5 मील प्रति घंटे की गति से जाता था।

जिस समय पार्लियामैंट ने यह निर्णय किया कि राजकीय संग्रहालय की वे तमाम तस्वीरें जिनमें ईसा-मसीह अथवा कुमारी मरियम के चित्र हों, जला दी जाएं, उसके कुछ वर्ष पहले ग्रीक-मूर्तियां शिल्पियों को दी गई थी कि वे उन्हें छील-छील कर ठीक कर दें। लैविस मुगलेटन का कहना था कि वह सबसे बड़ा और अंतिम पैगम्बर है। वह जिसे चाहे उसे बचा सकता है और जिसे चाहे उसका नाश कर सकता है। उसने यह भी पता लगाया था कि परमात्मा केवल छह फुट ऊंचा है और सूर्य यहां से केवल चार मील दूर। चौंतीस जिले ऐसे थे, जिनमें से किसी एक में भी कोई छापाखाना न था। सामाजिक सदाचार अत्यंत बुरी अवस्था में था। उस्ताद शागिर्द को पीटता था। अध्यापक विद्यार्थी को और पति पत्नी को। मुझे यह स्वीकार करने में लज्जा आती है कि अब भी हमारे स्कूलों में से बेंत की सजा देने का रिवाज उठा नहीं है। यह असभ्यता का सूचक है और एक क्षण के लिए भी सहन नहीं होना चाहिए। यह अत्याचार है, नीचता है, घृणित है। जो अध्यापक बेंत से पीटता है, उसकी अपेक्षा जो माता-पिता अपने बच्चों को पिटने देते हैं, वे कम दोषी नहीं हैं। उन दिनों जितने भी सार्वजनिक दण्ड दिए जाते थे, वे सब बर्बरता के द्योतक थे। पुरुषों और स्त्रियों के हाथ-पांव बांध कर चौखटे से बांध दिया जाता था और तब उन पर ईंटों के टुकड़े, सड़े हुए अण्डे तथा मरी हुई बिल्लियां फेंकते थे।

देश में लोगों के घर फूस की झोपड़ियां-मात्र थे। यदि किसी आदमी को सप्ताह में एक दिन ताजा मांस खाने को मिल जाता था, तो वह धनी आदमी समझा जाता था। छह-छह वर्ष की आयु के बच्चों को श्रम करना पड़ता था। बाजारों में लैंप नहीं थे, किंतु डाकुओं और चोरों की कमी न थी, लोगों का नैतिक जीवन, जैसा प्रायः होता है, वैसा ही था, जैसी उनकी बाह्य परिस्थिति। कहा जाता है कि पादरियों ने लोगों को सदाचारी बनाने के लिए जो कुछ वे कर सकते थे, किया। वे अधिक नहीं कर सके। आदमी को भूख लगी तो तुम उसके मत में परिवर्तन नहीं

कर सकते। अच्छे कपड़े मिलेंगे तो वह अच्छा सिद्धांत भी ग्रहण कर लेगा। अधिक खाना मिलेगा तो वह अधिक श्रद्धावान भी हो जाएगा। इसके अतिरिक्त एक दूसरा कारण भी है। तो भी पादरी लोगों का स्तर सामान्य से कुछ नीचा था। महारानी एलिजाबैथ ने एक आज्ञा निकाली थी कि कोई पादरी किसी नौकर-लड़की से तब तक शादी करने की बात न सोचे, जब तक उसे उसके घर वालों की आज्ञा न हो।

इसी समय न केवल, फ्रांस, किंतु सारे यूरोप की हालत इंग्लैंड से भी खराब थी। दूसरी बात से अधिक वह कौन-सी बात है, जिसने इंग्लैंड की अवस्था बदल दी? उसके मशीन-निर्माताओं के आविष्कारों ने। पुराना सदाचारी बनाने का तरीका सदा से असफल रहा है और असफल रहेगा। यदि तुम किसी के सदाचार के स्तर को ऊंचा उठाना चाहते हो तो उसकी बाह्य परिस्थिति को अच्छा बनाओ। अठारहवीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड के मशीन निर्माताओं ने तरह-तरह की मशीनों का आविष्कार किया और इंग्लैंड को इस योग्य बना दिया कि वह संसार भर के बाजारों पर एकाधिकार कर सके। शीघ्र ही उसकी मशीन तीस करोड़ आदमियों की शक्ति का मुकाबला करने लगी। कुछ ही वर्षों में इंग्लैंड की जनसंख्या दुगनी हो गई और संपति चौगुनी। इंग्लैंड संसार के देशों में प्रथम हो गया। इसका सारा श्रेय उसके आविष्कारों को था, व्यापारियों को था तथा मशीन-निर्माताओं को था। इंग्लैंड ने सारे संसार के लिए कातना आरंभ किया। सभी लोग रुई के कपड़े पहनने लगे। लोगों के बदन पर सफेद कमीजें दिखाई देने लगी। भारत वर्ष के जो बहुत होशियार कातने वाले होते थे, वे आध सेर रुई के सौ मील लंबा तार खींच सकते थे। इंग्लैंड की मशीनों से उतनी ही रुई से एक हजार मील लंबा तार खींच कर दिखा दिया।

थोड़े ही समय में स्टीफैंसन ने रेल का आविष्कार-रेल की सड़कें बनने लगीं। फोल्टन ने संसार को अगन-बोट दी और समुद्री-व्यापार हवाओं की पराधीनता से मुक्त हो गया। संयुक्त-राज्य में अभी ही इतनी सड़कें बन गई हैं कि उनसे सारे संसार को दो बार घेरा जा सकता है। आदमी की पहुंच बहुत दूर तक हो गई है। वह हर देश में पहुंचता है और जो चाहता है ले लेता है। अब कहीं कोई अकाल नहीं पड़ सकता। यदि एक देश में अनाज न हो, तो नौकाओं तथा मोटर-गाड़ियों से दूसरे देशों से लाया जा सकता है।

हम हर देश के जलवायु का मजा ले सकते हैं। इस समय अधिकांश लोग पुराने राजाओं से अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं। सुलेमान बादशाह के पास हजारों रानियां थी। किंतु गलीचे नहीं थे, बड़े-बड़े महल थे, किंतु उनमें गैस की रौशनी नहीं थी। हजारों स्त्रियां, किंतु घर में एक पिन नहीं, स्टोव नहीं, आलू नहीं। बिना आलु के रात्रि-भोजन। साफ कपड़े नहीं, बढ़िया संगीत नहीं। बर्फ का पानी नहीं, बर्फ पर चलने वाली गाड़ियां नहीं। उसके राज्य में अच्छी सड़कें नहीं थी कि उन पर ही गाड़ियां चल सकती। धर्म-कथा अपरिमित, किंतु तंबाकू नहीं, पुस्तकें नहीं, तस्वीरें नहीं। सारे फिलस्तीन में एक चित्र नहीं। न चाय न काफी। उसने कभी कोई मनोरंजन की जगह नहीं देखी, न कभी किसी थियेटर में गया और न सर्कस में।

अपनी सारी पण्डिताई के बावजूद वह बिलियर्ड खेलना तक नहीं जानता था। उसे स्त्रियों के अधिकारों अथवा अन्य पुरुषों के मताधिकार की कल्पना तक नहीं थी। वह अपने जीवन मे एक दिन के लिए भी स्कूल नहीं गया। आविष्कारक, मजदूर, विचारक, सर्जन तथा दार्शनिक-यही सब आधुनिक सभ्यता के भवन के खंभे हैं।

पाठकों के ध्यानार्थ

तर्कशील-पथ के लिए चंदा भेजना हुआ आसान :

तर्कशील पथ मैगजीन में पेज 2 पर Paytm Code अंकित है जिसे स्कैन करके मैगजीन का सालाना सहयोग या पत्रिका का बकाया चंदा आसानी से भेजा जा सकता है। अगर किसी साथी के पास पेटीएम नहीं है या चलाना नहीं आता, तो किसी भी अन्य जानकार के माध्यम से भिजवाया जा सकता है। एडरैस वट्सअप कर सकते हैं, ताकि अमूल्य विचारों की पत्रिका आप तक पहुंचती रहे। ***-गुरमीत सिंह***

क्या है पैनिक अटैक?

गुप्ता जी, उम्र करीब 53 वर्ष, एक स्कूल टीचर हैं। जिंदगी के आम संघर्ष से वो भी जूझ रहे हैं। बेटा अभी बेरोजगार हैं और बेटी के रिश्ते की बात की बनती है, कभी बिगड़ जाती है। पिछले कुछ समय से गुप्ता जी इन सब स्थितियों के चलते एक मानसिक दबाव महसूस करने लगे हैं। एक दिन जैसे ही वो नाश्ता करने टेबल पर बैठे, एक अजीब-सी बेचैनी महसूस करने लगे। देखते ही देखते बेचैनी घबराहट में बदल गई। हाथ-पैर कांपने लगे, दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उनको लगा जैसे दम घुट रहा है और वो जल्दी से खुली हवा के लिए बाहर निकल गए हैं। एकाएक उनको अहसास होता है कि बस अब कुछ गलत होने वाला है और चिल्ला उठते हैं-'बस मैं अब गया,' 'मेरा दिल बाहर निकलने वाला है!' यह घटनाक्रम कम से कम 20-25 मिनट रहा और स्थिति धीरे-धीरे सामान्य हो गई, परंतु एक अजीब सा अनुभव उनके मन में हमेशा के लिए रह जाता है। हृदय-चिकित्सक द्वारा की गई जांचों में सब कुछ सामान्य पाया गया और उनको मनोचिकित्सक से परामर्श करने की सलाह दी गई। बातचीत पर पता चला कि इससे पहले भी गुप्ता जी घबराहट के ऐसे दौरों का सामना कर चुके थे। इनकी इस समस्या की 'पैनिक अटैक' नामक मानसिक तकलीफ पाई गई। सही ढंग से इलाज करने पर गुप्ता जी को दोबारा घबराहट के अटैक नहीं आए।

क्या है पैनिक अटैक :

यह एक चिंता रोग का ही रूप है जोकि आमतौर पर 20 वर्ष की उम्र के बाद स्त्री व पुरुषों दोनों में देखने को मिलता है। कई कारणों के अलावा मानसिक तनाव इस रोग का एक मुख्य कारण पाया गया है।

लक्षण :

यह रोग अचानक पैदा हुए जबरदस्त घबराहट के अटैक के रूप में होता है, जिसमें

घबराहट के दौरों की समस्या

-डॉ.दिव्य मंगला, मनोचिकित्सा

निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं :

✦ दिल का जोर-जोर से धड़कना, हाथ-पैर का कांपना सुन्न हो जाना।

✦ दम घुटने का अहसास होना। सांस लेने में तकलीफ का होना।

✦ ऐसा महसूस होना जैसे अभी दिल बाहर निकल जाएगा या दिल का दौरा पड़ रहा हो।

✦ मुंह में सूखापन व प्यास का लगना।

✦ अपने आसपास का वातावरण अजीब-सा लगना तथा अपने पर नियंत्रण खो देने जैसा महसूस करना।

✦ छाती व पेट में खिंचाव का महसूस होना।

✦ कई बार घबराहट के अटैक गहरी नींद से उठा भी सकते हैं।

यह अटैक आमतौर पर 5 मिनट से 30 मिनट तक रहता है। कुछ व्यक्तियों में घंटों भी रह सकता है। एक बार इसके होने पर व्यक्ति के मन में इसके दोबारा होने का डर हमेशा बना रहता है।

क्या करें :

✦ ऊपर दिए लक्षण अगर किसी व्यक्ति में हों तो उसे किसी योग्य मनोचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

✦ चिकित्सक को अपने सारे लक्षण व अन्य मानसिक परेशानियां खुलकर बताएं। बेहतर होगा अगर आप अपनी समस्याएं कहीं लिख लें, ताकि बताने में आसानी रहे।

✦ रोग के लिए दो किस्म के इलाज संभव हैं 1. दवाओं द्वारा 2. व्यावहारिक चिकित्सा द्वारा। उचित होगा दोनों को एक साथ इस्तेमाल किया जाए।

✦ रोग के विषय में ज्यादा से ज्यादा

जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करें ताकि रोग को समझने व इलाज में आसानी हो जाए

क्या न करें :

✦ चिकित्सक से परामर्श से पहले कोई भी गलत धारणा अपने मन में न बनाएं, जैसे 'दिल कमजोर हो गया, लगता है किसी ने कुछ करवा दिया है या खिला दिया है' आदि।

✦ भूल कर भी घबराहट को दूर करने के लिए अपने-आप दवाइयों का सेवन न करें।

अटैक पर काबू पाने हेतु शराब व नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें, क्योंकि इससे रोग गंभीर हो सकता है।

✦ कॉफी व तम्बाकू आदि का सेवन न करें।

✦ मनोचिकित्सक द्वारा बताई गई दवाओं को कभी भी अपनी मर्जी से अचानक बंद न करें। ऐसा करने पर लक्षण एकदम उभर सकते हैं।

इस रोग का इलाज कम से कम 8 से 12 महीने तक चलता है। कुछ में इलाज की पूरी अवधि के बाद भी यह रोग दोबारा हो सकता है। ऐसी स्थिति में इलाज ज्यादा समय तक भी चल सकता है। याद रहे : उचित जानकारी ही हमें रोगों से बचाए रखने तथा उनकी रोकथाम में सबसे ज्यादा मदद करती है। *(लेखक की पुस्तक 'हर दसवां भारतीय मन का रोगी' में से साभार)*

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

-दुष्यंत कुमार

यह भी जानें अपने शरीर के बारे

अद्‌भुत होता है अपना शरीर

1. हमारा शरीर हर सेकंड 1.5 करोड़ नई कोशिकायें बनाता हैं साथ ही हर दिन 200 अरब से ज्यादा रक्त कोशिकाओं का निर्माण करता है। हर वक्त शरीर में 2500 अरब रक्त कोशिकाएं मौजूद होती हैं। एक बूंद खून में 25 करोड़ कोशिकाए होती हैं।

2. इंसान के वजन का 10 फीसदी हिस्सा शरीर में मौजूद बैक्टीरिया की वजह से होता है। एक वर्ग इंच त्वचा में 3.2 करोड़ बैक्टीरिया होते हें।

3. इसान के दांत चट्टान की तरह मजबूत होते हैं। शरीर के दूसरे हिस्से अपनी मुरम्मत खुद कर लेते हैं परंतु दांत बीमार होने पर खुद को दुरुस्त नहीं कर सकते।

4. मुंह में हर दिन 1.7 लिटर लार बनती है। लार खाने को पचाने के साथ ही जीभ में मौजूद 10000 से ज्यादा स्वाद ग्रंथियों को नम बनाए रखती है।

5. झपकती पलकेंः

पलकें आंखों से पसीना बाहर निकालने और उनमें नमी बनाए रखने के लिए झपकती है।। महिलाएं पुरुषों की तुलना में दोगुनी बार पलकें झपकती हैं। एक मनुष्य एक दिन में 17000 बार पलकें झपकता है।

5 मनुष्य के श्ररीर का 50 प्रतिशत हिस्सा पानी होता है।

6. हमारा दिमाग हमारी कुछ आक्सीजन का 25 प्रशित इसतेमाल करता है।

7. हमारी शरीर में प्रत्येक मिनट त्वचा के हर सैकिंड 40000 कोशिकाएं मृत हो जाती हैं। इसका अर्थ यह है हर सैकिंड हमारे शरीर का कुछ हिस्सा मृत हो जाता है लेकिन साथ ही नई कोशिकाएं भी बनती रहती है। जो उमर बढ़ने के साथ साथ कम होती जाती है।

8. नींद का महत्वः

नींद के दौरा इंसान की ऊर्जा जलती है। दिमाग अहम सूचनाओं को स्टोर करता है। शरीर को आराम मिलता है और मुरम्मत का काम भी होता है। नींद के दौरान ही शारीरिक विकास के जिए जिम्मेदार हार्मोस निकलते हैं।

नदीम के बहाने

-वीरेंदर भाटिया

हरियाणा में हिसार जिला के बालसमन्द गांव में डेढ़ साल का एक बच्चा 70 फीट गहरे ट्यूबवेल बोर में गिर गया। मां बेर तोड़ रही थी कि बच्चा खेलता डोलता बोर की तरफ चला गया और गिर गया उसमें। ढूंढ़ा गया तो बोर मे से रोने की आवाज आई। मां के प्राण सूख गए। उसने शोर मचाया तो पास में काम करने वाले लोग आए।

सबने नबी को याद किया होगा। क्योंकि बच्चे का नाम नदीम है। कुछ हिन्दू भी आये होंगे। उन्होंने भी अपने-अपने इष्ट को याद किया होगा। कहा होगा आओ, बचाओ इस बच्चे को। हमने बहुत लड़ाईयां लड़ी हैं आपके लिए। हमने बहुत बनाये हैं धार्मिक स्थल आपके लिए। लोगों ने आनन-फानन में जिस चीज का इंतजाम किया होगा, वह धूप बत्ती, नमाज का सामान आदि होगा कि नबी को बुलाया जाए। कृष्ण को बुलाया जाए। बड़े किस्से समाहित हैं धर्मग्रंथों में कि ऐसे बचाया द्रोपदी को ऐसे चांद में क्रैक किया ।

लोगों ने लेकिन सबसे पहले रस्सी का इंतजाम किया, उन्होंने फोन निकाला सबसे पहले। प्रशसन को चेताया। सेना को बुलाया गया। बच्चों के डॉक्टर को बुलाया गया। बच्चे को ऑक्सीजन देने का इंतजाम किया गया। बच्चे को बिस्किट फ्रूटी भेजी गई। 48 घन्टे बच्चा उस बोरवेल मे फंसा रहा। 35 लीटर ऑक्सीजन उस 48 घन्टे में भीतर भेजी गई। सेना के हाथ मे जब बच्चा आया तो उसे स्पेशल जैकेट में कवर किया गया। उसका डॉक्टरी मुआयना किया गया। न्यूमोनिया था उसे। बायां फेफड़ा बुरी तरह प्रभावित था। जो एक उम्मीद जिन्दा थी वह फिर से बैठ गयी थी। बच्चा बेहोश था। तुरंत उसे अग्रोहा के हॉस्पिटल रवाना किया गया। जो एम्बुलेंस का ड्राइवर था उसने ट्रैफिक भरे मार्ग पर मात्र 35 मिनट में उसे अग्रोहा पहुंचा दिया। डॉक्टरों का पूरा पैनल लगा दिया गया और 48 घण्टे बाद बच्चे को खतरे से बाहर निकाल लिया गया।

मित्रों। हमे ऐसा स्टेट चाहिए। जो हमारे लिए एक्टिव हो और जो हमे इस त्वरित गति से प्रोटेक्ट करे कि हम अपनी आँखों से देख सकें कि जिन मंदिर-मस्जिदों के लिए हम लड़ते रहे, दिन-रात वे कभी बचाने नहीं आए जो बचाएगा और जो हमारा जीवन आसान करेगा वह विज्ञान और विज्ञान तथा समाजवाद की अवधारणा पर खड़ा स्टेट है।

लेकिन हम बहुत ही नाशुकरे हैं। हमने शुकराना अदा किया तो नबी का, अल्लाह का, ईश्वर का। हमे अपने नबी ईश्वर पर इतना ही भरोसा था तो कुरान खोलते, आयत पढ़ने लगते। गीता खोलते, श्लोक पढ़ने लगते। क्यों सबसे पहले मोबाइल निकाला जेब से। क्यों सबसे पहले ऑक्सीजन भेजी बोरवेल में। ऑक्सीजन तो अल्लाह ईश्वर ने हर जगह दी हुई है। वहां भी भेज ही देता। एक-एक पल एक चीज वह काम आयी जो विज्ञान ने सोची कि यह आपका जीवन आसान कर सकती है। यह जीवन के लिए उपयोगी हो सकती है।

हमने एक बार भी स्टेट का शुक्रिया नहीं किया, हमने एक बार भी विज्ञान का शुक्रिया नही किया जो हमारे जीवन को आसान कर रही है। हमें दरअसल स्टेट का मतलब, विज्ञान का महत्व नहीं सिखाया गया। हमे हर बात मे अल्लाह ईश्वर का शुकराना अदा करना और मंदिर मस्जिद के लिए लड़ना सिखाया गया है। ले जाते किसी मंदिर मस्जिद में बोरवेल से निकालने के बाद । हॉस्पिटल क्यों दौड़े ?

कभी बन पड़े तो शहर के सरकारी हस्पताल को भी देख आईये। वहां भी थोड़ी सेवा सफाई कर आईये। मंदिर जैसा चकाचक मस्जिद जैसा साफ क्यो नही होना चहिये आपका हस्पताल।

मंदिर के लिए लड़ने वाले, मस्जिद के लिए लड़ने वाले हस्पतालों स्कूलों के लिए जिस दिन लड़ेंगे उस दिन हम अपने आप को नए स्वस्थ और उन्नत मुल्क में पाएंगे।

हिन्दू मुस्लिम के आग्रह से ऊपर उठ कर मानवता और स्टेट काम करे ऐसे समाजवादी और विविधताओं के भारत की ही परिकल्पना पर खड़ा है मुल्क। नदीम के लिए स्टेट और लोगो का एकजुट होकर काम करना बताता है कि ज़हर घोलने वाले कुछ कर लें। बहुत गहरे में समरसता अभी शेष है।

गुरबख्श सिंह 'प्रीतलड़ी'

-आर.पी.गांधी

गुरबख्श सिंह 'प्रीतलड़ी' का जन्म जिला सियालकोट (पाकिस्तान) में 26 अप्रैल, 1885 में हुआ। पिता श्री बिशौरा सिंह, माता श्रीमती मालिनी कौर। जब गुरख्श सिंह 7 वर्ष के थे तो पिताजी की मृत्यु हो गई। दसवीं तक शिक्षा जिला सियालकोट में ही हुई उसके बाद एफ.सी.कॉलेज, लाहौर में प्रवेश लिया परुतु आर्थिक संकट के कारण पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। 14 रुपये मासिक पर क्लर्क की नौकरी करने लगे। पढ़ने की लगन के कारण 1913 में थॅमसन इंजीनियरिंग कॉलेज, रुड़की में दाखिला ल ेलिया। यहां से सिविल इंजीनियरंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1912 में श्रीमती जगजीत कौर से शादी हुई जिससे इनकी पांच संतानें हुईं। दो बेटे-नवतेज सिंह और दिलबर सिंह तथा तीन बेटियां-उमा, उर्मिला और प्रतिमा हुईं।

सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा लेने के बाद वे प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सेना में भर्ती हो गए। पढ़ने में इतनी लगन थी कि ईरानी मोर्चे पर जाते हुए इन्होंने गर्म कपड़े तो छोड़ दिए परंतु श्रीगुरुग्रंथ साहिब को लोहे के एक छोटे बॉक्स में डालकर ले गए। कारण ज्यादा वजन ले जाने पर पाबंदी थी। ईरान में युद्ध के दौरान इनका तम्बू सबसे सुंदर होता था। वहां ये 'सुंदर तम्बू वाले-गुरबख्श सिंह के नाम से प्रसिद्ध थे। पढ़ने के लिए तम्बू में ही जमीन खोदकर बेंच और मेज बना रखे थे। जब युद्ध की समाप्ति हुई तो सिख फौजियों ने जीत का जश्न मनाने के लिए गुरबख्श सिंह से गुरुग्रंथ साहिब ले आये। और गुरु ग्रंथ साहिब की शान के लिए पीढ़ी, तकिए, रूमाले सबका प्रबंध किया। गुरुग्रंथ वाहिस गुरबख्श सिंह के पास पहुंचा दिया गया। गुरबख्श सिंह के पास एक ईरानी लड़का नौकर था जो गुरुबख्श सिंह को अपने घर आने का कई बार निमन्त्रण दे चुका था। लड़के का पिता राजमिस्त्री का कार्य करता था और भवन निर्माण के दौरान ऊंचाई से गिरने पर उसकी दोनों टांगें बेकार हो गईं थीं। ईरान नौकर के घर में उसके छोटे भाई का जन्म हुआ था। जब गुरबख्श सिंह ईरानी लड़के के घर पहुंचा तो उन्होंने देखा कि लड़के की मां जमीन पर सोई है और छोटा बच्चा भी जमीन पर पड़ा है। गुरबख्श सिंह ने वापिस अपने तम्बू में आकर अपने बिस्तर में से दो चादरें निकालीं और गुरुग्रंथ साहिब के लिए बनाई गयी पीढ़ी, तकिए और रूमाले ईरानी लड़के को भेंट किए और गुरु गंथ साहिब को वापिस लोहे के बॉक्स में रख लिया। ईरानी लड़के ने पहले तो इनकार किया, लेकिन गुरबख्श सिंह के समझाने पर कि मैं नहीं बल्कि कुरान-पाक ही आपको ये दे रहा है, लड़के ने वह सामान स्वीकार किया। इस पर गुरुबख्श सिंह का कहना है कि मुझ इस बात का डर लगा रहता था कि अगर कोई श्रद्धालु सिख मेरे घर आ गया तो गुरुग्रंथ साहिब को इस प्रकार लोहे के बॉक्स में देख कर मुझे शर्मिंदा करेगा। परंतु किसी के पास भी फुर्सत न थी। कोई तो ईरानी औरतों के पीछे घूम रहा था और कोई ईरानी कालीन खरीदने में लगा था। केवल मेरे जैसा नास्तिक ही ऐसे समय में गुरुग्रंथ साहिब को पढ़ सकता था।

ईरान में ही गुरबख्श सिंह की एक ईसाई मिशनरी से मुलाकात हो गई थी जिसने गुरबख्श सिंह की आगे पढ़ने की ललक को देखते हुए अमेरिका जाकर पढ़ाई जारी करने में उसकी सहायता की। एक दिन गुरबख्श सिंह सिनेमा देखने के लिए गए तो वहां पर इनको हाल में पगड़ी के साथ प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिली। परंतु गुरबख्श को पगड़ी उतार कर फिल्म देखना पसंद न था, इसलिए बिना फिल्म देखे घर वापिस आ गए। अगले दिन गुरबख्श ने अखबार के एक कॉलम में एक लेख लिखा 'तुम्हारे दर पर एक परदेसी'। इस निबंध की बहुत सराहना हुई। कुछ अमेरिकन महिलाओं ने

इनको मिलकर प्रेरित किया कि तुम एक अच्छे लेखक साबित हो सकते हो। इसका परिणाम यह निकला कि गुरबख्श सिंह एक इंजनियर से एक लेखक बन गए।

भारत वापिस आकर 1933 में उन्होंने 'प्रीतलड़ी' नाम की पत्रिका आरम्भ की। इस प्रत्रिका ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। बुद्धिजीवी लोगों द्वारा पत्रिका और लेखक की सराहना हुई। अधिक संख्या में पत्रिका के पाठक बने। इनकी भाषा में मधुर रस था जिससे पाठक आनंद प्राप्त करता था। रूढ़िवादी सोच के ऊपर उठकरइन्होंने धर्म-पिरपेक्षता तथा आपसी भाईचारे के प्रति बहुत-कुछ लिखा। एक पुस्तक में एक स्थान पर कहते हैं, 'हमने 'लड़कर देख लिया, आओ गले मिलना सीख लो। जब कोई किसी को डण्डा मारता है तो डण्डा मारने वाले के दिल में एक डर समाया रहता है कि जिसको मैंने डण्डा मारा तो मौका मिलने पर वह भी मुझे बख्शेगा नहीं। अगर तुमने किसी के जख्मों पर मरहम-पट्टी की है तो तुम्हारे मन में एक संतुष्टि मिलेगी कि तुम्हें आवश्यकता पड़ने पर कोई मरहम-पट्टी करेगा।

इनका उपन्यानस 'बिन ब्याही माँ' एक शानदार रचना है जो आजकल के हालात पर भी खरी उतरती है। पुरुष-प्रधान समाज आज भी नारी को अपने भोग की वस्तु समझता है। उसको अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। अपने जमाने में यह रचना बहुत बिकी और पाठकों ने इसे बहुत पसंद किया। इन्होंन े27 निबंध-संग्रह लिखे जो सभी शानदार रचनाएं हैं। इनके अतिरिक्त नाटक, कहानी-संग्रह, उपन्यास और भी प्रकाशित हुई।। पत्रिकाओं में 'प्रीतलड़ी' 'बाल-संदेश' शामिल हैं। इनकी निबंध रचना 'नए शिवाले' स्कूलों में भी पढ़ाई जा रही हैं।

'नये शिवाले' के पहले लेख में उन्होंने लिखा है कि चारदीवारी में बन्द जो मूर्ति थी और मै उसकोक सब-कुछ ही समझ बैठा था। शिवाले के दरवाजे के छोट`से सुराख से जब रोशनी अंदर आई तो मुझे अुनभव हुआ कि यह सिवाय पत्थर के कुछ टुकड़ों के कुछ भी नहीं है। जब दरवाजा खोल बाहर निकला तो मैंने अनुभव किया कि जिसको मैं एक बंद कोठरी में ढूंढ रहा था, वह तो बहुत ही विशाल है, अनन्त है जिसकी कोई सीमा नहीं। ऐसे निबंधों की सहायता से 'प्रीतलड़ी' ने चारों ओर फैले अंधविश्वासों के गहरे अंधकार का`दूर कर प्रकाश फैलाने का काम किया।

1938 में लाहौर और अमृतसर की बीच 15 एकड़ जमीन खरीदकर प्रीत नगर की स्थापना की, जो 1947 तक बना रहा, जहां पर उन्होंने भारत से पाकिस्तान जाने वाले हजारों शरणार्थियों को सुरक्षा प्रदान की। उनको सुरक्षित लाहौर पहुंचाया गया। 1940 में प्रीत नगर स`'बाल-संदेश' नाम की पत्रिका शुरू की। प्रीत नगर समाजवादी व्यवस्था का एक शानदार उदाहरण था। एक बार जवाहर लाल नेहरू को भी प्रीतनगर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस नगर की व्यवस्था को देखकर पं. नेहरू बहुत प्रभावित हुए थे।

सीमा पर होने के कारण प्रीतनगर अशांत हो गया और 1947 के बाद उजड़ गया। गुरबख्श सिंह वहां से दिल्ली चले गए। वहां पर इनका दिल न लगा और 1960 में पुनः प्रीतनगर आकर इसकी पुनः स्थापना की। इसके पश्चात् वे अपनी मृत्यु के समय 1977 तक यहीं पर रहे। इनकी मृत्यु के बाद 'प्रीतलड़ी' का संचालन इनके बड़े बेटे नवतेज सिंह न ेकिया। नवतेज को जीभ का कैंसर होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। नवतेज सिंह की मृत्यु के बाद 'प्रीतलड़ी' का संचालन नवतेज के बेटों ने अपने हाथ में लिया। नवतेज का एक बेटा अमृतसर में इसलिए मार दिया गया क्योंकि उसके सिर पर केश न थे और दूसरा बेटा जो डॉक्टर था, दंगाइयों से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए मुजफ्फर नगर गया हुआ था, वहां मार दिया गया। उनके बाद 'प्रीतलड़ी' के संचालन गुरबख्श सिंह के पोते की पत्नी पूनम ने संभाला।

गुरबख्श सिंह के जीवन की इस घटना का वर्णन किए बिना यह निबंध अधुरा रह जाएगा। एक बार गुरबख्श से किसी ने पूछा 'दार जी, तुम रात को सज-संवरकर क्यों सोते हो? उनका उत्तर था, 'रात को मुझे कोई अपना प्रिय मिलने आ जाए तो मुझे बिखरा हुआ देखकर कहीं वापिस न लौट जाए।'

★★★

बाबाओं के काले कारनामें

चंडीगढ़-हिमाचल औार पंजाब तक फैल था बाबा का मकड़ जाल

उमेश भागर्व- अंबाला

आस्था की आड़ में बाबा संत गिरी महाराजा भगवा वस्त्र धारण कर लंबे से अंबाला जिले के गांव फतेह गढ़ में गोरखधंधा चलाता रहा और अंबाला स्वास्थ्य विभाग की टीम को इसकी भनक तक नहीं लगी क्योंकि बाबा अंबाला के लोगों को बहुत कम अटेंड करता था। शातिर महंत सुरेंद्र गिरी ज्यादातर अंबाला से बाहर के लोगों को ही बेटा पैदा होने या बच्चा होने की दवा देता था ताकि अंबाला में किसी को इसकी भनक न लगे और उसका धंधा फलता-फूलता रहे। बाबा ने विजिटिंग कार्ड तक छपवाए हुए थे। इन पर अपने नाम के साथ जिंदा समाधि बाबा सुरेंद्र गिरी महंत लिखवाया हुआ था। बाबा के पास से कुछ एलोपैथिक दवाएं भी बरामद हुई हैं। बताया जा रहा है कि जिस महिला ने कुरुक्षेत्र स्वास्थ्य विभाग की कर्मी को बाबा के काले कारनामों की सूचना दी, वह भी बाबा से बेटा पैदा होने की दवा लेकर गई थी लेकिन उसके बेटी पैदा हुई। इसीलिए उसने आगे सूचना देकर बाबा का भंडाफोड़ करवाया।

कई अन्य राज्यों से आते थे लोग

बेटे की चाह रखने वाले न केवल हरियाणा बल्कि पंजाब, हिमाचाल प्रदेश और चंडीगढ़ तक के लोग बाबा से बेटा होने या ऐसी महिलाएं जोकि गर्भ धारण नहीं कर पा रही थीं, वह दवाएं लेने आती थीं। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने रविवार को जब कार्रवाई को अंजाम दिया तो उस समय चंडीगढ़ नंबर की गाड़ी पटियाला से आई गाड़ी और हिमाचल प्रदेश से आई गाड़ी मौके पर ही खड़ी थी जोकि स्वास्थ्य विभाग की टीम को देखकर निकल लिए।

डर पैदा कर वसूलता थारकम

जो भी गर्भवती महिलाएं बेटे की इच्छा लेकर आतीं उन्हें बाबा फर्जी तरीके से पत्रा देखने का ड्रामा करते हुए कहता कि उसके गर्भ में तो इस समय भी बेटी ही है। ऐसे में महिलाएं और चिंतित हो जातीं। वह बाबा के पैर पकड़तीं और बेटा दिलाने की गुहार लगाती। इस पर बाबा मनमर्जी की रकम वसूलता और खाली कैप्सूल में खुद का तैयार चूर्ण नूमा पदार्थ जोकि पहले से ही डाला हुआ था उन्हें थमा देता।

महाकाल मंदिर में बालिका के साथ अश्लील हरकत, पुजारी निलंबित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

उज्जैन महाकाल मंदिर परिसर स्थित अनादिकल्पेश्वर मंदिर के पुजारी ने नाबालिग के साथ अश्लील हरकत कर दी। वीडियो वायरल होने के बाद मंदिर प्रबंध समिति ने पुजारी को निलंबित कर दिया है। वीडियो की जांच के लिए समिति ने महाकाल थाने में आवेदन भी दिया है।

अनादिकल्पेश्वर महादेव मंदिर में हेमंत दुबे को पुजारी बनाया गया था। दो दिन पहले बालिका के साथ अश्लील हरकत करते पुजारी दुबे के दो वीडियो वायरल हुए हैं। इसमें हेमंत मंदिर के पाट पर बैठा है और पास खड़ी बालिका से अश्लील हरकत करता नज़र आ रहा है। वीडियो दिख रही बालिका के बारे में बताया जा रहा है कि वह मंदिर में कार्यरत किसी महिला कर्मचारी की बेटी है। शिकायत मिलने पर मंदिर समिति ने हेमंत को तत्काल निलंबित कर मंदिर परिसर में घुसने पर रोक लगा दी। एक आवेदन महाकाल थाने में दिया है, जिसमें वायरल वीडियो की जांच करने को कहा गया है।

मंदिर में भी बेटियां सुरक्षित नहीं

इस घटना के बाद मंदिर के कर्मचारी ही न हीं यहां आने वाले भक्त आहत हैं। मंदिर कर्मचारी नाम नही छापने की शर्त पर कह रहे हैं कि इस घटना से भय व्याप्त है क्योंकि मंदिर बड़ा है और बच्चे कई बार अलग-अलग मंदिरों में दर्शन करने पहुंच जाते हैं। श्रद्धलु कई बार पूजा के दौरान बच्चों को खुला छोड़ देते हैं।

डेरा बाबा वडभाग सिंह के संचालक धोखधड़ी का मामला दर्ज

मरउजाला ब्यूरो

शाहाबादः गांव शरीफगढ़ में जीटी रोड पर बने डेरा बाबा वडभाग सिंह के मालिक बाबा राजेश के खिलाफ धोखाधड़ी कर लाखों रुपये नकद और लाखों रुपयये के गहने हड़पने का मामला सामने आया है। पुलिस ने माकला दर्ज करके आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। थाना शाहाबाद में पुलिस को दी शिकयत में आदर्श थाना कैथल निवासी राम चंद्र ने बताया कि वह काफी समय से डेरा में आता-जाता रहता है। एक दिन डेरा के संचालक राजेश और उसकी पत्नी ने कहा कि यदि उसके पास सोने के पुराने गहने हैं तो वह उसे अच्छे दामों में बिकवा कर उसे हाल मार्क के कहने दिला सकता है।

इस बात को लेकर वह अपनी पत्नी माता औरदोस्त के घर से करीब 30-40 लाख के सोने के गहने एकत्र करके राजेश को दे आए। इस पर राजेश ने उनसे जल्द गहने देने का वादा किया। शिकायतकर्ता रामचंद्र ने बताया कि उसके पास 3-4 दिन बाद बाबा राजेश का फोन आया कि जिस व्यक्ति को तुम्हारे गहने देने हैं, वह अभी बाहर है। अभी उन्हें कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी होगी। वहीं कुछ दिनों के बाद आरोपी ने उन्हें 24 लाख रुपये का और प्रबंध करने को कहा। रामचंद्र ने 24 लाख की राशि 26 मार्च 2018 को रिश्तेदारों से एकत्रित करके डेरे पर जाकर बाबा राजेश को दी, जहां पर आरोपी ने सोने की ईंट शिकायतकर्ता को दी। शिकायतकर्ता ने बताया कि जब वह ईंट कैथल स्थित सुनार को दखाई तो वह ईंट नकली निकली। इस बात को लेकर उसने आरोपी को कई बार फोन किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। इसके कुछ दिनों के बाद डेरा बाबा राजेश से मुलाकात 23 अप्रैल 2018 को हुई जहां पर आरोपी ने उन्हें नकदी और गहने जल्द देने की बात कही लेकिन इतने दिन बीतने के बाद भी आरोपी ने उसके पैसे और गहने नहीं लौटाए। वहीं आरोपी ने गहने एवं राशि मांगने पर शिकायतकर्ता और उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दे दी। पुलिस ने शिकयत के आधार पर मामला दर्ज करके आरोपी के खिलाफ जांच शुरू कर दी है। -अमर उजाला 24-4-2019

आग से महायज्ञ मंडप 'भस्म'

अमर उजाला ब्यूरो

कुरुक्षेत्र-मां मोक्ष दायिनी गंगाधाम ट्रस्ट गांगाधाम ट्रस्ट के सांस्कृतिक संगठन सनातन मिशन द्वारा थीम पार्क में चल रहे 108 कुंडीय शिव शक्ति महायज्ञशाला में वीरवार सुबह तड़के तीन बजे अचानक आग लग गई। जिससे फूस व बांस से बना यज्ञ क्षेत्र जलकर राख के ढेर में तबदील हो गया। हालांकि यज्ञशाला में सो रहे छह लोग बाल-बाल बच गए। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियों ने आधे घंटे में ही आग पर काबू पा लिया। हालांकि इस दौरान बांस, फूस से बनी यज्ञशाला राख के ढेर में तबदील हो गई। यहां लगे बिजली पंखे, साऊंड सिस्टम और अन्य सामान भी पूरी तरह से जलकर नष्ट हो गया। शुरूआती तौर पर आग लगने की वजह शार्ट सर्किट बताई जा रही है।

विश्व शांति के लिए थीम पार्क में छह अप्रैल से नौ दिवसीय शिवशक्ति महायज्ञ का शुभारंभ हुआ था। जबकि इसका समापन 14 अप्रैल को पूर्णाहूति के साथ होना था। इस बीच महायज्ञ के पांचवें दिन वीरवार सुबह सवा तीन बजे यज्ञशाला में अचानक आग लग गई। यज्ञशाला प्रभारी हरिओम महाराज ने यज्ञशाला रख रखाव की व्यवस्था से जुड़े छह लोग वहीं पर सो रहे थे। आग लगने की सूचना इन लोगों ने ही उनको दी। आनन-फानन में आयोजन समिति के पदाधिकारियों, फायर ब्रिगेड व पुलिस विभाग को फोन द्वारा सूचना दी गई । परिणामस्वरूप थोड़ी देर में ही फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियां वहां पहुंच गईं और एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। हालांकि इस दौरान यज्ञशाला पूरी तरह जलकर राख हो गई। हालांकि इसके बावजूद यज्ञशाला के सभी 108 यज्ञकुण्ड सुरक्षित हैं।

अंधविश्वास के चलते

नहीं काम आया ज्योतिष

ज्योतिषी ने संदिग्ध हालात में फंदा लगा दी जान

लुधियाना-2 अप्रैल(नरेश) :दूसरों का भविष्य बताने श्वाला ज्योतिषी खुद इतना परेशान हो गया कि उसने मौत को गले लगा लिया। उसने घर में ही फंदा लगा खुदकुशी कर ली। थान दरेसी ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल में भिजवा दिया। पुलिस ने मृतक अरुण कुमार उर्फ हैप्पी के पटियाला में रह रहे परिजनों को सूचना दे दी है। थाना दरेसी के जांच अधिकारी अमरीक सिंह ने बताया कि हैप्पी, पटियाला के एक प्राइवेट बैंक में काम करता था। डेढ़ साल पहले उसने बैंक की नौकरी छोड़ दी थी। इसके बाद वह ज्योतिषी का काम करने लगा था। वह कुछ दिन पटियाला में रहता था। 15 दिन से वह लुधियाना में बिंद्रा कालोनी स्थित अपने पैतृक घर में रह रहा था। मंगलवार को सुबह हैप्पी के ताया के परिवार ने उसका शव लटकते देख पुलिस को सूचित किया जिस पर थाना दरेसी पुलिस मौके पर पहुंची और शव कोकब्जे में लेकर सिविल अस्पताल पहुंचाया। पुलिस को मौका-ए-वारदात से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला जिससे आत्महत्या के सही कारणों बारे पता चल सके।

टी.वी चैनल पर भविष्य बताने वाला कार चोरी में अरेस्ट

प्रेसः नई दिल्ली

कई न्यूज़ और धार्मिक चैनलों में लोगों को भविष्य बताने वाला एक ज्योतिषी चोरी की कारें खरीदने के आरोप में दिल्ली पुलिस के हत्थे चढ़ा है। जानकारी के मुताबिक आरोपी पूर्व राष्ट्रपति के साथ तक तस्वीरें खिंचवाई हुई हैं। वृंदावन निवासी एमबीए डिग्रीधारी ज्योतिषी नीतिश शास्त्री चोरी की लग्जरी कारें खरीदता था। पुलिस ने नीतिष के साथी को भी गिरफ्तार किया है जो कारें चुराकर उसे बेचता था। पुलिस ने बीएमडब्ल्यू, ऑडी, टोयोटा इनोवा और की मंहगी कारें आरोपियो से बरामद की हैं।

नीतिश वृंदावन का रहने वाला है । ज्योतिषी का काम करता हैं वह कई न्यूज़ और धार्मिक चैनलों पर भाग्य बताने वाले शो में दिख चुका है। साथ प्रॉपर्टी के पेशे से भी जुड़ा हुआ है।

शमशान घाट पर पकड़े गये युवक पर तांत्रिक विद्या का आरोप

चोपटा(सिरसा) अमर उजाला ब्यूरो। गांव गुसाईयाना के शमशानघाट में कुछ लोगों ने दो युवकों को पकड़ कर उनकी धुनाई कर दी तथा बाद में उन्हें पुलिस को सौंप दिया। आरोप है कि दोनों युवक तांत्रिक विद्या के तहत अस्थियों से छेड़छाड़ कर रहे थे। कागदाना पुलिस चौकी ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू करदी है।

शिकायतकर्ता गुसाईयाना निवासी साहबराम सोनी ने बताया कि तीन अप्रैल को उसकी पत्नी संतोष की हार्टअटैक में मौत हो गई थी। उसका दाह संस्कार गांव के शमशानघाट में किया गया। उन्होंने बताया कि हिंदू धर्म की रीति अनुसार रस्म पगड़ी तक मृतक के परिजन शमशानघाट में चिता पर पानी डालते हैं। दो दिनों पूर्व मृतका के परिजनों को शक हुआ कि रात को राख एवं अस्थियों के साथ छेड़छाड़ की गई है। दो दिन तक ऐसा महसूस होने के बाद, मृतका के परिजनों ने रात को शमशानघाट में पहरा देना शुरू कर दिया। शिकायतकर्ता साहब राम सोनी ने आरोप लगाया कि सोमवार रात करीब 12 बज दो युवक शमशानघाट में पहुंचे और उनमें से एक युवक निर्वस्त्र हो गया। वहीं दूसरा उसके पास बैठ गया। निर्वस्त्र युवक महिला की अस्थियों पर बैठ गया और मंत्रोचारण करने लगा।

फलों को ब्राउन होने से बचाना

अधिकांश फलों में 'एंजाइम' नामक रसायन रहते हैं। कुछ एंज़ाइम हवा में मौजूद ऑक्सीजन से क्रिया करके भूरे हो जाते हैं। फलों के छिलके एंज़ाइम को ऑक्सीजन के संपर्क में आने नहीं देते। सेब या केला काटिए, थोड़ी देर में ही कटे हुए टुकड़ों का रंग भूरा होने लगेगा। आइए देखें, कैसे कुछ रसायन इन्हें भूरा होने से बचाते हैं।

ज़रूरी सामानः

सेब, केला तथा अन्य फल जिनकी जांच करनी है, विटामिन सी की गोलियां, नींबू, पेपर प्लेट, तीन पेपर कप और पानी।

इस तरह से करेंः

तीनों कप में आधा-आधा कप पानी भर लें। एक कप यूं ही रहने दें। दूसरे कप में नींबू का रस और तीसरे कप में विटामिन सी की गोलियां मिला दें। फलों के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर तीन प्लेटों में रख दें। एक प्लेट पर पानी, दूसरे पर नींबू पानी और तीसरे पर विटामि सी के घेल का छिड़काव कर दें।

आपको दस-दस मिनटों के अंतराल से फलों के टुकड़ों को ध्यान से देखना है। आप पाएंगे कि, सबसे पहले सादे पानी के छिड़काव वाले फल भूरे होने लगेंगे, जबकि नींबू पानी और विटामिन सी वाले फलों के टुकड़ों में भूरापन काफी देर बात आता है।

कुछ चर्चाः

नींबू के रस में विटामिन सी रहता है। विटामिन सी एंटी-ऑक्सीडेंट है, अतः यह भूरे होने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है।

गर्म करने पर विटामिन सी रसायनों में परिवर्तित हो जाता है। उपरोक्त प्रयोग सभी घोलों को गर्म करके दोहराकर देखें।

विटामिन 'सी' के लिए जांच

कई ताजे फलों और सब्ज़ियों (नींबू, संतरा, टमाटर, हरी सब्जियों, काली मिर्च) आदिमें 'विटामिन-सी' भरपूर मात्रा में रहता है जो हमारे शरीर में 'कोलेजेन' श्नामक प्रोटीन बनाने में मदद करता है। जब हमें घाव हो जाता है या हड्डी टूट जाती है, कोलेजन घाव-चोट को भ्रने में मदद करता हैं विटामिन सी का रासायनिक नाम -'एस्कॉर्बिक एसिड' है। आइए जांच करें कि किस पदार्थ में विटामिन सी अधिक मात्रा में रहता है और किसमे कम।

जरूरी सामानः

कई तरह के ज्यूस और तरल जिनकी जांच की जानी है। टिंचर आयोडीन (जहरीला रहता है), स्टॉच सोलूशन (चावल का मांड), कागज के कप और इंक ड्रॉपर।

इस तरह से करेंः

जिस नमने की जांच करना है उसे आधे कप में एक चम्मच स्टॉर्च सोलूशन घोल लें। अब ड्रॉपर से टिंचर आयोडीन की एक-एक बूंद इस घोल में डालकर चम्मच से चलाते जाएं और बूंदों की संख्या गिनते जाएं। जब घोल का रंग बदल जाए तो नोट कर लें कि टिंचर आयोडीन की कितनी बूंदें मिलानी पड़ीं।

यही प्रक्रिया सभी नमूनों के साथ दोहराए। रंग बदलने के लिए टिंचर आयोडीन की जितनी ज्यादा बूंदों की जरूरत पड़े, उस नमूने में में उतना ही ज्यादा विटामिन सी है।

कुछ चर्चाः

आयोडीन पहले विटामिन सी के साथ रासायनिक क्रिया करता है। इस क्रिया के दौरान रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब नमूने में मौजूद पूरे विटामिन सी समाप्त हो जाती है, उसके बाद ही आयोडीन स्टॉर्च के साथ क्रिया शुरू करता है। स्टॉर्च और आयोडीन की रासायनिक क्रिया में घोल का रंग गाढ़ा भूरा हो जाता है।

अधिवेशन 2019

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की राज्य कार्यकारिणी के लिये नये पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विवार्षिक अधिवेशन सीनियर सैकेंडरी स्कूल, करनाल में दिनांक 17-3-2019 को सम्पन्न हुआ। इसमें आगामी दो वर्षो 2019 व 2020 के लिए नई राज्य कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से चुनाव हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ तर्कशील साथी एवं लेखक बलदेव सिंह महरोक को चुनाव प्रक्रिया के लिए पर्यवेक्षक के रूप में चुना गया था, जिनकी देखरेख में चुनाव की समुची प्रक्रिया लोकतांत्रिक तरीके से सम्पन्न हुई। सर्वसम्मति से बनाए गए पैनल को हाऊस से पारित कर नए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया।

ंचुने गये नये पदाधिकारी निम्नलिखित हैंः-

फरियाद सिंह सनियाना	प्रधान
डॉ. राजेश पेगा	उप-प्रधान
गुरमीत सिंह	सचिव
सुखदेव सिंह	सह-सचिव
अनुपम सिंह	कैशियर
सुभाष तितरम	प्रचार सचिव
बलवंत सिंह	संपादक, तर्कशील पथ

राज्य कार्यकारिणी के सदस्यः

1. डॉ. विजय कुमार
2. डॉ. परमानंद
3. कृष्ण लाल राजौंद
4. सुरेश रण्वा
5. मा. राकेश कुमार
6. ईश्वर सफीदों
7. मा. राकेश कुमार

वालीवाल टूर्नामेंट में तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 4 अप्रैल 2019 को गांव सनियाणा जिला फतेहाबाद में पुलवामा के शहीदों को समर्पित एक वालीवाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट के आयोजन के दौरान एकत्र हुए जनसमूह के सामने एक तकशील कार्यक्रम भी रखा गया। इस कार्यक्रम में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रांतीय अध्यक्ष फरियाद सिंह सनियाणा एवं राम प्रसाद द्वारा जादू के विभिन्न आईटम दिखाए गये। जादू के ट्रिक दिखा करबाद में उनके रहस्यों के बारे में भी लोगों को समझाया गया। साथ ही अपनी बात रखते हुए फरियाद सनियाणा ने दुनिया भर के देवपुरुषों, साधु-सन्यासियों, तांत्रिकों-मांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों और संतो-बाबाओं को तर्कशील सोसायटी द्वारार करोड़ों रुपये जीत लेने के ईनाम की चुनौती की शर्तो के बारे में बताया। मंच से सभी आगंतुकों एवं आयोजकों ने एक ही स्वर में बताया कि देश की जनता युद्ध नहीं चाहती बल्कि लोग देश में शांति और विकास चाहते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतथि श्री कुलविन्द्र सिंह बल (पूर्व जिला परिषद सदस्य) थे। उन्होंने गांव के `युवा क्लब की ऐसे योजन करवाने की प्रशंसा की तथा देश की युवा पीढ़ी को अपना कर समजा के विकास में अपना योगदान देने की अपील की।

‘आओ मनुष्यों को बताएं कि बुराई एवं जुर्म न करें, परंतु इसलिए नहीं कि बुराई एवं जुर्म करने से उन्हें अगले जन्म में सज़ा मिलेगी, बल्कि इसलिए कि इससे उनके इस जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।’

-जीन मिस्लियर (1664-1729)

डेरा सिरसा प्रमुख के विरुद्ध संघर्ष करने वाले चार बहादुर योद्धाओं का सम्मान

तर्कशील सोसायटी भारत की ओर से तर्कशील भवन-बरनाला में दिनांक 17-4-2019 को एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में डेरा सिरसा प्रमुख के विरुद्ध संबंधित केसों में महत्त्वपूर्ण गवाह रहे अंशुल छत्रपति, राजा राम हंडियाया, प्राध्यापक बलवंत सिंह एवं एडवोकेट सुदेश कुमारी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में तर्कशील लहर के नेता मेघराज मित्र ने इस संघर्ष के लिए जूझने वाले उपरोक्त शख्शियतों के जीवन संघर्ष के बारे में से क्षेप में जानकारी दी। उन्होंने इस पूरे वृतांत के बारे में लिखी गई अपनी पुस्तक 'राम रहीम अर्श से फर्श तक' का ज़िक्र किया।

अध्यक्ष मण्डल में शामिल शहीद पत्रकार राम चन्द्र छत्रपति के बेटे अंशुल छत्रपति ने अपनी स्मृतियां साझा करते हुए बताया कि जब डेरा सिरसा प्रमुख द्वारा उसके पिता की हत्या करवा दी गई तो किस प्रकार से उन्हें राजनैतिक एवं सामाजिक लोगों के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की धमकियां दी गई परंतु हाई कोर्ट में लगाई गई गुहार के कारण तथा सी.बी.आई. के कई ईमानदार अधिकारियों के द्वारा की गई मेहनत के बदौलत हम डेरा प्रमुख को सलाखों के पीछे पहुंचाने में सफल हो सके। तर्कशील सोसायटी हरियाणा के पूव प्रधान राजा राम हंडियाया ने बताया कि बलात्कार की पीड़ित साध्वी द्वारा लिखा गया गुमनाम पत्र मिलने के पश्चात् किस प्रकार से डेरा श्रद्धालूओं द्वारा उस पर जान लेवा हमला किया गया। परंतु वे फिर अडोल रहे और सी.बी.आई के एक महत्त्वपूर्ण गवाह के रूप में ईमानदारी के साथ अदालत में अपना पक्ष रखा। तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक प्राध्यापक बलवंत सिंह ने अपने संबोधन में गुमनाम पत्र, उसके गांव के निवासी पूर्व डेरा सेवादार रणजीत सिंह की हत्या के पश्चात् एवं उससे पूर्व घटित महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताया कि किस तरह रणजीत सिंह के कातिलों के द्वारा अपने डेरा प्रमुख के निर्देशों पर उसकी हत्या करने के यत्न किये गए। जनसंघर्ष मंच की नेता एडवोट सुदेश कुमारी ने अपने संबोधन में सभी मामलों की सी.बी.आई जांच के लिए जनसंघर्ष मंच हरियाणा द्वारा चलाए गए हस्ताक्षर अभियान में जब वह और उनके सहयोग अपने इश्तिहार बांट रहे थे तो डेरा अनुयायियों द्वारा उन पर जानलेवा हमला किया गया जिससे कई कार्यकर्ताओं को चोटें भी आईं। परंतु हरियाण पुलिस द्वारा डेरा सिरसा के प्रभावधीन उल्टा उन्हीं पर ही मुकदमे दर्ज करके उन्हें हिरासत में ले लिया। लम्बी कानूनी लड़ाई के पश्चात् माननीय न्यायालय ने उन पर दर्ज सभी मुकदमें रद्द कर दिये।

अंत में तर्कशील नेता मेघ राज रल्ला द्वारा समारोह में पहुंचे सभी साथियों का धन्यवाद किया गया।

''अंगारों भरी राहों पर चलने से जो डरते हैं, वही कायर पुरूष कहलाते है।''

-लार्ड विलियम बैंटिक

''दुश्मन को कभी छोटा न समझें। एक छोटी-सी चिंगारी भी दहकता अंगारा बन जाती है।''

-नेपोलियन बोनापार्ट

महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति दुवारा प्रकाशित पत्रिका

‘अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्ता पत्र’

– रामस्वर्ण लक्खोवाली एवं गुरमीत अम्बाला

‘अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्ता पत्र देश भर में वैज्ञानिक चेतना के प्रचार प्रसार में लगी संस्थाओं के दुवारा प्रकाशित पत्रिकाओं की जानकारी देने के क्रम में इस बार प्रस्तुत है। महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति दुवारा प्रकाशित पत्रिका की जानकारी –‘पत्रिका का आरम्भ –भारत की राष्ट्रीय तर्कशील लहर में महत्वपूर्ण रोल निभाने वाली महाराष्ट्र अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति की मासिक पत्रिका, वार्ता पत्र, विगत 29 वर्षो से लोगों के मनो से अंधश्रद्धा, अज्ञानता, कर्मकांड, भ्रम, बुआबाजी का डर निकलने के लिए पाठकों के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। इसके पहले सम्पादक डॉ. प्रदीप पाटकर बने उस समय पत्रिका की प्रकाशन संख्या 2000 थी। वर्तमान में प्रो.पी.आरडे हैं जबकि मैनेजिंग एडिटर एंव प्रकाशक की जिम्मेवारी राहुल थोराट निभा रहे हैं।

लेखन एंव विषय-प्रत्येक महीने 11000 की संख्या में छपती इस प्रमुख मराठी पत्रिका में ज्ञान विज्ञान, मनोविज्ञान से सम्बंधित लेखन होता है। जबकि अंधश्रद्धा को दूर करने के लिए बाबाओं के पर्दाफाश की रिपोर्टिंग, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों की रिपोर्ट छापी जाती है। पत्रिका में सामाजिक व वैज्ञानिक विषयों को लेकर सम्बंधित लेखकों के विचार छापे जाते हैं। पाठकों के लिए अलग कॉलम छपते हैं। समिति दुवारा प्रकाशित किताबों के रिव्यू भी छापे जाते हैं। चेतना का यह कार्य समिति कार्यकर्ता पहल के आधार पर करते हैं। पाठकों तक का सफर-- सभी पत्रिकाएं सदस्यों के लिए ही होती हैं, इसके अलावा स्टालों पर भी पत्रिकाएं भेजी जाती हैं। राज्य के स्कूलों एंव पुस्तकालयों तक भी पत्रिका पहुंचाती है।

तहसील स्तर तक, गांवों में अनीस के कार्यकर्ता पत्रिका को पहुंचाते हैं। हर साल नवंबर दिसम्बर अंक की संख्या 13000 तक पहुंचती है। इसे दीवाली विशेष अंक के रूप में छापा जाता है। इस अंक में देश भर से वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले लेखकों को विशेष रूप से छापा जाता है। फासीवादी शक्तियों की मुश्किल--पत्रिका में धार्मिक कर्मकांडो एंव कथित धर्मगुरुओं के पर्दाफाश को छापा जाता है, जो पाठकों की पहली पसंद बनती है। प्रबन्धक सम्पादक राहुल थोराट बतलाते हैं कि वार्ता पत्र की लोकप्रियता के कारण साम्प्रदायिक शक्तियों की नज़र रहती है। पत्रिका की तीखी आलोचना के कारण साम्प्रदायिक शक्तियां कोर्टो में केस तक करती रहती हैं। मानहानि के 11 केसों में से 6 का फैसला समिति के हक में हुआ है। डॉक्टर नरेंद्र दाभोलकर की शहादत के बाद अनीस का कार्यक्षेत्र लगातार बढ़ने से पत्रिका की प्रसार संख्या लगातार बढ़ रही हैं। लोकप्रिय कार्यक्रम -पत्रिका में छपे अलग अलग विषयों से सम्बंधित लेखों को पुस्तक रूपे में छाप कर जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाता है। ‘वार्ता पत्र’ का मुख्य कार्यलय सतारा जिले के सांगली में है। संपादकी बोर्ड की मीटिंग, सम्पादन, प्रकाशन का कार्य यहीं पर होता है। पत्रिका के प्रबंधक, सम्पादक के रूप में राहुल थोराट पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में काम करते हैं, पत्रिका से जुड़े सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं तर्कशील परिवार वार्ता पत्र की उत्तरोतर प्रगति की इच्छा व्यक्त करता है।

अनमोल वचन

‘‘जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता हैं।’’

–शैली

केस रिपोर्ट

तानों से जीवन हुआ बे-मायने

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

राकेश और सुनीता की शादी अब से लगभग 10 वर्ष पूर्व हुई थी। सुनीता पूरे चाव और मलार के साथ अपने ससुराल में आई थी। सुनीता की अभिलाषा थी कि वह अपने मृदु व्यवहार के साथ अपने ससुराल के सभी सदस्यों का मन जीत लेगी। वह अपने ससुराल में आकर घर के सभी प्रकार के कार्य पूरी लगन व मेहनत के साथ करने लगी। सुनीता के माता-पिता की मृत्यु उसके बचपन के समय में ही हो गई थी। अतः वह अपनी सास और ससुर का अपनी माता और पिता के समान ही आदर व सम्मान करती थी।

धीरे-धीरे समय बीतता चला गया और शादीके लगभग एक वर्ष के पश्चात् सुनीता ने एक पुत्री कोजन्म दिया। हमारे समाज के अधिकतर लोग, पहली संतान चाहे बेटा हो अथवा बेटी, नये बच्चे के आगमन पर खुशियां ही मनाते हैं। सुनीता के घर में प्रथम संतान पुत्री होने पर परिवार के लोग अतयंत प्रसन्न थे। सुनीता भी अपनी बच्ची को गोद में लेकर खुशी से फूली नहीं समाती थी। सुनीता का पति राकेश एक टैक्सी ड्राईवर था। उनके परिवार का गुजारा रोकेश की टैक्सी के सहारे से ही चलता था। एक टैक्सी के अलावा राकेश के परिवार के पास अन्य कोई जमीन-जायदाद नहीं थी। घर में प्रथम संतान एक पुत्री के आने पर राकेश भी अत्यंत प्रसन्न था।

समय गुज़रता चला गया, पूरे परिवार का आपसी मेल-मिलाप व सहयोग पूरी तरह से कायम था। इसी दौरान एक-डेढ़ वर्ष के अंदर सुनीता की गोद फिर से हरी हो गई और घर में एक नये मेहमान के आने का समय नजदीक आता जा रहा था। समय आने पर सुनीता को एक अस्पताल में दाखिल करवाया गया। परिवार वालों की तमन्ना थी कि इस बार सुनीता की गोद में पुत्र का ही आगमन हो। परंतु सभी की आशाओं के विपरीत सुनीता ने इस बार भी एक पुत्री को जन्म दे दिया। फिर से पुत्री का जन्म देख कर सनीता की सास के माथे पर बल पड़ गये। दूसरी बार भी पुत्री का जन्म होने से परिवार के सथी सदस्य निराश हो गये। सारा ही परिवार दो पुत्रियों को जन्म देने के लिए दबी हुई जुबान से सुनीता को ही दोषी मान रहा था।

अब पूरे परिवार के द्वारा सुनीता और उसकी बच्चियों का मौन विरोध शुरूहो गया। यद्यपि सीधे तौर पर वे सुनीता को कुछ नहीं कहते थे परंतु उनके हाव-भाव से और उनकी कटाक्ष भरी बोल-वाणी से सुनीता अपने सारे परिवार द्वारा किये जा रहे प्रतिरोध को भली प्रकार से समझ रही थी। परिवार के द्वेषपूर्ण व्यवहार से सुनीता के मन पर अत्याधिक बोझ पड़ना शुरू हो गया और वह परेशान रहने लग गई। अब उसे छोटी-छोटी बात पर क्रोध आना शुरू हो गया। कभी-कभी उसे दौरे भी पड़ने शुरू हो गये। रात को सोते समय उसे ऐसा महसूस होता कि जैसे किसी आदमी ने उसको ऊपर से दबा लिया है। वह जोर-जोर से चिल्लाने की कोशिश करती परंतु उसके गले से आवाज़ बाहर ही नहीं निकल पाती। फिर कुछ समय के पश्चात् आंख खुल जाने पर वह घबराहट में चीखना-चिल्लाना शुरू कर देती।

उसकी ऐसी हालत देख कर घर वाले उसे आसपास के किसी बाबा की चौकी पर ले गये। उसने सुनीता पर किसी ओपरी चीज़ का साया बता दिया। उसने सुनीता की झाड़फूंक करने के पश्चात् अपने धूने से 'पवित्र राख' (भभूति) देकर सुबह-शाम वह भभूति खाने से उसे पूरा आराम आ जाने की बात कह कर वापिस भेज दिया। परंतु वहभभूति खाने से आराम आने की बजाए सुनीता और भी अधिक परेशान हो गई। अब सुनीता को खून की उल्टियां भी आनी शुरू हो गईं। अब कभी-कभी

उसके गले में चुन्नी ऐसे बंध जाती जैसे कि वह चुन्नी के साथ फांसी लेने जा रही हो। कभी-कभी उसका मुंह पानी के टब में ऐसे डूब जाता जैसे कि वह पानी में डूब कर मरना चाह रही हो। कभी-कभी जब राकेश गाड़ी लेकर अपने काम पर निकलता तो वह राकेश के पीछे-पीछे चल पड़ती। जब घर का सदस्य अथवा कोई पड़ोसी उसे बदहवास हुए भागता देख कर उसे पकड़ कर घर वापिस लेकर आता तो वह कहती, 'मुझे आपने क्यों पकड़ा हुआ है, मैं कहां पर हूं?' जब उसे बताया जाता कि उसे अपने पति की गाड़ी के पीछे बदहवास भागते हुए देख कर उसे पकड़कर घर लाया गया है तो वह इस सब कुछ से अनभिज्ञता प्रकट करती।

जब सुनीता की परेशानर बढ़ती चली गई तो परिवार वाले उसे लेकर अनेकों बाबाओंकी चौकियों पर गए। वे उसे छोटे-मोटे बाबाओं के साथ -साथ गूहला-चीका वाले पीर की मज़ार पर तथा कुरुक्षेत्र के शेख चहेली मकबरे के पासवाले पीर की चौकी पर भी अनेकों बार गये। सभी बाबाओं की चौकियों पर उनके हजारों रूपये बर्बाद हो गये। परंतु सुनीता को आराम आने की बजाए उसकी परेशानी और अधिक बढ़ती चली गई। कथित भूत-प्रेतों के साये में रहते हुए और बाबाओं की चौकियों पर जाकर अपना शोषण करवाते हुए उनको लगभग 8-9 वर्ष बीत चुके थे। इसी दरमियान सुनीता ने एक पुत्र की चाहत में एक के बाद एक पांच पुत्रियों को जन्म दे दिया। एक के बाद एक बच्ची पैदा हो जाने पर जो ताने व प्रताड़ना सुनीता को पहले अप्रत्यक्ष रूप में सहनी पड़ती थी, अब प्रत्यक्ष रूप से मिलने लगे। अब बात-बात पर उसे ताने सुनाए जाने लग गए। परिवार वालों के तानों से सुनीता की हालत और भी अधिक बिगड़ती चली गई। अब परिवार वाले जब सुनीता को किसी बाबा की चौकी पर ले जाते अथवा किसी बाबा को अपने घर में सुनीता के ईलाज के लिए लेकर आते तो समस्या और भी विकट होनी शुरू हो गई। कोई बाबा जब भी सुनीता को किसी प्रकार का प्रसाद, भभूति, 'पवित्र जल' अथवा अभिमंत्रित की हुई इलायची वगैरह खाने अथवा पीने के लिए देते तो उसके खाते ही सुनीता को खून की उल्टी आना शुरू हो जाती। खून की उल्टी लगी देख कर परिवार वाले उसे अस्पतालों में ले जाते परंतु वहां पर डाक्टरों की भी समझ में कुछ नहीं आता था।

डाक्टर भी कुछ दवाईयां देकर उन्हें घर वापिस भेज देते। इसी परेशानी के कारण राकेश का काम-धंधा भी चौपट होता जा रहा था और खर्चा बढ़ता चला जा रहा था। ऐसे में सुनीता के साथ-साथ पूरे ही परिवार का जीवन बेमायने तथा पूर्णतः निराशाजनक हो चला था।

अंत में उनके एक रिश्तेदार ने, जो कि तर्कशील सोसायटी द्वारा किये जा रहे जनहित कार्यो से परिचित था, उन्हें रविवार को लगन `वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में मेरे पास भेज दिया। मैंने जब सुनीता से मनोवैज्ञानिक ढंग से बातचीत की तो उसकी मानसिक समस्या के कारण तो स्पष्ट हो गये परंतु कुछ बातें ऐसी थीं जिन का रहस्य पता करना जरूरी थी। उसकी समस्या का वास्तविक कारण तो हमारे समाज की पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से जुड़ा हुआ था। यदि हमारे समाज में भी पश्चिमी देशों के समाज की सोच के अनुरूप लड़की एवं लड़के में किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न होता तो सुनीता को अपने ससुराल वालों के ताने और मानसिक प्रताड़ना का शिकार न होना पड़ता। साथ ही पुत्र की चाहत में लगातार पांच लड़कियों के पैदा होने का कोई कारण बनता।

मानसिक प्रताड़ना की वजह से सुनीता को दौरों का पड़ना कथित भूत-प्रेतों का मानसिक भ्रम हो जाना, अत्याधिक क्रोध आ जाना, सपने में भूत-प्रेतों का दिखाई देना तो सामान्य सी बातें थीं। परंतु किसी बाबा द्वारा दिया गया 'प्रसाद खाने से' अथवा बाबा द्वारा 'अभिमंत्रित' किया गया 'जल' पीने से सुनीता को खून की उल्टियां कैसे लग जाती थीं, यह एक रहस्य था। जिसकी पड़ताल करना मेरे लिए बेहद जरूरी था ताकि समस्या का जड़ से समाधान किया जा सके। मेरे द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग करने पर उसने इस रहस्य से इस प्रकार से पर्दा हटाया।

उसने बताया कि एक दिन अपनी सास द्वारा दिये जाते तानों से वह मानसिक तौर पर अत्याधिक परेशान थी। उसके सिर को चक्कर आ

रहे थे। वह एकदम बेसुध हो कर बैड पर गिर पड़ी। सास ने समझा कि बहु को कथत भूत-प्रेतों की कसर हो गई है। सास ने अपने बेटे राकेश को फोन पर इस बात की सूचना दे दी। कुछ समय के पश्चात् राकेश गाड़ी लेकर घर आ गया और वेउ से लेकर किसी बाबा की चौकी पर चले गये। बाबा ने झाड़फूंक करने के पश्चात् अपने धूने में से कुछ राख एकत्र करके भभूति कह कर उसे खिलाने के लिए कह दिया। क्योंकि वह राख सुनीता की आंखों के सामने उस धूने पर से एकत्र की गई थी, सुनीता ने वह राख खाने से इनकार कर दिया। बाबा ने कह दिया कि यह सुनीता नहीं बल्कि इसके अंदर जो प्रेत का साया है वह इसे 'पवित्र भभूति' खाने नहीं दे रहा। इस पर बाबा ने अपने चेलों की मदद द्वारा धक्के से सुनीता को वह राख खिलाने की कोशिश की। इस हाथापाई में सुनीता का होंठ अंदर से थोड़ा सा कट गया और उसमें से खून निकल आया। जब सुनीता ने भभूति खाने का विरोध करते हुए जोर से बाहर थूक दिया तो सभी ने यह ही समझा कि उसे खून की उल्टी आ गई है। भभूति अर्थात राख खाने का विरोध करने का वह दृश्य उसके अवचेतन मन में ऐसा भय बैठा गया कि जब भी किसी बाबा द्वारा प्रसाद के रूप में कोई भी चीज खाने को दी जाती तो वह खुद ही अवचेतन तौर पर अपने दांतों से अपने होंठ को थोड़ा सा काट लेती, जिस से उल्टी आने का अभिनय करते हुए बाहर थूक देती, जिसे सभी लोग उल्टी आना समझ लेते। जब उसे डॉक्टरों के पास लेकर जाते तो डाक्टरों के टेस्टों में तो कुछ नहीं आता था, क्योंकि डॉक्टर उसकी मानसिक समस्या की जांच-पड़ताल तो करते ही नहीं थे। वे केवल उल्टी आने के शारीरिक लक्षण ही खोजते थे, अतः वे उसे कोई न कोई दवाई देकर घर वापिस भेज देते थे।

मेरे द्वारा परामर्श केंद्र पर तीन-चार बार बुला कर मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग करने के पश्चात् वह बिल्कुल ठीक हो गई। अब लगभग एक वर्ष बीत चुका है,उसे किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई।

(नोट- यह एक सत्य घटना है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं।)

कात्यायनी की कविता

पूरी दुनिया एक परिवार हो
उसकी एक चुनी हुई संसद हो, संघीय सरकार हो
सब राष्ट्रीय सरकारें प्रांतीय सरकारों में बदल दी जाएं
जिनके पास न सेनाएं हों न हथियार हों
एक ऐसी दुनिया बने, जिसमें
न तो कोई भूखा हो, न बेरोजगार हो
फिर भी हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का
आलोचना का, आंदोलन का अधिकार हो
अपने जीवन पर, मरण पर
अपनी यति-यति-नियति पर पूरा अख्तियार हो
हर गांव से लेकर विश्व तक की सभी सरकारों के पास
कम से कम अधिकार हों
ताकि वे धीरे-धीरे बेजरूरत होकर
झर जाएं
टूटें
गिरें
और मर जाएं।

एक नदी

एक नदी आई
ऋषि के पास
दिशा मांगने

उस नदी को ऋषि की
प्यास ने पी लिया।

-सुरजीत पातर

रोगग्रस्त होने का संताप

-डॉ. हरीश मल्होत्रा, ब्रमिंघम
मो-00447763013424

'हमारे बेटे जीवन को डाऊन सिंड्रोम है। उसकी बीमारी के कारण हम शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तौर पर थक जाते हैं। अनुमान लगाओ कि एक अच्छे-भले बच्चे की देखभाल करने के लिए कितनी ताकत की आवश्यकता होती है तथा फिर इस को 100 के साथ गुणा करलो। कभी-कभी हमारे वैवाहिक जीवन पर भी इसका असर पड़ जाता है।' ये बातें गुरनाम अपने पुत्र के बारे में बता रहा था।

विजय कुमारी अपने पुत्र राहुल के बारे में बताती है, 'राहुल को छोटी सी बात सीखने के लिए काफी समय लग जाता है जिसके कारण हमें अत्यंत धैर्य रखने की जरूरत पड़ती है। जब मैं बहुत थक जाती हूं तो मुझे अपने पति अशोक पर खीझ आ जाती है। कभी-कभी हम कुछ बातों पर सहमत नहीं होते, जिसके कारण हमारा आपस में झगड़ा हो जाता है।'

क्या आपको वह दिन याद है, जब तुम्हारे बच्चे का जन्म हुआ था। निःसंदेह आप अपने बच्चे को गोदी में उठाने के लिए उतावले थे। परंतु गुरनाम एवं विजय कुमारी जैसे मां-बाप को खुशी के साथ-साथ चिंता भी होती है जब उन्हें बताया जाता है कि उनका बच्चा रोग ग्रस्त अथवा अपाहिज होगा।

क्या आपका बच्चा किसी रोग से पीड़ित है? यदि है, तो आप शायद सोचते हों कि आप इस बीमारी का सामना सफलतापूर्वक कर पाओगे अथवा नहीं। इस प्रकार सोच कर निराश मत हों। आप जैसे माता-पिताओं ने ऐसी समस्याओं का सफलतापूर्वक सामना किया है। आओ कुछ चुनौतियों पर गौर करें, जिन का सामना आपको करना पड़ सकता है।

प्रथम चुनौतीः रोग के बारे में सुन कर आपको विश्वास करना कठिन लगता है। कई माता-पिता के पैरों के नीचे से जमीन खिसक जाती है जब उन्हें पता चलता है कि उनके बच्चे को कोई असाध्य रोग है। मंजू बताती है-'जब डाक्टरों ने बताया कि हमारे बेटे को सेरिबर्न पल्मी (दिमागी अधरंग की बीमारी) है तो हमें विश्वास ही नहीं हुआ। मुझे लगा जैसे मेरे सिर पर कोई पहाड़ गिर पड़ा हो।' कुछ मां-बाप शायद सालीना नाम की मां की भांति महसूस करते हों। पाकिस्तानी पृष्ठभूमि वाली सालीना का कहना है, 'मैंने गर्भधारण करने का निर्णय ले लिया, यद्यपि मेरी आयु की महिलाओं को खतरे थे। अब जब मैं अपने आप को डाऊन सिंड्रोम से संबंधित समस्याएं उत्पन्न हुई देखती हूं तो मैं स्वयं को दोषी महसूस करती हूं।'

यदि आप दोषी अथवा निराशा वाली भावनाओं से जूझ रहे हैं तो यह साधारण बात है। दुख-तकलीफें हम सभी को आती हैं इसलिए उदास हो जाना हाम बात है, तथा यह एक प्रकृतिक घटनाक्रम है। विशेषतया, जब मां-बाप को ज्ञात हो जाता है कि बच्चा पूर्णतः स्वस्थ नहीं है, तब उनके लिए अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना कठिन हो जाता है। नई परिस्थितियों की भांति स्वयं को ढालने में कुछ समय लगता है।

परंतु फिर भी, क्या आप अपने बच्चे की बीमारी के स्वयं को समझते हैं? यह बात स्मरण योग्य है कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण तौर पर यह नहीं समझ सकता कि अनुवंशिक रोग, वातावरण, खान-पान एवं अन्य बातों का बच्चे की बनावट पर किस प्रकार से प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर आप शायद अपने पति अथवा पत्नी को इसके दोषी ठहराते हों, ऐसा करना उचित नहीं है। बेहतर यह होगा कि आप अपने जीवन साथी के साथ मिलकर अपने बच्चे की देखभाल करने की ओर ध्यान दें। बुद्धिमान लोगों का कहना है कि अपने बच्चे की बीमारी को समझ कर अपने विवेक द्वारा अपने घर का माहौल खुशनुमा रखो।

आप डाक्टरों एवं इस समस्या से संबंधित पुस्तकों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। आप अपने

बच्चे की बीमारी के बारे में जानने की तुलना शायद नई भाषा सीखने के साथ कर सकते हैं। पहले-पहल आपको कठिनाई महसूस होगी, परंतु आप सीख सकते हैं।

गुरनाम और विजय कुमारी ने अपने डॉक्टरों एवं एक ऐसी संस्था से जानकारी प्राप्त की जो उसके पुत्र की बीमारी के बारे में विशेषज्ञ थे। वे कहते हैं, 'इससे न केवल आने वाली समस्याओं को हम समझ सके, बल्कि यह भी पता चला कि डाऊन सिंड्रोम वाले बच्चे क्या-क्या कर सकते हैं। हमने जाना कि हमारा बेटा कई मामलों में साधारण जीवन व्यतीत कर सकता हैं यह जानकर हमें अत्याधिक हौसला मिला।

आपको उन बातों पर ध्यान देने की जरूरत है जो कि आपका बच्चा कर सकता है। सारा परिवार मिलकर मनोरंजन करने का कार्यक्रम निश्चित करे। जब आपका बच्चा छोटा सा कार्य करने में 'सफल' होता है तो उसकी उसी समय प्रशंसा करो तथा उसके साथ अपनी प्रसन्नता प्रकट करो।

द्वितीय चुनौतीः

आपके वश से बात बाहर हो जाती है और लगता है कि कोई बात करने के लिए है ही नहीं। आपको शायद लगने लगे कि आपकी सम्पूर्ण शक्ति अपने बीमार बच्चे की देखभाल करने में ही लग जाती है।

रीना नाम की मां का कहना है कि 'जब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे बेटे का स्पाईना बफिडा (रीढ़ का रोग' है तो मैं उसके पश्चात् कुछ वर्षो में अत्यंत थकी हुई रहने लग गई तथा अक्सर रोने लग जाती तथा घर का सारा काम मुझे थकावट से चूर कर देता। में अत्यंत निराशाजनक स्थिति में चली जाती।'

तृतीय चुनौतीः आप अपने आप को अत्यंत अकेलेपन में महसूस करने लग जाते हो।

रमा के बेटे जोध को मस्कुलरडिस्ट्राफी (मांसपेशियों का रोग) तथा एक्सप्रजर सिंड्रोम (दिमागी बीमारी) है। वह बताती हैं, 'अधिकतर लोग कभी नहीं समझ सकते कि हमारा जीवन किस प्रकार से व्यतीत हो रहा है।' आप शायद किसी के साथ बातचीत करने के लिए तरस रहे हों परंतु आपके अधिकतर दोस्तों एवं रिश्तेदारों के बच्चे स्वस्थ हों। उस कारण आप उनके साथ अपनी मुश्किलों के बारे में बातचीत करने से हिचकिचाते हों।

यह जरूरी है कि दूसरों से मदद मांगी जाए तथा जो स्वयंसेवी संस्थाएं हें, उनसे संपर्क किया जाए। यह जानकारी आपका डाक्टर, नर्स अथवा सामाजिक कार्यकर्ता भी प्रदान कर सकते हैं। रमा का कहना है, 'कभी-कभी मुझे एवं मेरे पति को मदद मांगते हुए शर्म आती है। परंतु हमने जान लिया है कि हम स्वयं सभी कुछ नहीं कर सकते। जब अन्य लोग हमारी सहायता करते हैं तब हमें लगता है कि हम अकेले नहीं हैं।' यदि आपका नजदीकी मित्र अथवा परिवार का कोई सदस्य किसी मीटिंग में आपके बच्चे के साथ बैठने के लिए कहता है तो उसे बैठ लेने दें

यदि करीबी दोस्त अथवा हमदर्द रिश्तेदार जरूरत के समय काम नहीं आयेगा तो फिर इन रिश्तों का क्या मकसद हैं पायेदार रिश्ते ही स्थाई रूप में निभाए जा सकते हैं। हमें अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए। जिस प्रकार मरीजों की अस्पताल में ले जाने के लिए ऐंबुलेंस में ईंधन डालते रहने की आवश्यकता है, उसी तरह ताकत बनाए रखने के लिए हमें अच्छी खुराक खाने, कसरत तथा आराम करने की आवश्यकता रहती है ताकि हम अपने बच्चों की उचित देखभाल करते रह सकें। शायद जिस का बेटा अपाहिज हो, वह इस प्रकार से कहता है-'मेरा पुत्र चल-फिर नहीं सकता, इस कारण से मैं अच्छा भोजन लेने की कोशिश करता हूं। मैं ही उसे इधर-उधर लेकर जाता हूं । मेरे पांव ही अब उसके पांव हैं।'

आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए समय कैसे निकाल सकते हैं। कुछ माता-पिता बारी-बारी से अपने बच्चे की देखभाल करते हैं। इस प्रकार से उन में से एक आराम कर सकता है अथवा अपनी जरूरतों की तरफ ध्यान दे सकता है। आपको जो काम इतना अधिक आवश्यक न हो, उनमें से समय निकालना पड़ेगा तथा वह समय समय आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने में लगा सकते हैं। यशोदा नाम की मां बताती है-'धीरे-धीरे आप इस प्रकार करने के आदी हो जाते हो।'

किसी भरोसेमंद दोस्त के साथ बात करो।

जिन दोस्तों के बच्चे बीमार नहीं भी हैं, वे भी आपका हौसला बढ़ा सकते हैं। जसमीन दो बच्चों को सिस्टिकफायथ्रोसिस (फेफड़ों का रोग) है तथा वह मानती है-'कभी-कभी मैं इतना तनाव में होती थी कि मुझे लगता था कि मुझ से अब और बर्दाश्त नहीं हो सकेगा।' परंतु वह कहती है-'मैं राहत एवं मानसिक ताकत के लिए अपने कुछ हमदर्द दोस्तों के साथ बातचीत करती रही हूं और फिर मुझे साहस मिलने पर महसूस होता रहा है कि मैं अपने बच्चों की देखभाल करती रह सकती हूं।'

हमें यह तजुर्बा स्वयं भी करके देखना चाहिए कि तुम क्या खाते हो, व्यायाम कब करते हो तथा कितना समय सोते हो। यह भी देखो कि तुम कम करूरी कार्यों में से समय किस प्रकार से निकाल सकते हो, ताकि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखा जा सके। आवश्यकता पड़ने पर अपने क्रिया-कलापों में परिवर्तन भी करते रहना चाहिए।

चतुर्थ चुनौतीः यह भी चुनौती है कि आप परिवास के अन्य सदस्यों से बीमार बच्चे का अधिक ध्यान रख सकते हो।

यह ठीक है कि बच्चे की बीमारी के कारण शायद इन बातों पर प्रभाव पड़े कि परिवार क्या खाता है, परिवार कहां पर जाता है तथा मां-बाप कितना समय प्रत्येक बच्चे के साथ गुजारते हैं। परिणाम स्वरूप अन्य बच्चे शायद यह सोचने लगे कि मां-बाप उनकी ओर इतना ध्यान नहीं देते। इसके अतिरिक्त मां-बाप अपने बीमार बच्चे की देखभाल करने में इतने अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि उनके वैवाहिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ जाता हैं राहुल नाम का पिता बताता है,-कभी -कभी मेरी पत्नी कह देती है कि सारा बोझ उसी के सिर पर है तथा मुझे अपने पुत्र की परवाह नहीं है। मुझे लगता है कि वह मेरा सम्मान नहीं करती और कभी-कभी मैं उसके साथ क्रोध के साथ बोल पड़ता हूं।'

यह आवश्यक है कि हमें अपने सभी बच्चों में दिलचस्पी लेनी चाहिए। अपने सभी बच्चों को विश्वास दिलाओ कि तुम उनमें दिलचस्पी रखते हो तथा उसी प्रकार का मनोरंजन करने की योजना बनाओ जिसमें उन को आनंद आता हो। मीता बताती है-'कभी-कभी हम अपने बड़े बेटे के लिए कुछ विशेष करते हैं, चाहे यह उसके मन पसंद रेस्टोरेंट में दोपहर का भोजन ही क्यों न हो।'

अपने वैवाहिक बंधन को मजबूत रखने के लिए अपने जीवन साथी के साथ आपसी संवाद कायम रखो। आशीष नाम का पिता कहता है-'मेरे बेटे को दौरे पड़ते हैं। मैं और मेरी पत्नी कभी-कभी बहुत थक जाते हैं और बेबस महसूस करते हैं। परंतु फिर भी हम आपस में बैठ एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं तथा इस काम के लिए हमने समय भी तय किया हुआ है। बच्चों के उठने से पूर्व हमने कुछ समय केवल अपने लिए ही रखा हुआ है।' कई दम्पत्ति सोने से पूर्व एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। एक दूसरे के साथ खुल कर बातचीत करने से तनाव के क्षणों के दौरान तुम्हारा वैवाहिक बंधन मजबूत होगा। मोनिका एवं अनिल का कहना है -'हमारे जीवन के हसीन पल वो हैं जो हमने सबसे कठिन दिनों में इकट्ठे मिल कर गुजारे हैं।'

अपने आप को यह व्वाल पूछो क्या मैं अपनी शारीरिक एवं मानसिक सेहत को ठीक रखने एवं आपसी रिश्ता मजबूत रखने के लिए जितना हो सके, करता हूं? यह भी कि पिछली बार जब मैं अपने अन्य बच्चों की तारीफ की थी, जब उनके घर के कार्यों में सहायता की थी। यह अत्यंत आवश्यक है कि अपने जीवन साथी की ओर प्रेम दर्शाते रहो तथा सम्मान करते रहो और यह बात बच्चों पर भी बराबर लागू होती है। इस प्रकार करने से तनाव में कमी आयेगी तथा आपसी रिश्ते मजबूत होंगे।

अब जब घर में कोई वृद्ध सदस्य बीमार हो तो उस समय भी उचित कार्य किया जाए। हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है कि डॉक्टर से मिलने से पूर्व रोग के लक्षण तथा वे दवाएं अवश्य लिखो जो तुम अब तक प्रयोग करते रहे थे। हरकीरत का कहना है-'जब डैडी को अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली थी, हमने डाक्टर को उनके खून के टेस्टों के बारे में बताने के लिए कहा। डाक्टर ने हमें बताया कि टेस्ट ठीक थे। परंतु फिर जब उसने दोबारा देखा तो टेस्टों के दो नतीजे ठीक नहीं थे। डैडी अब ठीक हैं। अच्छा हुआ कि हमने डाक्टर से सवाल पूछ लिए थे।'

हम सभी को पता है कि डॉक्टर के पास

जाना तथा अस्पताल में दाखिल होना सिरदर्दी से भरा कार्य हो सकता हैं। हरकीरत की मिसाल से पता चलता है कि किसी दोस्त अथवा रिश्तेदार की सहायता करना लाभदायक हो सकता है, शायद किसी की प्रणरक्षा भी हो सकती है। आप इस प्रकार की परिस्थितियों में किसी अपने की सहायता किस प्रकार से कर सकते हैं?

डॉक्टर से मिलने से पूर्व, जैसा कि ऊपर कहा गया है कि, रोगी की लिखने में सहायता करो कि रोग के क्या लक्षण हैं तथा वह कौन सी दवाईयां, विटामिन अथवा देसी नुस्खों का इस्तेमाल करता रहा है। वह सवाल भी लिखो जो कि आपसे डॉक्टर ने पूछने हैं। अपने दोस्त अथवा रिश्तेदार को उसकी हालत के बारे में अच्छी प्रकार से बताने के लिए कहो अथवा उसको पूछो कि उसके परिवार के किसी सदस्य को पहले कभी ऐसा रोग तो नहीं हुआ। यह मत सोचो कि डॉक्टर को पहले से ही इन सभी बातों के बारे में पता होगा अथवा वह स्वयं आपसे पूछेगा।

मिलने के समय ध्यान रखो कि डॉक्टर जो कह रहा है वह तुम्हें और तुम्हारे मरीज को समझ में आ रहा है। उनसे प्रश्न पूछो परंतु फालतू की बातें मत करो। मरीज को अपने सवाल स्वयं ही पूछने दो। उनसे इलाज के अन्य तरीकों के बारे में भी पूछो। कुछ परिस्थितियों में अच्छा रहेगा कि आप मरीज को किसी अन्य डॉक्टर की राय लेने की सलाह दो।

मिलने के पश्चात डॉक्टर द्वारा बताई गई बातों के बारे मे मरीज के साथा चर्चा करो। ध्यानपूर्वक देखो कि वह सही दवाईयां ले रहा है अथवा नही। मरीज को डॉक्टर के निर्देशानुसार दवाई लेने के लिए कहो तथा यदि दवाई का गलत प्रभाव हो जाता हो तो उसी समय डॉक्टर को इसकी जानकारी दो। अस्पताल में प्रवेश करते समय शांत एवं चौकस रहो। अस्पताल में जाते समय शायद मरी स्वयं को लाचार महसूस करे तथा चिंतातुर हो जाए। शांत एवं चौकन्ना रहने से आप सभी की मदद कर सकते हैं ताकि वे चिंता न करें ताकि गलतियां करने से बच सकें। ध्यान में रखो कि अस्पताल में प्रवेश होने से पहले तुमने सभी कागज-पत्र सही ढंग से भर दिये हैं। मरीज ने इलाज करवाने का जो फैसला किया है, उसके अनुसार चलो। यदि वह बहुत अधिक बीमार है तथा ईलाज के बारे में बता नहीं सकता, तो जो इलाज उसने पूर्व में लिए हुए हैं, उनके अनुसार चलो। भिन्न स्थानों पर मरीजों के अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के लिए जो कानून बनाए गए हैं, वे अलग-अलग हो सकते हैं। ध्यान में रखो कि मरीज के इलाज करवाने के तरीकों के बारे में जो कागज-पत्र बनाए हैं, वे पूर्ण एवं सही हों। साथ ही नजदीकी रिश्तेदार अथवा उसकी देखभाल करने वाला व्यक्ति जो ईलाज बताता है, उस का सम्मान करो।

बात करने से डरो मत बल्कि पहल करो। आपके अच्छे पहनावे एवं बातचीत करने के ढंग के कारण डॉक्टर एवं नर्सें मरीज में अधिक रूचि ले सकते हैं तथा शायद वे मरीज की और भी बढ़िया ढंग से देखभाल करने लग जाएं बहत से अस्पतालों में मरीजों को कई बेहतर डॉक्टर देखते हैं। तुम उनको बता सकते हो कि अन्य डॉक्टरों एवं नर्सों ने क्या कहा है। तुम्हें मरीज के बारे में ज्ञान है, इसलिए यदि उसकी हालत बिगड़ती अथवा सुधरती है, तो डॉक्टर को उसकी सूचना दो।

डाक्टर-नर्सें ज्यादातर तनावपूर्ण माहौल में कार्य करते हैं। आप उनके साथ उसी प्रकार सेपेश आओ जिस प्रकार के व्यवहार की आप उनसे अपेक्षा करते हैं।

डॉक्टरों की काबिलियत पर विश्वास रखो तथा उनकी कोशिशों के लिए उनका धन्यवाद करो। कद्रदानी दिखलाने से वे अपना कार्य और भी बढ़िया ढंग से कर सकते हैं।

हर कोई कभी न कभी बीमार हो सकता है। परंतु जब आप पहले से ही समझदारी से काम लेते हैं तथा अपने मित्र अथवा किसी रिश्तेदार की सहायता करते हैं तो बुरी परिस्थितियों में जो कुछ भी उसके वश में है, वह कर सकेगा।

अंजू स्वस्थ महिला थी ताकि वह एक फीजियोथैरेपिस्ट के तौर पर कार्य करती थी। वर्ष 2007 में वह थकी-थकी सी रहने लगी तथा उससे बहुत अधिक सिरदर्द होने लग गया। वह बताती है कि -'मैं कई डॉक्टरों के पास गई और अनेकों प्रकार की दवाएं आजमा कर देखीं परंतु कोई आराम नहीं

आया।' अंततः उसने एम.आर.आई. स्कैन करवाया, जिससे ज्ञात हुआ कि उसके दिमाग में एक ट्यूमर था।' आगे वह बताती है-'यह सुन कर मुझे झटका सा लगा। मैं यकीन ही नहीं कर सकी कि यह बीमारी मेरी जान की दुश्मन बनती जा रही थी।'

'मुझे ऑप्रेशन के पश्चात् पता चला कि मेरी हालत कितनी गंभीर थी। मेरी आंखें आई.सी.यू. में खुली तथा मैं हिल तक भी न सकी। मैं केवल छत की तरफ देखती रहती थी। ऑप्रेशन से पूर्व मैं प्रत्येक कार्य स्वयं ही करती थी। परंतु अब मैंलाचार हो गई थी। आई.सी.यू. में मुझे अत्याधिक घबराहट होती थी।वहां पर डॉक्टरी उपकरणों एवं आपातकाल के अलार्मों का शोर सुनाई देता रहता था और साथ ही अन्य मरीजों की चीख-पुकार भी। मुझे ऐसा लगता था कि हर तरफ दर्द ही दर्द था।'

'आज मैं कुछ हद तक ठीक महसूस कर रही हूं। मैं बिना किसी सहारे के चल फिर सकती हूं । कभी-कभी मैं अकेले भी बाहर चली जाती हूं। परंतु मुझे दो-दो वस्तुएं दिखाई देती हैं तथा कमजोर मांसपेशियों के कारण मेरे लिए उठना-बैठना मुश्किल हो गया है।'

ऐसी परिस्थितियों में उचित दृष्टिकोण रखना बहुत जरूरी है। स्वस्थ दिमाग एक अच्छी दवा है परंतु उदास महसूस करना हड्डियों को भी सुखा देता है। सकारात्मक सोच हमारे दुखों को कम करती है।

अंजू याद करती है -'ऑप्रेशन के दौरान मैंने उन कठिनाइयों का सामना किया जो कि मेरे मरीज करते थे। मैं जब फीजियोथैरेपिस्ट द्वारा बताई गई कसरतें करती थी तो मुझे अत्यंत पीड़ा होती थी। कभी-कभी मैं सोचती थी कि मैं कसरतें करनी छोड़ दूं। मैं इस प्रकार के अनुचित विचार अपने मन में से निकालने की बहुत कोशिश करती, क्योंकि मैं जानती थी कि यदि मैं कसरतें करना जारी रखूं तो मुझे इसका बहुत लाभ होगा।'

जिन बातों से आपको कोई उम्मीद मिलती है, उन पर ध्यान लगाना बहुत जरूरी है। हमें पता है कि दुख-ससुख जीवन का एक अंग है तथा दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिनकी हालत हम से भी बदतर है।

-हिंदी अनुवाद : बलवन्त सिंह लेक्चरार

पृष्ठ 20 का शेष...डार्विनवाद..

दबाकर खत्म किया गया उसी तरह का खेल डार्विन के साथ भी खेला गया है.

हालाँकि यह बात अलग है कि भारत सहित शेष दक्षिण एशिया इतना आलसी और अनपढ़ निकला कि उस पर डार्विन का वैसा असर नहीं हुआ जैसा यूरोप में हुआ. एक अन्य कारण उपनिवेशी दासता की भी है. खैर, इस सबके बावजूद नियो वेदान्त या नियो हिन्दुइज़्म ने डार्विन के क्रमविकासवाद को अवतारवाद में प्रक्षेपित करने का अपना इन्तजाम कर लिया था ताकि भारत में डार्विनवाद और मार्क्सवाद की आग को घुसने से रोका जा सके.

लेकिन क्या हम इस बात को दुबारा सामने लाकर भारत की सनातन वेदान्तिक षड्यंत्र बुद्धि को बेनकाब कर सकते हैं? डार्विन ही नहीं आइन्स्टीन की सापेक्षिकता और नील्स बोर के क्वांटम फिजिक्स को भी आजकल वेद वेदान्त में दिखाया जा रहा है. ब्लेक होल, बिग बैंग और क्वांटम इंटेगल्मेंट सहित टेलीपोर्टेशन को भी रहस्यवाद में जाने किन-किन व्याख्याओं में घुमा फिराकर घुसेड़ा जा रहा है.

एक अन्य वेदांती बाबा दीपक चोपड़ा तो खुले आम क्वांटम ही हीलिंग करते ही हैं और इसके लिए रिचर्ड डार्किंस ने उनकी खूब खिंचाई भी की है लेकिन फिर भी यह सब बंद नहीं होता.

यह सब जानना क्यों जरुरी है? इसलिए कि इस सबसे हम यह जान सकेंगे कि भारत असल में वेदान्तिक षड्यंत्रों में इतनी बुरी तरह से फंसाया गया है कि दुनिया का कोई भी विचार हो कितनी भी क्रांतिकारी प्रस्तावना क्यों न हो उसे भारतीय बाबा किसी न किसी तरह बर्बाद करना जान गये हैं.

इसलिए बहुत गौर से देखा जाए तो भारत की गहनतम समस्या वेदान्त ही है. अवतारवाद और आत्मा परमात्मा पुनर्जन्म के अन्य अंधविश्वास इसी जहरीले कुवें से निकलते हैं.

डार्विनवाद को अवतारवाद द्वारा निगलने की इस असफल योजना को चर्चा में लाना जरुरी है. कम से कम इस देश के शोषितों को इस पर ध्यान देना चाहिए ताकि वे यूरोपीय पुनर्जागरण के प्रकाश को भारत तक न पहुँचने देने के वेदान्तिक षड्यंत्रों को समझ सकें।

अल्लाह और भगवान के नाम पर निरीह पशुओं की बलि बन्द हो

-डॉ. दिनेश मिश्र,
अध्यक्ष अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति

किसी भी जीव को चाहे वह इंसान हो या जानवर जीवित रहने का मौलिक अधिकार है,तथा किसी भी धार्मिक परम्परा या अनुष्ठान की आड़ में उसके प्राण लेने का अधिकार किसी को भी नहीं है। लेकिन पशु बलि ऐसी ही एक अंधविश्वास भरी परम्परा है जिसमें किसी भी पशु चाहे वह गाय,भैंस या बकरा, बकरी हो। इस उम्मीद से बलि दे दी जाती है कि उस पशु को अल्लाह-भगवान पर अर्पित करने से वे प्रसन्न हो जावेंगे तथा बलि चढ़ाने वाले की सारी इच्छाएं पूरी हो जावेगी। अपनी मृगतृष्णा की पूर्ति के लिए दूसरे जीव का जीवन हरण करने की यह प्रथा भी कितनी विचित्र है। अपने लाभ के लिए किसी दूसरे की जान लेकर उसके खून की धार बहाक, उसके मांस के टुकड़ों को उदरस्थ कर क्या कोई धार्मिक क्रिया पूरी हो सकती है या ईश्वर के किसी भी स्वरूप को प्रसन्न किया जा सकता है अथवा इच्छाएं पूर्ण की जा सकती है ? या यह सिर्फ एक मृग मरीचिका है। क्या ऐसी क्रूरता जिसे कोई सहृदय इंसान भी नहीं पसंद कर सकता है तो भला दया के सागर माने जाने वाले ईश्वर कैसे स्वीकार करेंगे। छत्तीसगढ़ के कुछ धार्मिक स्थलों के प्रयास से बंद हुई है, लेकिन कुछ स्थानों में यह आदि परम्परा के रूप में अब भी जारी है।जिसके संबंध में जागरूक नागरिकों को विचार करना चाहिए।

पशु-बलि के संबंध में प्रत्यक्षदर्शियों से मिली जानकारी से आंखों में एक ऐसा वीभत्स दृश्य उभर जाता है जिसमें एक निरीह पशु चाहे वह भैंस, गाय या बकरी हो उसे खींचकर, धकेलकर ऐसे स्थान पर ले जाया जाता है जो कथित रूप से पवित्र है, धार्मिक है। प्राणरक्षक स्थल है लेकिन इन पशुओं के लिए न ही पवित्र,न ही धार्मिक और न ही प्राण रक्षक बल्कि प्राणघातक, एक मासूम पशु को बलि वेदी पर ले जाकर उसे नहला धुलाकर साफ किया जाता है। मिठाई खिलाई जाती है तथा अगले ही पल धारदार हथियार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाता है,उ सके खून को देव प्रतिमा पर बलि वेदी पर अर्पित किया जाता है। इस बर्बर हत्या को परम्परा का जामा पहनाकर पशु के शरीर को प्रसाद के रूप में वितरित कर दिया जाता है। खून, चीखें, गोश्त, गंडासा, तड़पता हुआ धड़ वीभत्स दृश्य प्रस्तुत करते है। उसी प्रकार बकरीद में भी प्रतिवर्ष लाखों निरीह पशुओं की जान चली जाती है हर धर्म यह बात दोहराता है कि हर जीव में ईश्वर का अंश है चाहे वह पशु हो या पक्षी या इंसान, ईश्वर की नजर में सब बराबर है, फिर भला अपने ही अंश को मारने से ईश्वर क्यों प्रसन्न होगा। अपने शरीर के किसी अंग को खत्म करने से बाकी शरीर कैसे खुश रह सकता है।

हिंसा मनुष्य का मूल स्वभाव नहीं है। आदि मानव असभ्य भले ही रहा हो लेकिन वह जंगल में रहते हुए भी पशुओं की वध सिर्फ दो ही कारणों से करता था। एक तो अपने बचाव के लिए तथा दूसरा अपनी भूख मिटाने के लिए वह भी तब जब उसके पास खाने-पीने, भोजन के विकल्प नहीं थे। (यहां तक जंगली जानवर भी भूखे न रहने पर अन्य जानवरों का शिकार नहीं करते) लेकिन जब उसने पशुओं के साथ रहना सींख लिया, उन्हें पालने लगा, कृषि, व्यवसाय, परिवहन, दूध वगैरह के लिए उपयोग करने लगा, तब उसने उन्हें अपना साथी मान लिया तथा उनका पालन व सुरक्षा भी करने लगा। लेकिन जैसे-जैसे वह सभ्य हुआ उसमें संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ी, लोभ बढ़ा, विभिन्न प्रकार के कर्मकांड, उपासना पद्वतियां बनी। प्राकृतिक आपदाओं, महामारियों, रोगों से प्राण रक्षा के लिए झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र,भूत-प्रेत की मान्यताएं, टोने-टोटके पर विश्वास करने लगा विभिनन अनुष्ठानों व पशुबलि, नरबलि जैसी क्रूर परंपरायें बनी। आज भी ग्रामीण अंचल में अनेक धार्मिक स्थलों में जन जातियों में

विभिन्न कारणों से बलि की परम्परा विद्यमान है।

पशुबलि के कारणों में धार्मिक आस्था या अंधविश्वास, लोभ या स्वार्थ सिध्दि की कामना चाहे वह सिध्दि प्राप्त करने के लिए हो या गड़ा खजाना प्राप्त करने के लिए या औलाद प्राप्ति की आकांक्षा है। अनेक मामलों में तो मनौती पूरी करने के लिए पशुबलि दी जाती है, तो कभी बीमारियों को ठीक करने के लिए। कुछ लोग धार्मिक कारणों से पशुबलि को जायज़ ठहराते है तो कुछ परम्परा का हवाला देते है। जबकि इस संबंध में सभी धर्मो व धर्माचार्यो का मत स्पष्ट है। भगवान महावीर ने कहा है कि अहिंसा परमोधमर्मा। अहिंसा से बड़ा कोई धर्म नहीं है तो भला बलि जैसी हिंसक परम्परा कैसे धार्मिक हो सकती है। गौतम बुद्ध ने तो अनेक स्थानों पर अहिंसा पर ही जोर दिया है। उन्होंने कहा मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थ भागवत गीता के सत्रहवें अध्याय के चौथे लोक में ऐसी श्रध्दा व कार्य जिससे किसी दूसरे प्राणी को पीड़ा या नुकसान पहुंचे या उसकी जान चली जाये, तामसी श्रद्धा, अंधकार या अंधश्रद्धा कहा गया है। तथा यह भी कि ऐसी श्रद्धा से किसी का कल्याण नहीं होता तथा यह ईश्वर को स्वीकार नहीं है।

ग्रामीण अंचल में शिक्षा का उचित प्रसार-प्रसार नहीं होने से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता नहीं पनप पायी है। ऐसे लोग बीमार पड़ने पर बैगा, गुनिया के पास जाते हैं जो किसी सभी बीमारियों को जादू-टोने, नजर लगने के कारण बताकर उनसे बीमारी ठीक करने के लिए मुर्गे, बकरे, दारू की मांग करता है, बलि दे देता है। मनोरोग से पीड़ित मनुष्य को भूत-प्रेत, जिन्न पीड़ित बताकर बैगा, सिरहा लोग बीमार मनुष्य के शरीर से भूत, उतारने के नाम पर पशुबलि करवाते है। गड़ा खजाना ढूंढने व बिना मेहनत के अमीर बन जाने की कामना भी पशुबलि का करण है। कुछ समय पूर्व जशपुर के पास खजाने पाने के लोभ में बीस नख वाला कछुआ पाने व बलि देने के चक्कर में दो व्यक्तियों की मौत हो गई। तांत्रिक सिद्वि पाने के लियए मोर, भैंसा की बलि की घटनाएं भी प्रकाश में आती रहती है।

दक्षिण भारत में कुछ प्रसिद्व धार्मिक स्थल, कलकत्ता, कामाक्षा, बनारस सहित छत्तीसगढ़ में भी पशुबलि के अनेक स्थानों पर पशु बलि सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रयास से बंद हुई है लेकिन बस्तर, चाम्पा,चन्द्रपुर, तुरतुरिया, रायगढ़ सहित कुछ स्थानों पर भी अब भी परम्पराओं के निर्वाह के नाम पर जारी है। पशु बलि को रोकने के लिए दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में जैसे राजस्थान, गुजरात मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ में, एक केन्द्रशासित प्रदेश पाण्डिचेरी में पशु बलि निषेधक कानून है लेकिन जन जागरण के अभाव के कारण प्रभावी नहीं हो पा रहे है। पं.मदनमोहन मालवीय ने तो कलकत्ता के काली मंदिर के सामने सभा लेकर पशु बलि को अधार्मिक व गैरजरूरी कहा था। महात्मा गांधी ने भी कहा है कि हिंसा मिथ्या है, अहिंसा सत्य है। अहिंसा के बिना मनुष्य पशु से बदतर है। कहीं कहीं पर लोग पशु बलि अनुष्ठान व तप का आवश्यक अंग मानते है पर गीता के सत्रहवें अध्याय के चौदहवें श्लोक में यह पुनः कहा गया है अहिंसा पवित्रता, सरलताा ही श्रेष्ठ तप है जबकि व्यर्थ की हिंसा त्याज्य है। किसी भी प्रकार की हिंसा चाहे वह धर्म के नाम पर, परम्पराओं के नाम पर अपनी स्वार्थसिद्वि के नाम पर हो त्याग देना चाहिए। मनुष्य को बेकसूर पशु की बलि देने के बदले अपने अंदर की पशुता की बलि देना चाहिए। अपने लोभ का बलिदान करना चाहिए.

लघु कथा

मृतक

-अशोक भाटिया

चारपाई-बिस्तर, छाता, तीन कपड़े, पांच बर्तन और फल, तेरहवीं के लिए आचार्य जी सामान लिखवा रहे थे। वे कहते थे कि यह सामान सीधा मृतक के पास पहुंचता है।

तेरहवीं वाले दिन आचार्य जी आये, सब सामान लादकर ले गये। सामान का ज्यादातर हिस्सा बाजार में बेच आये। कुछ घर पर रख लिया। मिठाई और फल बीवी-बच्चों के साथ खा लिये।

वे कहते थे कि यह सामान सीधा मृतक के पास पहुंचता है।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor@gmail.com अथवा वट्सएप नं: 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतःअव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

चौतरफे लूट मची

-रामेश्वर गुप्त

महेनतकश इन्सान अड़ै, तू देता फिरै दुहाई।
चौतरफे नै लूट मची, तेरी होती नहीं सुणाई।।

अफसर बण कै तनै चोर लूट रे, बेबस होगी जनता,
किस्मत कह कै तनै भका रे, घर-घर सै निर्धनता,
लुटता जावै रोता जावै, तू बात नहीं मेरी सुणता,
आंख खोल कै देख बावले, नहीं फिरै सिर धुनता,
लूटू माणस बिन गुरे ईब, तेरे बणे फिरैं झकोई।

नेता ईब लूट रहे सैं, शर्म-लिहाज नहीं रहगी,
इस लूट तै बचणे की, हालत आज नहीं रहगी
इस तै ज्यादा हद या होगी, जनता चुप-चाप सहगी,
आजादी जैसी सोची थी, वैसी आज नहीं रहगी,
भगत सिंह नै के इसी वास्ते, अपणी जान गंवाई।

कमेरे और लुटेरे म्हं, ईब फर्क होग्या ज्यादा,
कोई कमावै कोई खावै, दीखै साफ इरादा,
कुत्ते सो-रे महलों म्हां, के होया तेरा फैदा,
होग्या कैद पसीना तेरा, ना पूरा होया वायदा
बच्चे भूखे नंगे सैं तेरे, करैं मेहणत लोग लुगाई।

अपने घर के आंगन म्हं, ईब आजादी ल्याणी होगी,
सही गलत कै हो सै, ईब तनै ये बात उठाणी होगी,
भर दयो रंग आजादी म्हं, वक्त सै ये चमकाणी होगी,
'रामेश्वर' बहुत सह ली, दुख-तकलीफ बताणी होगी,
उसी का हक होणा चाहिए जो कर र्या आज कमाई।

सहयोग

तर्कशील सोसायटी हरियाणा प्रधान फरियाद सिंह सनियाणा ने अपने पुत्र कवंलपाल सिंह के एम.बी.बी.एस. का कोर्स समाप्त कर डिग्री प्राप्त करने पर सोसायटी को 1100 रुपये (ग्यारह सौ रुपये) का सहयोग भेजा है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनका इस सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें। **-राज्य कार्यकारिणी**

रैशनेलिस्ट सोसायटी हरियाणा की ओर से

पांच लाख रूपए जीतने की चुनौती

रैशनेलिस्ट (तर्कशील) सोसायटी हरियाणा (रजि.) की ओर से घोषणा की जाती है कि सोसायटी भारतीय मुद्रा के पांच लाख रूपए पुरस्कार हेतु संसार के किसी भी ऐसे व्यक्ति को देने के लिए वचनबद्ध है जो धोखारहित अवस्थाओं में अपनी दिव्य/अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन कर निम्नलिखित शर्तों में से किसी एक शर्त अथवा अधिक को पूरा कर सकता हो। यह पेशकश तर्कशील सोसायटी से किसी व्यक्ति द्वारा प्रथम पुरस्कार जीतने तक जारी रहेगी।

सभी देव पुरूष, बाबा, साधु, योगी, सिद्ध, गुरू, तांत्रिक, स्वामी, ज्योतिषी, मुल्ला-मौलवी, पादरी, भिक्षुक, मुनि एवं कोई भी ऐसा अन्य व्यक्ति जिसने आध्यात्मिक क्रिया-कलापों, प्रभु भक्ति अथवा वरदान से कोई दिव्य शक्ति प्राप्त की हो, इस पुरस्कार को निम्नलिखित चमत्कारों में से किसी एक का प्रदर्शन करके जीत सकता है।

जो अपनी दिव्य शक्ति द्वारा

1. सील बंद करंसी का क्रमांक पढ़ सकता हो। 2. करंसी नोट की ठीक नकल उसी समय पैदा कर सकता हो। 3. ऐसी वस्तु जिसकी मांग करें, हवा में से प्रकट कर सकता हो। 4. हवा में उड़ सकता हो। 5. शुद्ध जल की ऊपरी सतह पर चल सकता हो। 6. जलते हुए अंगारों पर नंगे पांव आधे मिन्ट तक खड़े रहकर भी न झुलसे। 7. किसी विशेष वस्तु को हिला या मोड़ सकता हो। (बिना कोई शारीरिक, यांत्रिक, प्राकृतिक बल लगाए) 8. टैलीपैथी द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति के विचार पढ़ सके। 9. प्रार्थना, भक्ति, जल या पवित्र राख द्वारा मानव शरीर के कटे हुए अंग को एक इंच तक बढ़ा सके। 10. अपना शरीर एक स्थान पर छोड़ स्वयं दूसरे स्थान पर प्रकट हो सकता हो। 11. अपनी श्वास क्रिया को 30 मिनट तक रोक सकता हो। 12. जो आदमी को कुत्ते में या कुत्ते को किसी अन्य जानवर में बदल सके। 13. किसी ऐसे भूत-प्रेत या आत्मा को प्रकट कर सके, जिसका कैमरे द्वारा फोटो लिया जा सके। 14. ताला लगे कमरे में से बाहर आ सकता हो। 15. किसी वस्तु का भार बढा सकता हो। 16. पानी को शराब, पैट्रोल अथवा खून में परिवर्तित कर सकता हो। 17. छुपी हुई वस्तु को खोज सके। 18. मन्त्र-तंत्र अथवा टोने टोटके से सोसायटी के किसी विशेष सदस्य को निर्धारित समय में शारीरिक क्षति पहुँचा सके। 19. संगीत पैदा करने वाले किसी यंत्र बीन, बांसुरी, बाजा या ढोलक को बंद कर सकता हो। 20. पुर्नजन्म के आधार पर कोई विशेष भाषा बोल सकता हो। 21. घरों में होने वाली आग लगने की, ईट पत्थर गिरने की तथा अपने-आप कपड़े कटने की घटनाओं में किसी भूत अथवा दिव्य शक्ति का प्रमाण दे सके। 22. जो ज्योतिषी, पांडा व मुफ्त में हाथ देखने वाला व्यक्ति ज्योतिषी को विज्ञान बतलाकर लोगों को गुमराह करता हो, हमारे पुरस्कार को जीत सकता है। यदि वह 10 विभिन्न व्यक्तियों की जन्म कुंडलियों व 10 हस्त चित्रों को देखकर संबंधित पुरूषों तथा स्त्रियों की अलग-अगल संख्या, मृत और जीवित लोगों की संख्या या जन्म का ठीक समय व स्थान अक्षांस-रेखांश के साथ बता दे, इसमें 5 प्रतिशत गलती की छूट दी जाएगी।

इन उपरोक्त 22 चुनौतियों के अतिरिक्त कोई भी ऐसी चुनौती जिसे तर्कशील सोसायटी किसी विशेष समय व अवस्था में मंजूरी दे, वह भी पुरस्कार जीतने के लिए मान्य होगी।

उपरोक्त चुनौतियां निम्नलिखित शर्तों के साथ क्रियान्वित होंगी।

1. जो व्यक्ति सोसायटी की इस चुनौती को स्वीकार करेंगा, चाहे वह पुरस्कार लेने की इच्छा रखता हो अथवा न उसे सोसायटी के किसी मनोनीत किए हुए व्यक्ति के पास 5 हजार रूपये धरोहर राशि के रूप में जमा करवाने होंगे। यह राशि शर्त जीत लेने पर पुरस्कार की राशि के साथ लौटा दी जाएगी। यह धरोहर की राशि ऐसे लोगों को दूर भगाने के लिए है, जो सस्ती प्रसद्धि चाहते है, नहीं तो वे हमारे समय, धन व शक्ति को व्यर्थ में नष्ट करेंगे।

2. धरोहर राशि जमा करवाने के बाद संबधित व्यक्ति के चमत्कारों का पहले सोसायटी के विशिष्ट सदस्य किसी निश्चित समय पर प्रारंभिक परीक्षण लेंगे।

3. यदि चुनौती स्वीकार करने वाला व्यक्ति प्ररभ्भिक परीक्षण में असफल रहता है तो उसकी धरोहर राशि जब्त कर ली जाएगी तथा उसे अंतिम परीक्षण में भाग लेने की मंजूरी नहीं दी जाएगी।

4. यदि वे प्ररभ्भिक परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है तो अंतिम प्रदर्शन हमारे द्वारा लोगों की उपस्थिति में होगा।

5. यदि वह अंतिम प्रदर्शन जीत जीत जाता है तो उसे 5 लाख रूपए पुरस्कार तथा 5 हजार रूपया धरोहर राशि दे दिए जाएंगे।

6. सभी प्रदर्शन, धोखा न दिए जाने वाली अवस्थाओं में हमारी पूर्ण संतुष्टि तक किए जाएंगे।

7. भाषा संबंधी विवाद पर डा. अब्राहम थामस काव्वूर द्वारा 1968 में जारी अंग्रेजी भाषा की चुनौती ही मान्य होगी।

राज्य कार्याकारिणी

रेशनलिस्ट (तर्कशील) सोसायटी हरियाणा (रजि)

प्रणाम शहीदों को

जलियांवाला बाग शताब्दी समारोह कमेटी पंजाब द्वारा अमृतसर में किए गए राज्य स्तरीय समारोह की झलकियां



समारोह में उपस्थित जनसमूह

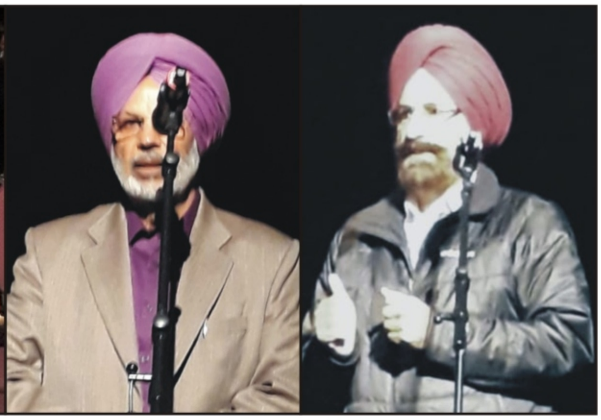


अमृतसर शहर में निकाला गया जुलूस

नार्थ अमरीकन तर्कशील सोसायटी कैनेडा के शहर हैमिल्टन में जलियांवाला बाग के अमर शहीदों को समर्पित करवाए तर्कशील मेले की झलकियां



समारोह में उपस्थित दर्शक



सम्बोधन करते हुए तर्कशील वक्तागण

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।